THE FREE INDOLOGICAL COLLECTION

WWW.SANSKRITDOCUMENTS.ORG/TFIC

FAIR USE DECLARATION

This book is sourced from another online repository and provided to you at this site under the TFIC collection. It is provided under commonly held Fair Use guidelines for individual educational or research use. We believe that the book is in the public domain and public dissemination was the intent of the original repository. We applaud and support their work wholeheartedly and only provide this version of this book at this site to make it available to even more readers. We believe that cataloging plays a big part in finding valuable books and try to facilitate that, through our TFIC group efforts. In some cases, the original sources are no longer online or are very hard to access, or marked up in or provided in Indian languages, rather than the more widely used English language. TFIC tries to address these needs too. Our intent is to aid all these repositories and digitization projects and is in no way to undercut them. For more information about our mission and our fair use guidelines, please visit our website.

Note that we provide this book and others because, to the best of our knowledge, they are in the public domain, in our jurisdiction. However, before downloading and using it, you must verify that it is legal for you, in your jurisdiction, to access and use this copy of the book. Please do not download this book in error. We may not be held responsible for any copyright or other legal violations. Placing this notice in the front of every book, serves to both alert you, and to relieve us of any responsibility.

If you are the intellectual property owner of this or any other book in our collection, please email us, if you have any objections to how we present or provide this book here, or to our providing this book at all. We shall work with you immediately.

-The TFIC Team.

॥ श्री वीतरागाय नमः ॥

श्री जैन-हित-शिक्षा ।

प्रथम भाग ।

प्रकाशक—

कुम्भकरण टीकमचन्द चोपड़ा ।

गंगाशहर (बीकानेर)

सङ्ग्रहकर्त्ता –

दुर्जनदास सेठिया ।

नं० १६ सीनागोग ष्ट्रीट के

"ओसवाल प्रेस" में

बा० महालचन्द बयेद द्वारा मुद्रित ।

सं० १९८१ वि०

प्रथमावृत्ति १०००]

[विना मूल्य ।

मिलने का पता—

१ कुम्भकरण टीकमचन्द चोपड़ा

मु० आठगांव, पो० ढींग,

(आसाम)

२ कुम्भकरण टीकमचन्द चोपड़ा

गंगाशहर (बीकानेर)

विषय-सूची ।

संख्या	विषय	पृष्ठांक
१	श्री चौबीस जिन स्तवन २४	१
२	श्री नवकार (१०८ गुणों कि नाम सहित)	२५
३	सामायक लेणे की पाटी	२८
४	सामायक पारणे की पाटी	२९
५	तिक्खुता की पाटी	२९
६	पंच पद वंदणा	२९
७	पच्चीस बोल	३२
८	चौरासी लाख योनि	४८

संख्या	विषय	पृष्ठांक
९	श्रद्धा ऊपर सज्झाय	४८
१०	तेरापंथ ओलखणां की ढाल	५०
११	सोलह सती नो स्तवन	५३
१२	श्री भिखणजी स्वामी के गुणां की ढाल (जयाचार्य कृत)	५५
१३	आचार्य गुणमाला	५६
१४	श्री कालूगणी के गुणा की ढाल १ ली	६०
१५	,, ,, २ री	६२
१६	जिन कल्पी साधु की ढाल	६४
१७	अनाथी मुनि को स्तवन	६६
१८	श्री भिक्षुगणी के गुणा की ढाल	६८
१९	आयुष टूटी को सान्धो को नहिं रे की ढाल	७०
२०	मुक्ति जाने की डिग्री	७१
२१	करणी हो कीज्यो चित्त निर्मले की ढाल	७४
२२	अन्तर ढाल	७७
२३	दश दानों की ढाल	८०
२४	चेतावनी	८४
२५	कर्म नी सिज्झाय	८६

संख्या	विषय	पृष्ठांक
२६	जीवा तू तो भोलो रे की ढाल	८८
२७	यौवन धन पावणा की ढाल	९२
२८	उपदेश पच्चीसी	९३
२९	सुगुरु पच्चीसी	९६
३०	कुगुरु पच्चीसी	९९
३१	स्त्री चरित्र की ढाल	१०१
३२	सुदर्शन सेठ के बखान की ढाल ३२ वीं	१०६
३३	,, ,, ३३ वीं	१०८
३४	,, ,, ३६ वीं	११२
३५	पाना की चरचा	११५
३६	प्रतिक्रमण	१५३
३७	च्यार निक्षेपां री चौपाई ढाल १ ली	१८६
	,, ,, दूजी	१९२
	,, ,, तीजी	१९४
	,, ,, चौथी	२०३
	,, ,, ५ वीं	२१२
	,, ,, ६ ठी	२१७
३८	हेम नवरसे की ढाल ७ मी	२२८
३९	श्री पूज्य यह विनय है फिर शीघ्र दर्श देना	२३२

निवेदन

प्रिय पाठकों ! यह पुस्तक 'जैन-हित-शिक्षा' प्रथम भाग श्रावक कुम्भकरणजी टीकमचन्दजी चोपड़ा के कहने से मैंने तैयार की है। इस में पच्चीस बोल, चर्चा आदि थोकड़ों के सिवाय बहुत सी उपदेशिक ढालें तथा श्रीपुज्यजी महाराज के गुणों की ढालें तथा च्यार निक्षेपां की चौपाई की ढालें भी उपयोगी समझ कर संग्रह कर दी हैं—जिस से अन्य पुस्तकों की अपेक्षा इस में कुछ विशेषता आ गई है। परन्तु मेरा परिश्रम तभी सफल है जब कि आप लोग इन्हें जयणायुत पढ़ें व दूसरों को पढ़ कर सुनावें तथा शुद्ध समकित दृढ़ कर अपना व दूसरों का आत्मिक हित करें। श्री वीतराग देव के वचनों की यथार्थ ओलखना कर उस पर दृढ़ आस्था-प्रतीत रखना ही भव सागर से पार होने का एक मात्र उपाय है।

पुस्तक के लिखने व छपाने में भरसक सावधानी से काम लिया गया है, तथापि मेरी अल्पज्ञता के कारण व प्रमाद वश कुछ भूल चूक व त्रुटियां रह गई हों तो विज्ञ जन उन्हें स्वयं शुद्ध कर

लें तथा मुझे उस से अवश्य सूचित करें ताकि दूसरी आवृत्ति में शुद्ध कर दी जायँ।

निक्षेपों की ढालें जिस हस्त-लिखित प्रति से उतार कर छापी गई है उस प्रति के कई स्थल ठीक ठीक पढने व समझने में नहीं आये इस से ज्यों के त्यों उसी के अनुसार छाप दिये गये हैं। अतएव जिन महाशयों के पास च्यार निक्षेपों की चौपाई की ढालों की हस्त-लिखित प्रतियें हों वे उसे इस पुस्तक की छपी हुई ढालों से मिलान करें और जहां २ अन्तर दिखाई दे उस से मुझे सूचित करें, तो मैं उन महाशयों का चिर कृतज्ञ रहूंगा और दूसरी आवृत्ति में उन लोंगों के नाम धन्यवाद सहित प्रकाशित करूंगा।

अन्त में ओसवाल प्रेस के मालिक बा० महालचन्दजी बयेद को धन्यवाद देकर निवेदन समाप्त करता हूं—जिनकी सहायता से इस पुस्तक के संग्रह करने व छपाने में मुझे पूरी सरलता हुई।

यदि जिनेश्वर देव के बचनों के विरुद्ध कुछ छप गया हो तो मुझे मिच्छामि दुक्कड।

निवेदकः—

दुर्जनदास सेठिया।

(भीनासर निवासी)

गजल

जिनेश्वर धर्म सारा है।
मेरे प्राणों से प्यारा है॥
जिनका ध्यान धर भाई।
श्री जिनराज फरमाई॥
जिससे होत सुखदाई।
इसीसे दिल हमारा है॥ जिने ॥१॥

जिनेश्वर नाम जो गावे।
कि भव से पार हो जावे॥
जनम वो फेर ना पावे।
होय भवसिन्धु पारा है॥ जिने ॥२॥

ऐसे जिनराज प्यारे हैं।
जिन्हों ने भक्त त्यारे हैं॥
जिन्हों ने कर्म मारे हैं।
उन्हींका मो आधारा है॥ जिने ॥३॥

विमुख जो धर्म से होवे।
पकड़ शिर अन्त में रोवे॥
जिनेश्वर धर्म मो खोवे।
जिन्हों को नर्क प्यारा है॥ जिने ॥४॥

नहीं नर भव जनम हारे।
जिनेश्वर धर्म जो धारे॥
योही यम फांस को टारे।
महालचंद दास थारा है॥ जिने ॥५॥

श्रीजिनाय नमः ।

अथ

॥ श्रीचौबीसजिनस्तुतिप्रारम्भः ॥

दोहा—ॐ नमः अरिहंत अतनु । आचार्य उवज्झाय ॥ मुनि पंच परमेष्टिए ॐकाररै मांहि ॥ १ ॥ वलि प्रणमुं गुणवंत गुरु । भिक्षु भरत मझार ॥ दान दया न्याय छाणनें । लीधो मारग सार ॥ २ ॥ भारीमाल पट झलकता । तीजे पट ऋषिराय ॥ प्रणमु मन वच कायकरी पांचुं अंग नमाय ॥ ३ ॥ इम सिद्ध साधु प्रणमी करी । ऋषभादिक चौबीस ॥ स्तवन करुं प्रमोद करी । जय जश कर जगदीश ॥४॥ मल्लिनेमए दोय जिन । पाणीग्रहण न कीध ॥ शेष बावीसजिनेश्वरूं रमणं छांड़ व्रत लीध ॥५॥ बासुपूज्य मल्लिनेम जिन । पारस अनें वर्द्धमान ॥ कुमर पदे अरु प्रथम वय । धारयो चरण निधान ॥ ६ ॥ छत्रपति उगणीस जिन । व्रत तीजी वय सार ॥ उत्क्रुष्ट आयु जिह समय तसु त्रिण भाग विचार ॥ ७ ॥ बीर समय उत्कृष्ट स्थिति । वर्ष सवा सय होय ॥ भाग तीन कीजै तसु । एतीनुं वय जोय ॥८॥ इमसगलै उत्कृष्ट स्थिति । त्रिणभागे वय तीन ॥ अंतिम

वय उगणीस जिन। धुर वय पंच सुचीन ॥९॥ श्वेत वरण चंद सुविधि जिन ! पदम वासु पूज्य लाल ॥ मुनि सुव्रत रिठनेम प्रभु। कृष्ण बरण सुविशाल ॥ १० ॥ मल्लिनाथ फुन पार्श्व प्रभु। नील वरण वर अंग ॥ षोड़स शेष जिनेश तनु। सोवन बरण सुचंग ॥ ११ ॥ श्रेयांस मल्लि मुनिसुव्रत जिन। नेम पार्श्व जगदीश ॥ प्रथम पहर दीचाग्रही पिछले पोहर उन्नीस ॥ १२ ॥ सुमति जीम दीक्षाग्रही। अठम भक्त मल्लि पास ॥ छठ भक्त जिन बीस वर। वासुपूज्य उपवास ॥ १३ ॥ ऋषभ अष्टापद शिवगमन। वीर पावापुरी दीस ॥ नेम गिरनार वासु चंपा। शिखर समेत सुबीस ॥ १४ ॥ ऋषभ संथारे शिव गमन। चउदश भक्त उदार ॥ चरम छठ अणसण पवर बावीस मास संथार ॥ १५ ॥ ऋषभ वीर अरु नेम जिन। पल्यंक आसण शिव पेख ॥ शेष इकवीश जिनेश्वरु काउसग मुद्रा देख ॥ १६ ॥ जिन चोवीस तणा सुगुण। रचिये वचन रसाल ॥ ध्यान सुधा वर सार रस जय जश करण विशाल ॥ १७ ॥

प्रथम ऋषभजिनस्तवन।

(एसै गुरु किम पाचिये पदेशी)

वन्दु वेकर जोड़ने। जुग आदि जिनन्दा ॥ कर्म रिपु गज उपरै। मृगराज मुनिन्दा ॥ प्रणमूं प्रथम

जिनन्दनें जय जय जिन चन्दा ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ अनुकूल प्रतिकूल सम सही । तप विविध तपिन्दा ॥ चेतन तनु भिन्न लेखवी । ध्यान शुक्ल ध्यावंदा ॥ २ ॥ पुद्गल सुख अौर पेखिया । दुःख हेतु भयाला ॥ विरक्त चित बिगस्यो इसो । जाण्या प्रत्यक्ष जाला ॥ ३ ॥ संवेग सरवर भूलतां । उपशम रस लीना ॥ निन्दा स्तुति सुख दुःखे । सम भाव सुचीना ॥ ४ ॥ बांसी चंदन सम पणे । थिर चित जिन ध्याया ॥ इम तन सार तजी करी । प्रभु केवल पाया ॥५॥ हुं बलिहारी तांहरी वाह वाह जिन राया ॥३॥ उवा दशा किण दिन आवसी । मुझ मन उमाया ॥६॥ उगणीसै सुदि भाद्रवे दशमी दीतवारं ॥ ऋषभदेव स्टवेकरी । हुओ हर्ष अपारं ॥ ७ ॥

श्री अजितजिनस्तवन ।

(अहो प्रिय तुम घट पाडी पदेशी)

अहो प्रभु अजित जिनेश्वर आपरो । ध्याउं ध्यान हमेश हो ॥ अहो प्रभु अशरण शरण तुंही सही । मेटण सकल कलेश हो ॥ अहो प्रभु तुम ही दायक शिव पंथना ॥ १ ॥ अहो प्रभु उपशम रस भरी आपरी । वाणी सरस विशाल हो ॥ अहो प्रभु मुगत निसरणी

महा मनोहरु। सुण्यां मिटै भ्रमजाल हो ॥ २ ॥ अहोप्रभु उभय बंधण आप आखिया रागद्वेष विकराल हो ॥ अहो प्रभु हेतुए नरक निगोदना। राच्या मूरख बाल हो ॥३॥ अहो प्रभु रमणी राखसणी समी कही। विष वेलि मोह जाल हो ॥ अहो प्रभु काम नें भोग किम्पाक सा। दाख्या दीन दयाल हो ॥४॥ अहो प्रभु विविध उपदेश देई करी। तें तार्या नर नार हो ॥ अहो प्रभु भव सिंधु पोत तुंही सही। तुंही जगत् आधार हो ॥५॥ अहो प्रभु शरण आयो तुज साहिबा। बस रह्या हीया मांहि हो ॥ अहो प्रभु आगम वयण अंगी करी। रह्यो ध्यान तुज ध्याय हो ॥ ६ ॥ अहो प्रभु सम्वत् उगणीसे नें भाद्रवे। दशमी आदित्यवार हो। अहो प्रभु आप तणा गुण गाविया वर्त्या जय जयकार हो ॥ ७ ॥

श्री संभव जिनस्तवन।

(हुं बलिहारी हो जादवां एदेशी)

संभव साहिब समरीये। धार्यो हो जिण निरमल ध्यान के ॥ इक पुद्गल दृष्टि थापनें ॥ कीधो है मन मेरु समान के ॥ संभव साहिब समरिये ॥ १ ॥ ए आंकणी। तन चंचलता मेटनें हुआ है जगथी उदासीन

कै ॥ धर्म शुक्ल थिर चित्त धरै । उपशम रस में होय रह्या लीन कै । सं० ॥ २ ॥ सुखइन्द्रादिकनां सहु । जाण्या है प्रभु अनित्य असार कै ॥ भोग भयंकर कटुक फल । देख्या है दुर्गति दातार कै ॥ सं० ॥ ॥ ३ ॥ सुधा संवेग रसे भर्या । पेख्याहै पुद्गल मोह पाशथी ॥ अरुचि अनादर आण नें आत्मध्यानें करता विलास कै । सं० ॥ ४ ॥ संग छांड मन वशकरी । इन्द्रिय दमन करी दुर्दंत कै ॥ विविध तपे करी स्वामजी । घाती कर्मनो कीधो अंत कै ॥ सं० ॥५॥ हूं तुज शरणे आवियो । कर्म विदारन तुं प्रभु वीर कै । तें तन मन बच वश किया । दुःकर करणी करण महाधीर कै ॥ सं० ॥ ६ ॥ संवत उगणीसै भाद्रवै । सुदि इग्यारस आण विनोद कै ॥ संभव साहिब समरिया । पाम्यो है मन अधिक प्रमोद कै ॥ सं० ॥७॥

श्री अभिनन्दन जिनस्तवन ।

(सती कलूजी हो हुआ संजमनै त्यार पदेशी)

तीर्थंकर हो चोथा जग भाण छांडि गृहवास करी मति निरमली । विषय विटम्बण हो तजिया विष फल जाण । अभिनंदन वान्दुं नित्य मनरली ॥१॥ ए आंकणी । दुःकर करणी हो कीधी आप दयाल ॥

ध्यान शुधा रस सम दम मन गली। संग त्याग्यो हो जाणी माया जाल ॥ अ० ॥ २ ॥ वीर रसे करी हो कीधी तपस्या विशाल। अनित्य अशरण भावन अशुभ निरदली ॥ जग झूठो हो जाण्यो आप कृपाल ॥ अ० ॥३॥ आत्म मंत्री हो सुख दाता सम परिणाम ॥ एहीज अमित्र अशुभ भावे कलकली ॥ एहवी भावन हो भाया जिन गुण धाम ॥ अ० ॥ ४ ॥ लीन संवेगे हो ध्याया शुक्ल ध्यान ॥ क्षायक श्रेणी चढी हुआ केवली ॥ प्रभु पाम्या हो निरावरण सुज्ञान ॥ अ० ॥ ५ ॥ उपशम रस भरी हो वागरी प्रभु वाण ॥ तन मन प्रेम पाया जन सांभली ॥ तुम वच धारी हो पाम्या परम कल्याण ॥ अ० ॥ ६ ॥ जिन अभिनंदन हो गाया तन मन प्यार ॥ संवत उगणीसेनें भाद्रवे अघदली ॥ सुदि इग्यारस हो हुओ हर्ष अपार ॥ अ० ॥ ७ ॥

श्री सुमति जिनस्तवन।

(मुरख जीवड़ा रे गाफल मत रहे)

सुमतिजिनेश्वर साहेब शोभता ॥ सुमति करण संसार ॥ सुमति जप्यांथी सुमति वधे घणी ॥ सुमति सुमति दातार ॥ सु० ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ ध्यान

सुधारस निर्मल ध्यायने ॥ पाम्या केवल नाण ॥ वाण सरस वर जन बहु तारिया ॥ तिमिर हरण जग भाण ॥ सु० ॥ २ ॥ फटिक सिंहासण जिनजी फावता ॥ तरु अशोक उदार ॥ छत्र चामर भामंडल झलकतो ॥ सुर दुंदुभि झिणकार ॥ सु० ॥ ३ ॥ पुष्प वृष्टि वर सुर ध्वनी दीपती ॥ साहिब जग सिणगार ॥ अनंत ज्ञान दर्शन सुख बल घणुं ॥ ए द्वादश गुण श्रीकार ॥ सु० ॥ ४ ॥ वाणी अमी सम उपशम रस भरी ॥ दुर्गति मूल कषाय ॥ शिव सुखना अरि शब्दादिक कह्या ॥ जग तारक जिन राय ॥ सु० ॥ ५ ॥ अंतर जामीरे शरणे आपरे ॥ हुं आयो अवधार ॥ जाप तुमारोरे निश दिन संभरु ॥ शरणागत सुखकार ॥ सु० ॥ ६ ॥ संवत उगणीसैरे सुदि पक्ष भाद्रवे ॥ बारस मंगलवार ॥ सुमतिजिनेश्वर तन मनस्यं रम्या आनन्द उपनो अपार ॥ सु० ॥ ७ ॥

पद्म जिनस्तवन ।

(जिन्दवेरी देशी छै सुणभगते भगवन्तके एदेशी)

निर्लेप पद्म जिसा प्रभु ॥ पद्म प्रभु पीछाणार संयम लीधो तिण समै ॥ पाया चोथो नाण ॥ पद्म प्रभु नित्य समरिये ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ ध्यान शुक्ल प्रभु

ध्यायनें ॥ पाया केवल सोय२ दीन दयाल तणी दिशा ॥ कहणी नावे कोय ॥ पद्म० ॥ २ ॥ सम दम उपशम रस भरी ॥ प्रभु आपरी वाणि ॥ त्रिभुवन तिलक तुं ही सही ॥ तुं हो जनक समान ॥ पद्म० ॥ ३ ॥ तुं प्रभु कल्प तरु समो ॥ तुं चिन्तामणि जोय २ ॥ समरण करतां आपरो ॥ मन वंछित होय ॥ पद्म० ॥ ४ ॥ सुखदायक सहु जग भणी ॥ तुं ही दीन दयाल २ शरणे आयो तुज साहिबा ॥ तुं ही परम कृपाल ॥ पद्म० ॥ ५ ॥ गुणगातां मन गहगहे ॥ सुख संपति जाण २ ॥ विघ्न मिटै समरण कियां ॥ पामै परम कल्याण ॥ पद्म० ॥ ६ ॥ संवत उगणीसैनें भाद्रवे ॥ सुदि बारस देख ॥ पद्म प्रभु रव्या लाडनूं ॥ हुओ हर्ष विशेष ॥ पद्म० ॥ ७ ॥

श्री सुपास जिनस्तवन ।

(कृपण दीन अनाथए एदेशी)

सुपास सातमां जिणंद ए ॥ ज्यांने सेवे सुर नर वृंदए ॥ सेवक पूरण आशए ॥ भजिये नित्य स्वामि-सुपासए ॥ १ ॥ एआंकणी ॥ जन प्रतिबोधण कामए ॥ प्रभु वागरै वाण अमामए ॥ संसार स्यूं हुवे उदासए ॥ भ० ॥ २ ॥ पामे काम भोगथी उद्वेगए ॥ वलि उपजे

परम संवेगए ॥ एहवा तुम वच सरस विलासए ॥ भ० ॥ ३ ॥ घणी मीठी चक्रीनी खीर ए ॥ वलि खीर समुद्रनो नीर ए ॥ एहथी तुम वच अधिक विमासए ॥ भ० ॥४॥ सांभलनें जन वृन्द ए ॥ रोम रोम में पामें आनंद ए ॥ ज्यांरी मिटै नरकादिक वास ए ॥ भ० ॥५॥ तुं प्रभु दीन दयाल ए ॥ तुंही अशरण शरण निहालए ॥ हुं छुं तुमारो दासए ॥ भ० ॥६॥ संवत उगणीसे सोयए ॥ भाद्रवा सूदि तेरस जोय ए ॥ पहुंची मननी आश ए ॥ भ० ॥७॥

श्री चद्रप्रभुजिन स्तवन ।

(शिवपुर नगर सुहामणो एदेशी)

हो प्रभु चंद जिनेश्वर चंद जिस्या ॥ वाणी शीतल चंद सो न्हालहो ॥ प्रभु उपशम रस जन सांभलै ॥ मिटै कर्म भ्रम मोह जाल हो ॥ प्रभु० ॥ १ ॥ एआंकणी ॥ हो प्रभु सूरत मुद्रा सोहनी ॥ बारु रूप अनूप विशाल हो ॥ प्रभु इन्द्र शची जिन निरखती ॥ तेतो तृप्त न होवे निहालहो ॥ प्रभु० ॥ २ ॥ अहो वीतराग प्रभु तूं सही ॥ तुम ध्यावे चित्त रोकहो ॥ प्रभु तुम तुल्य ते हुवे ध्यान स्यूं ॥ मन पाया परम संतोष हो ॥ प्रभु० ॥ ३ ॥ हो प्रभु लीन पणै तुम

ध्यावियां ॥ पामै इन्द्रादिकनी ऋद्धि हो ॥ वली विविध भोग सुख सम्पदा ॥ लहै आमोसही आदि लब्धिधहो ॥ प्रभु० ॥ ४ ॥ हो प्रभु नरेन्द्र पद पामै सही ॥ चरण सहीत ध्यान तम मनहो ॥ प्रभुअह सिंद्र पद पावै वलि ॥ कियां निश्चल थारो भजनहो ॥ प्रभु० ॥५॥ होप्रभु शरण आयो तुज साहिवा ॥ तुम ध्यान धरुं दिन रयनहो ॥ तुज मिलवा मुझ मन उमह्यो ॥ तुमशरणास्यूं सुखचैनहो ॥ प्रभु० ॥६॥ संवत उगणीसैनें भाद्रवे ॥ सुदि तेरसनें वुधवारहो ॥ प्रभु चंद्र जिनेश्वर समरिया ॥ हुआे आनंद हर्ष अपारहो ॥ प्रभु० ॥ ७ ॥

श्री सुविधि जिन स्तवन ।

(सोहीतेरापंथ पावे हो एदेशी)

सुविधि करी भजिये सदा ॥ सुविधि जिनेश्वर स्वामी हो ॥ पुष्पदंत नाम दूसरो ॥ प्रभु अंतरजामी हो ॥ सुविधि भजिये शिरनामी हो ॥१॥ एआंकणी ॥ श्वेत वरण प्रभु शोभता वारू वाण अमामीहो ॥ उप-शम रस गुण आगली ॥ मेटण भव भव खामीहो सु० ॥ २ ॥ समवसरण विच फावता ॥ त्रिभुवन तिलक तमामी हो ॥ इंद्र थकी ओपे घणां ॥ शिवदायक स्वामी हो सु० ॥३॥ सुरेंद्र नरेंद्र चन्द्र ते इंद्राणी

अभिरामी हो ॥ निरख निरख धापे नहीं एहवो रूप अमामीहो ॥ ॥ ४ ॥ मधु मकरंद तणीपरें । सुर नर करत सलामीहो ॥ तोपिण राग व्यापे नहीं । जीत्यो मोह हरामीहो ॥ सु० ॥५॥ जे जोधा जगमें घणा ॥ सिंघ साथे संग्रामीहो ॥ ते मन इन्द्रिय बश करी ॥ जोड़ी केवल पामीहो ॥ सु० ॥ ६ ॥ उगणीसे पुनम भाद्रवी प्रणमु शिरनामीहो ॥ मनचिन्तित वस्तु मिले ॥ रटियां जिन स्वामीहो ॥ सु० ॥ ७ ॥

श्री शीतलजिन स्तवन ।

(हुं देवा आइ ओलंभड़ो सासुजी एदेशी)

शीतलजिन शिवदायका ॥ साहिबजी ॥ शीतल चंद समान हो ॥ निस्नेही ॥ शीतल अमृत सारिखा ॥ साहिबजी ॥ तप्त मिटै तुम ध्यानहो ॥ निस्नेही ॥ सूरत थांरी मन बसी साहिबजी ॥१॥ वंदे निंदे तोभणी साहिबजी ॥ राग द्वेष नहीं तामहो ॥ निस्नेही ॥ मोह दावानल तैं मेटियो ॥ साहिबजी ॥ गुणनिष्पन्न तुम नाम हो ॥ निस्नेही ॥ सू० ॥ २ ॥ नृत्य करै तुज आगलें साहिबजी ॥ इन्द्राणी सुरनारहो ॥ निस्नेही ॥ राग भाव नहीं उपजे ॥ साहिबजी ॥ तेअंतर तप्त निवारहो ॥ निस्नेही ॥ सू० ॥ ३ ॥ क्रोध मान माया लोभए ॥ साहिबजी ॥ अग्निसुं अधिकी आगहो ॥ निस्नेही ॥

शुक्ल ध्यान रूप जलकरी ॥ साहेबजी ॥ थया शीत लिभूत महाभाग्यहो ॥ निस्नेही ॥ सू० ॥ ४ ॥ इंद्रिय नोइन्द्रिय आकरा ॥ साहेबजी ॥ दुर्जय ने दुर्दांतहो ॥ निस्नेही ॥ तें जीता मन थिर करी ॥ साहेबजी ॥ धरि उपशम चित शांतिहो ॥ निस्नेही ॥ सू० ॥५॥ अंतर-जामी आपरो ॥ साहेबजी ॥ ध्यान धरुं दिन रैनहो ॥ निस्नेही ॥ उवाही दिशा कद आवसी ॥ साहेबजी ॥ होसी उत्कृष्टो चैनहो ॥ निस्नेही ॥ सू० ॥६॥ उग-णीसे पूनम भाद्रवी ॥ साहेबजी ॥ शीतल मिलवा काजहो ॥ निस्नेही ॥ शीतल जिनजीनें समरिया ॥ साहेबजी ॥ हियो शीतल हुओ आजहो ॥ निस्नेही ॥ सू० ॥ ७ ॥

श्री श्रेयांसजिन स्तवन ।

(पुत्रवसुदेवनो एदेशी)

मोक्षमार्गश्रेयशोभता ॥ धाग्या स्वाम श्रेयांस उदाररे ॥ जेजेश्रेय वस्तु संसारमें ॥ ते ते आप करी अङ्गीकाररे ॥ ते ते आपकरी अंगीकार श्रेयांस जिनेश्वरु प्रणमूं नित्य वेकर जोड़रे ॥ १ ॥ समिति गुप्ति दुःधर घणा ॥ धर्म शुक्ल ध्यान उदाररे ॥ एश्रेय वस्तु शिव दायनी ॥ आप आदरी हर्ष अपाररे ॥ श्रे० ॥२॥ तन चंचलता मेटनें ॥ पद्मासन आप विराजरे ॥ उत्कृष्टो ध्यान तणो कियो ॥

आलम्बन श्रीजिनराजरे ॥ श्रे० ॥ ३ ॥ इन्द्रिय विषय विकारथी ॥ नरकादि रुलियो जीवरे ॥ किंपाक फलनी उपमा ॥ रहिये दूर थी दूर सदीवरे ॥ श्रे० ॥ ४ ॥ संयम तप जप शीलए ॥ शिव साधन महा सुखकाररे ॥ अनित्य अशरण अनंतए ॥ ध्यायो निर्मल ध्यान उदाररे ॥ श्रे० ॥ ५ ॥ स्त्रियादिक ना सङ्गते ॥ आलम्बनदुःख दातारे ॥ अशुद्ध आलम्बन छांड़ने ॥ धर्यो ध्यान आलम्बन साररे ॥ श्रे० ॥ ६ ॥ शरणे आयो तुज साहिबा ॥ करुं बारंबार नमस्काररे ॥ उगणीसे पूनम भाद्रवे ॥ मुज वर्त्या जय जय काररे ॥ श्रे० ॥ ७ ॥

श्री वासुपूज्य जिन स्तवन ।

(इम जाप जपो श्रीनवकारं एदेशी)

द्वादशमा जिनवर भजिये ॥ राग द्वेष मच्छर माया तजिये ॥ प्रभु लालवरण तन छिव जाणी ॥ प्रभुवासुतपूज्य भजले प्राणी ॥ १ ॥ वनिता जाणी वैतरणी ॥ शिव सुंदर वरवा हंस घणी ॥ काम भोग तज्या किंपाक जाणी ॥ प्र० ॥ २ ॥ अञ्जन मञ्जन स्युं अलगा ॥ वलि पुष्प विलेपन नहीं विलगा ॥ कर्म काप्या ध्यान मुद्रा ठाणी ॥ प्र० ॥ ३ ॥ इन्द्र थकी अधिका ओपे ॥ करुणागर कदेइ नहीं कोपे ॥ वर शाकर दूध जिसी वाणी ॥ प्र० ॥ ४ ॥ स्त्री स्नेह पाशा दुर्दंता ॥ कह्या नरक निगोद तणा पंथा ॥

इह भव परभव दुःखदाणी ॥ प्र० ॥ ५ ॥ गज कुम्भ दलै मृगराज हणी ॥ पिण दोहिली निज आत्मा दमणी ॥ इम सुण बहु जीवचेत्या जाणी ॥ प्र० ॥ ६ ॥ भाद्रवी पूनम उगणीसो ॥ कर जोड़ नमूं वासुपूज्य इसो ॥ प्रभु गांतां रोम राय हुलसाणी ॥ प्र० ॥ ७ ॥

श्री विमल जिन स्तवन ।

कांयनमांगाकांयनमांगाहोराणाजीमांगपूर्णप्रितवीजूं

(कांयनमांगाहो पदेशी)

शरणे तिहारेहो विमलप्रभु ॥ सेवकनी अरदाश ॥ आयो शरण तिहारेहो ॥ विमल करण प्रभु विमलनाथजी ॥ विमल आप मल रहीत ॥ विमल ध्यान धरतां हुवे निर्मल ॥ तन मन लागी प्रीत ॥ साहिब शरणे तिहारेहो ॥ १ ॥ विमल ध्यान प्रभु आप ध्याया ॥ तिण सूं हुआ विमल जगदीश ॥ विमल ध्यान वलि जे कोई ध्यासी ॥ होसी विमल सरीस ॥ सा० ॥ २ ॥ विमल गृहवासे द्रव्य जिनंद्र था ॥ दीक्षा लियां भावे साध ॥ केवल उपना भावे जिनेश्वर ॥ भावे विमल आराध ॥ सा० ॥३॥ नाम स्थापना द्रव्य विमल थी कारज न सरेकोय ॥ भाव विमल थी कारज सुधरे ॥ भाव जप्यां शिव होय ॥ सा० ॥४॥ गुण गिरवो गंभीर धीरतूं ॥ तूं मेटण जम त्रास ॥ मैं तुम वयण आगम शिर धार्या ॥ तूं मुझ पूरण आश ॥

सा० ॥ ५ ॥ तूँही कृपाल दयाल तूं साहेब । शिवदायक तूं जगनाथ ॥ निश्चल ध्यान करे तुज ओलख ॥ ते मिले तुज संघात ॥ सा० ॥ ६ ॥ अंतरजामी आप उजागर ॥ में तुम शरणो लीध ॥ संवत उगणीसे भाद्रवी पुँनम वंछितकार्य सिद्ध ॥ सा० ॥ ७ ॥

अनंत जिन स्तवन ।

(पायो युगराजपद मुनि पदेशी)

अनंतनाम जिन चउदमारे ॥ द्रव्य चोथे गुणठांण भलांजी कांई द्रव्य० ॥ भावे जिन हुवे तेरमेरे ॥ इतले द्रव्य जिन जाण ॥ भलाजी कांई इतले द्रव्य जिन जाण ॥ पायो पद जिनराजनुंरे ॥ शुद्ध ध्यान निरमल ध्याय ॥ भलां० पायोपद ॥ १ ॥ जिन चक्री सुर जुगलियारे ॥ वासूदेव बलदेव भलां० बा० ॥ एपञ्चम गुण पावे नहींरे ॥ ए रीत अनादि स्वमेव भलां० ए० ॥पा० ॥ २ ॥ संयम लीधो तिण समेरे ॥ आया सातमें गुंणठाण भलां० आ० ॥ अंतर मुहूर्त्त तिहांर हीरे ॥ छठे बहुस्थिति जाण भलां० छ० ॥ पा० ॥ ३ ॥ आठमां थी होय श्रेणीछेरे ॥ उपशम खपक पिछाण भलां० उ० उपशम जाम इग्यारमेरे ॥ मोह दबावतो जाण भलां० मो० ॥पा०॥४॥ श्रेणी उपशम जिन ना लहेरे ॥ खपकश्रेणी धर खंत भ० ख ० चारित्रमोह खपावतांरे ॥

चढिया ध्यान अत्यन्त भ० च० ॥ पा० ॥ ५ ॥ नवमे आदि संजलचिहुं रे ॥ अंतसमे इक लोभ भ० अं० । दसमे सूक्ष्म मात्रतेरे ॥ सागार उपयोग शोभ भ० सा० ॥ पा० ॥६॥ एकादशमो उलंघनैरे ॥ बारमें मोह खपाय ॥ भ० बा० ॥ त्रिकर्म एक समै तोडतारे तेरमे केवल पाय ॥ पा० ॥७॥ तीर्थ थाप योग रुंधनैरे । चउदमा थी शिवपाय भ० च० ॥ उगणीसै पुनम भाद्रवेरे ॥ अनंत रख्या हरषाय भ० अ० ॥ पा० ॥ ८ ॥

॥ ओ स्तवन नीचे लिखे मूजब चालमें भी गायो जावे है ॥

अनंत नाम जिन चवदमां, जिनरायारे ॥ द्रव्यथ चोथे गुण स्थान, स्वाम सुखदायारे ॥ भावे जिन हुवे तेरमें, जिनरायारे ॥ इतलै द्रव्य जिन जाण, स्वाम सुखदायारे ॥ १ ॥

धर्म जिन स्तवन ।

(भक्षुपटभारीमालभलकै एदेशी)

धर्म जिन धर्म तणा धोरी ॥ त्रटक मोहपाश नाख्या तोड़ी ॥ चरण धर्म आत्म स्यूं जोड़ी म्हो प्रभु धर्म देव प्यारा ॥१॥ शुक्ल ध्यान अमृत रस लीना ॥

संवेग रसे करी जिन भीना ॥ प्याला प्रभु उपशमना पीना ॥ अ० ॥२॥ जाण्या शब्दादिक मोह जाला ॥ रमणि सुख किंपाक सम काला ॥ हेतु नरकादिक दुःख आला ॥ अ० ॥ ३ ॥ पुद्गल शिव अरि जाण्या स्वामी ॥ ध्यानथिर चित्त आत्म धामी ॥ जोड़ी युग केवलनो पामी ॥ अ० ॥ ४ ॥ थाप्या प्रभु च्यार तीरथ तायो ॥ आख्यो धर्म जिन आज्ञा मांयो ॥ आज्ञा बाहिर अधर्म दुःखदायो ॥ अ० ॥ ५ ॥ व्रतधर्म धर्मजिन आख्याता ॥ अबिरत कही अधर्म दुखदाता ॥ सावद्य निरवद्य जु जुआ कह्या खाता ॥ अ० ॥६॥ बहु जन तार मुक्ति पाया ॥ उगणीसे आसू धुर दिन आया ॥ धर्मजिन रटवे सुख पाया ॥ अ० ॥ ७ ॥

श्री शांतिजिन स्तवन ।

हुं बलिहारी भीखणजी साधरी ।

शांतिकरण प्रभु शांतिनाथजी ॥ शिव दायक सुखकंदकी ॥ बलिहारी हो शांतिजिणंदकी ॥ १ ॥ अमृत वाणी सुधासी अनुपम ॥ मेटण मिथ्या मंदकी ॥ ॥ ब० ॥२॥ काम भोग राग द्वेष कटुक फल ॥ विष बेलि मोह धंदकी ॥ ब० ॥३॥ राक्षसणी रमणी वेतरणी पुतली अशुचि दुर्गंधकी ॥ ब० ॥ ४ ॥ विविध उपदेश देइ जन तार्‌या ॥ हुं वारी जाउं विश्वानंद

॥ ५ ॥ जप्त जाप खपत पाप ॥ तप्त ह्रि मिटायो ॥ मल्लि देव त्रिविधि सेव ॥ जग चक्रेरो पायो ॥ ६ ॥ उगणोसै आसोज तीज कृष्ण सुदिन आयो ॥ कुम्भनंदन कार आनंद ॥ हर्षथी में गायो ॥ म० ॥ ७ ॥

श्री मुनिसुव्रत जिनस्तवन ।

शोरठ ।

भरतजी भूप भयाछो वैरागी ।

सुमित्र नंदन श्रीमुनिसुव्रत ॥ जगत नाथ जिन जाणी ॥ चारित्र लेइ केवल उपजायो ॥ उपशम रसनी वाणीरा ॥ प्रभुजी आप प्रबल बड़ भागी ॥१॥ त्रिभुवन दीपक सागीरा ॥ प्र० ॥ आ० एआंकणी ॥ चौत्रीस अतिशय पैंत्रीसवाणी ॥ निरखत सुर इन्द्राणी ॥ संवेग रसनी वाणी सांभल ॥ हर्षस्युं आंख्यां भराणीरा ॥ प्र० ॥ आ० ॥ २ ॥ शब्द रूप रस गंध अने स्पर्श प्रात कूल न हुवे तुम आगी ॥ ज्युं पंच दर्शन थास्यूंपग नहीं मांडे ॥ तिम अशुभ शब्दादिक भागीरा ॥ प्र० ॥ आ० ॥३॥ सुर कृत जलस्थल पुष्प पुंजवर ॥ तेकांछी चित दीनो ॥ तुज निश्वास सुगंध सुख परिमल मन-भ्रमर मक्षा लीनोरा ॥ प्र० ॥ आ० ॥४॥ पंचेन्द्री सुर नर तिरि तुमस्युं ॥ किम हुवै दुखदायो ॥ एकेंद्री

अनिल तजै प्रतिकूल पणुं ॥ बाजै गमतो वायोरा ॥ प्र० आ० ॥ ५ ॥ राग द्वेष दुर्दंत ते दमिया ॥ जीत्या विषय विकारो ॥ दीन दयाल आयो तुज शरणे ॥ तुं गति मति दातारोरा ॥ प्र० आ० ॥६॥ सम्वत उगणीसै आसोज तीज कृष्ण श्री मुनिसुव्रत गाया ॥ लाडनूं शहर मांहि रूड़ी रीतें आनंद अधिको पायारा ॥ प्र० आ० ॥ ७ ॥

श्री नमि जिन स्तवन ।

परम गुरू पुज्यजी मुज प्यारारे ।

नमिनाथ अनाथांरानाथोरे ॥ नित्य नमण करूं-जोड़ी हाथोरे ॥ कर्म काटण बीर विख्यातो ॥ प्रभु नमिनाथजो मुजप्यारारे ॥ १ ॥ प्रभु ध्यान सुधारस ध्यायारे पद कैवल जोड़ीपाया रे ॥ गुण उत्तम उत्तम आया ॥ प्र० ॥२॥ प्रभु वागरी वाण विशालोरे ॥ खीर समुद्रथी अधिक रसालोरे ॥ जगतारक दीन दयालो ॥ प्र० ॥३॥ थाप्या तीर्थं च्यार जिणंदोरे ॥ मिथ्या तिमिर हरणनें सुणंदोरे ॥ त्यानें सेवे सुर नर वृन्दो ॥ प्र० ॥४॥ सुर अनुत्तर विमाणना सेवेरे प्रश्न पूछ्यां उत्तर जिन देवेरे ॥ अवधिग्यांन करी जाणलेवे ॥ प्र० ॥ तिहां बैठा ते तुम ध्यान ध्यावेरे ॥ तुम योग मुद्रा चित्त भावेरे ॥ ते पिण आपरी भावना भावे ॥ प्र० ॥६॥

उगणीसै आसोज उदारोरे कृष्ण चोथ गाया गुण धारोरे ॥ हुओ आनंद हर्ष आपारो ॥ प्र० ॥ ७ ॥

श्री अरिष्टनेमि जिन स्तवन ।

छिणगईरे ।

प्रभु नेमिस्वामी ॥ तुं जगनाथ अंतरजामी ॥ तुं तोरण स्युं फिर्यो जिनस्वाम ॥ अद्भुत वात करी तें धमाम ॥ प्रभु० ॥१॥ राजिमती छांड़ी जिनराय ॥ शिव सुन्दर स्युं प्रीत लगाय ॥ प्रभु ॥२॥ केवल पाया ध्यान वर ध्याय ॥ इन्द्र शची निरखे हर्षाय ॥ प्र० ॥३॥ नेरिया पिण पामें मन मोद ॥ तुज कल्याण सुर करत विनोद प्र० ॥४॥ राग रहित शिव सुखस्युं प्रीत कर्सं हणे वलि द्वेष रहित ॥ प्र० ॥५॥ अचरिजकारी प्रभु थारो चरित्र ॥ हुं प्रणमुं कर जोड़ी नित्य ॥ प्र० ॥६॥ उगणीसै वदि चोथ कुमार ॥ नेमि जप्यां पायो सुखकार ॥ प्र० ॥७॥

श्री पार्श्व जिनस्तवन ।

पूज्य भीखणजी तुमारा दर्शण ।

लोह कांचन करे पारस काचो ॥ ते कहो कर कुण लेवे हो ॥ पारस तुं प्रभु साचो पारस । आप समो कर देवे हो ॥ पारसदेव तुमारा दर्शन । भाग भला सोइ पावे हो ॥१॥ तुज मुख कमल पासे चमरावलि ।

चंद्र क्रान्ति वत सोहै हो ॥ हंस श्रेणि जाणे पंकज सेवै । देखत जन मन मोहै हो पारस० ॥ २ ॥ फटिक सिंहासण सिंह आकारे । बैठ देशना देवै हो ॥ वन मृग आवै बाणी सुणवा । जाणक्ते सिंह नें सेवै हो ॥ पारस० ॥३॥ चंद समो तुज मुख महा शीतल । नयन चकोर हर्षावे हो ॥ इन्द्र नरेंद्र सुरासुर रमणी । निरखत तृपति न पावै हो ॥ पारस० ॥ ४ ॥ पाखंडी सरागी आप निरागी । आमसमें इमगेरी हो ॥ वैर भाव पाखंडी राखे । पिण आप त्यांरा नहीं वैरी हो ॥ पारस० ॥५॥ जिम सूर्य खद्योत उपरें । वैरभाव नहीं आणे हो ॥ प्रभु पिण इण विधि पाखंडिया नें । खद्योत सरीखा जाणे हो ॥ पा० ॥ ६ ॥ परम दयाल कृपाल पारस प्रभु । संवत उगणीसै गाया हो ॥ आसोज कृष्ण तिथि चोथ लाडनूं । आनंद अधिको पाया हो ॥ पारस० ॥ ७ ॥

श्री महावीर जिनस्तवन ।

कपिरे प्रिया संदेशो कहे ।

चरम जिनेंद्र चोवीसमा जिन । अघहणवा महावीर ॥ विकट तप वर ध्यान कर प्रभु । पाया भव जल तीर ॥ नहीं इसो दूसरो जगवीर ॥ उपसर्ग सहिवा अडिग जिनवर । सुर गिर जेम सधीर ॥ नहीं ॥ १ ॥

संगम दुःख दिया आकरारे। पिण सुप्रसन्न निजर दयाल ॥ जग उद्धार हुवे मो थकीरे। ए डूवे इण काल ॥ नहीं ॥ २ ॥ लोक अनार्य वहु किया रे। उपसर्ग विविध प्रकार ॥ ध्यान सुधा रस लीनता जिन। मन में हर्ष अपार ॥ नहीं ॥३॥ इण पर कर्म खपाय नें प्रभु। पाया केवल नाण ॥ उपशम रसमय वागरी प्रभु। अधिक अनूपम वाण ॥ नहीं ॥ ४ ॥ पुद्गल सुख अरि शिव तणारे। नरक तणा दातार ॥ छांड़ि रमणी किंपाक वेलि। संवेग संयम धार ॥ नहीं० ॥५॥ निंदा स्तुति सम पणेरे। मान अनें अपमान ॥ हर्ष शोक मोह परिहर्‌यां रे। पामै पद निर्वाण ॥ नहीं ॥६॥ इम वहुजन प्रभु तारिया रे प्रणमुं चरम जिनंद ॥ उगणीसै आसोज चोथ वदि। हुवो अधिक आनंद ॥ नहीं० ॥ ७ ॥

इति श्रीभीखणजी स्वामी तस्य शिष्य भारीमालजी स्वामी, तस्य शिष्य रिषरायचंदजी स्वामी तस्य शिष्य जीतमलजी स्वामी कृत चतुर्विंशति जिनस्तुति समाप्तः

॥ दुहा ॥

नमुं देव अरिहंत नित्य जिनाधिपति जिणराय ॥
द्वादश गुण सहितजे वंदु मन वच काय ॥ १ ॥
नमुं सिद्ध गुण अष्टयुत आचार्य मुनिराज ॥
गुण षट तीस संयुतजे प्रणमुं भव दधि पाज ॥ २ ॥
प्रणमुं फुन उवझाय प्रति गुण पण बीस उदार ॥
नमुं सर्व साधु निर्मल सप्त बीस गुण धार ॥ ३ ॥
द्वादस अठ षट तीस फुन वली पण बीस प्रगट ॥
सप्त बीस ए सर्वही गुण वर इकसय अठ ॥ ४ ॥
नोकरवाली ना जिके मिणियां जगत मझार ॥
एक २ जे गुण तणों एक २ मिणियोंसार ॥ ५ ॥

॥ णमोअरिहंताणं ॥

नमस्कार थावो अरिहंत भगवंतने ।

ते अरिहंत भगवंत केहवा छे १२ बारे गुणे करी सहित छे ते कहे छे अनन्तो ज्ञान १ अनन्तो दर्शण २ अनन्तो बल ३ अनन्तो सुख ४ देव ध्वनि ५ भा मण्डल ६ फटिक सिंघासण ७ अशोकवृक्ष ८ पुष्प विष्टी ९ देव दुंदवी १० चमरवींजे ११ छत्र धारे १२

॥ णमोसिद्धाणं ॥

नमस्कार थावो सिद्ध भगवंतने ।

ते सिद्ध भगवंतकेहवा छे । आठ गुणे करी सहित छे ते कहे छे । केवल ग्यान १ केवल दर्शण २ आत्मीक सुख ३ चायक समकित ४ अटल अवगाहणा ५ अमुर्त्तिभाव ६ अग्रलघुभाव ७ अन्तराय रहित ८

॥ णमो आयरियाणं ॥

नमस्कार थावो आचार्य महाराजने ।

ते आचार्य महाराज केहवा छे । ३६ षट तीस गुणे करी सहित छे ते कहे छे । आरजदेश ना उपनां १ आरज कुल ना उपनां २ जातवंत ३ रूपवंत ४ थिर संघयेण ५ धीरजवंत ६ आलोवणां दूसरा पासे कहे नहीं ७ पोतेरा गुण पोते वर्णन न करे ८ कपटी न होवे ९ शब्दादिक पांच इन्द्री जीते १० राग द्वेष रहित होवे ११ देश ना जाण होवे १२ काल नां जाण होवे १३ तीक्षण बुद्धि होवे १४ घणां देशांरी भाषा जाने १५ पांच आचार सहित १६ सूतांरा जाण होवे १७ अर्थरा जाण होवे १८ सूत्र अर्थ दोनों रा जाण होवे १९ कपटकरी पूछे तो छलावे नहीं २० हेतुनां जाण होवे २१ कारणरा

जाण होवे २२ दिष्टान्त नां जाण होवे २३ न्यायरा जाण होवे २४ सीखणे समर्थ २५ प्राश्चितनां जाण होवे २६ थिर परिवार २७ आदेज वचन बोले २८ परीषह जीते २९ समय पर समय नां जाण ३० गंभीर होवे ३१ तेजवंत होवे ३२ पण्डित विचक्षण होवे ३३ सोम चन्द्रमांजीसा ३४ शूरवीर होवे ३५ बहु गुणी होवे ३६

पुन:

५ पांच इन्द्री जीते ४ च्यार कषायटाले नववाड़ सहित ब्रह्मचर्य पाले ५ पंच महाव्रत पाले ५ पंच आचार पाले ग्यांन १ दर्शण २ चारित ३ तप ४ विर्य ५ ५ पंच समिति पाले इर्या १ भाषा २ अेषणा ३ आदान भंड निक्षेपण ४ उच्चार पासवण ५ ३ तीन गुप्ती मन १ वचन २ कायगुप्ती ३

इति षट तीस गुण संपूर्ण।

॥ णमोउवज्झायाणं ॥

नमस्कार थावो उप्पाध्याय महाराजने।

ते उप्पाध्याय महाराज केहवा छे २५ पचवीस गुणे करी सहित छे ते कहे छे। १४ चवदे पूरब ११ इग्यारे अंग भणे भणावे।

पुनः

११ इग्यारे अंग १२ बारे उपांग भणे भणावे ।

॥ णमोलोएसव्वसाहुणं ॥

नमस्कार थावो लोकने विषे सर्व साधु मुंनिराजोंने ।

ते साधु मुनिराज केहवा छे सप्तवीस गुणे करी सहित छे ते कहेछे। ५ पंच महाव्रत पाले ५ इंद्री जीते ४ च्यार कषाय टाले भाव संचेय १५ करण संचैय १६ जोग संचैय १७ चम्यावंत १८ वैराग्यवंत १९ मनसमांधारणीया २० वचन समांधारणी या २१ कायसमांधारणीया २२ नांणसंपणा २३ दर्शन संपना २४ चारित संपना २५ वेदनी स्रायां समो अहियासे २६ मरणआयां समो अहियासे २७ ॥

इति संपूर्णम् ।

सामायक लेणेकी पाटी ।

करेमि भन्ते सामायियं सावज्जं जोगं ।

पच्चखामि जाव नियम (मुहूर्त एक) पज्जवासामी दुविहिं तिविहेणं नकरेमी नकारवेमी मनसा वायसा कायसा तस्स भन्ते पड़िक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसरामि ॥

सामायेक पारणेकी पाटी ।

नवमा सामायक व्रतनें विषे ज्यो कोई अतिचार दोष लागोहुवे ते आलोउं १ सामायक में सुमता नकिधी विकथाकिधी हुवे अणपूरी पारी होय पारवो विसाखो होय मन बचन कायाका जोग माठा परिवरताया होय सामायकमें राज कथा देशकथा स्त्रीकथा भत्तकथा करी होय तस्स मिच्छामि दुक्कडं ।

अथ तिख्खुताको पाटी ।

तिक्खुतो अयाहियं पयाहियं बंदामि नमंसामि सक्कारेमि सम्माणेमि कल्लाणं मंगलं देइयं चेइयं पज्जुवासामि मत्थएण बंदामी ।

॥ अथ पंच पद बंदणा ॥

पहिले पदे श्री सीमंधर स्वामी आदि देई जघन्य २० (बीस) तीर्थंकर देवाधिदेवजी उत्कृष्टा १६० (एकसो साठ) तीर्थंकर देवाधिदेवजी पंचमाहाविदेह खेत्रांके विषे विचरेछे अनन्त ज्ञानका धणी अनंत दर्शनका धणी अनन्त चारित्रका धणी अनन्त बल का धणी एक हजार आठ लक्षणाका धारणहार

चौसट इन्द्राका पूजनीक चौतीस अतिशय प तीस बाणी द्वादश गुण सहित विराजमान छै ज्यां अरिहन्ता सें मांहरी वंदना तिख्खुत्ताका पाठसे मालुम होज्यो।

दूजे पदे अनन्ता सिद्ध पंनरा भेदे अनन्ती चोवीसी आठ कर्म खपायनें सिद्ध भगवान मोक्ष पहुंता तिहां जनम नहीं जरा नहीं रोग नहीं सोग नहीं मरण नहीं भय नहीं संयोग नहीं वियोग नहीं दुःख नहीं दारिद्र नहीं फिर पाछा गर्भावासमें आवे नहीं सदा काल शाश्वता सुखामें विराजमान छै इसा उत्तम सिद्ध भगवंतासें मांहरी वंदना तिख्खुताका पाठसें मालुम होज्यो।

तीजे पदे जघन्य दोय कोड़ केवली उत्कृष्टा नव कोड़ केवली पञ्चमाहविदेह क्षेत्रामें विचरे छै केवल ज्ञान केवल दर्शनका धारक लोकालोक प्रकाशक सर्व द्रव्य क्षेत्र काल भाव जाणें देखे छै ज्यां केवलीजी सें माहरी वन्दना तिख्खुताका पाठसें मालुम होज्यो॥

चौथे पदे गणधरजी आचार्यजी उपाध्यायजी स्थविरजी तेगणधरजी महाराज केहवा छै अनेक गुणे करी विराजमान छै आचार्यजी महाराज केहवा छै छट तीस गुणे करी विराजमान छै उपाध्यायजी महाराज केहवा-

छै पचवीसगुणे करी बिराजमान छै स्थविरजी महाराज कैहवा छै धर्मसें डिगता हुवा प्राणीनें थिरकरी राखे शुद्ध आचार पाले पलावे ज्यां उत्तम पुरुषां से मांहरी बन्दना तिख्खुताका पाठसें मालुम होज्यो।

पञ्चमें पदे मांहारा धर्म आचारज गुरु पूज्य श्री श्रीश्री १००८ श्रीश्रीकालूरामजी स्वामी (वर्तमान आचारजको नांव लेणो) आदि जघन्य दोय हजार कोड़ साधु साध्वी जाझेरा उत्कृष्टा नवहजार कोड़ साधु साध्वी अढ़ाई द्वीप पन्दरे खेत्रांमें बिचरे छै ते महा उत्तम पुरुष कैहवा छै पञ्च महाव्रतका पालणहार छव कायानां पीयर पञ्च समिति सुमता तीन गुप्ती गुप्ता नवबाड़सहित ब्रह्मचर्य्यका पालक-दशविधि यतिधर्मका धारक बारे भेदे तपस्याका करणहार सतरे भेदे संजमका पालणहार बावीस परीसहका जीतणहार सतावीस गुणे करी संयुक्त बयालीस दोष टाल आहार पांणीका लेवणहार बावन अणाचारका टालणहार निरलोभी निरलालची संसार नां त्यागी मोक्षनां अभिलाषी संसारसें पूठा मोक्षसें सहामा सचित्तका त्यागी अचित्तका भोगी अस्वादी त्यागी बैरागी तेड़ीया आवे नहीं नोंतीया जीमें नहीं मोलकी वस्तु लेवे नहीं कनककामणीसें न्यारा बायरानी

परे अप्रतिबन्ध बिहारी इसा माहापुरुषांसें मांहरी बन्दना तिख्खुताका पाठसें मालूम होज्यो

॥ अथ पच्चीस बोल ॥

१ पहिले बोले गति च्यार ४

नर्कगति १ तिर्यंचगति २ मनुष्यगति ३ देवगति ४

२ दूजे बोले जातिपांच ५

एकेन्द्री १ बेइन्द्री २ तेइन्द्री ३ चोइन्द्री ४ पंचेंद्री ५

३ तीजे बोले काया छव

पृथ्वीकाय १ अप्पकाय २ तेउकाय ३ वाउकाय ४ वनस्पतिकाय ५ त्रसकाय ६

४ चौथे बोले इन्द्री पांच

श्रोतइन्द्री १ चक्षु इन्द्री २ घ्राणइन्द्री ३ रस-इन्द्री ४ स्पर्शइन्द्री ५

५ पांचमें बोले पर्याय छव ६

आहारपर्याय १ शरीरपर्याय २ इन्द्रीय पर्याय ३ श्वासोश्वासपर्याय ४ भाषापर्याय ५ मनपर्याय ६

६ छठै बोले प्राण १०

श्रोतेंद्री बलप्राण १ चक्षु इन्द्रीबलप्राण २ घ्राण इन्द्रीबलप्राण ३ रसिन्द्रीबलप्राण ४ स्पर्शइन्द्री बलप्राण ५ मनबलप्राण ६ वचनबलप्राण ७ काया

बलप्राण ८ श्वासोश्वासबलप्राण ९ आउषोबलप्राण १०

७ सातमें बोले शरीर पांच ५

औदारिक शरीर १ वैक्रियशरीर २ आहारिक शरीर ३ तैजसशरीर ४ कार्मणशरीर ५

८ आठवें बोले जोग पंदराह १५

४ च्यारमनका

सत्यमनजोग १ असत्यमनजोग २ मिश्रमनजोग ३ व्यवहारमनजोग ४

४ च्यारवचनका

सत्यभाषा १ असत्यभाषा २ मिश्रभाषा ३ व्यवहार भाषा ४

७ सातकायाका

औदारिक १ औदारिक मिश्र २ वैक्रिय ३ वैक्रिय मिश्र ४ आहारिक ५ आहारिक मिश्र ६ कार्मण जोग ७

९ नवमें बोले उपयोग बारह १२

५ पांच ज्ञान

मतिज्ञान १ श्रुतिज्ञान २ अवधिज्ञान ३ मन पर्यवज्ञान ४ केवलज्ञान ५

३ तीन अज्ञान

मतिअज्ञान १ श्रुतिअज्ञान २ विभंगअज्ञान ३

४ च्यारदर्शण

चक्षुदर्शण १ अचक्षु दर्शण २ अवधिदर्शण ३ केवल दर्शण ४

१० दशमें बोले कर्म आठ ८

ज्ञानावर्णी कर्म १ दर्शणावर्णी कर्म २ वेदनी कर्म ३ मोहणी कर्म ४ आयुष्य कर्म ५ नामकर्म ६ गोत्रकर्म ७ अंतरायकर्म ८

११ इग्यारमें बोले गुण स्थान चौदाह १४

१ पहिलो मिथ्याती गुणस्थान ।

२ दूजो साह्स्वादान समदृष्टि गुणस्थान ।

३ तीजो मिश्र गुणस्थान ।

४ चौथो अव्रती समदृष्टि गुणस्थान ।

५ पांचमो देशविरती श्रावक गुणस्थान ।

६ छट्ठो प्रमादी साधु गुणस्थान ।

७ सातवों अप्रमादी साधु गुणस्थान ।

८ आठवों नियट वादर गुणस्थान ।

९ नवमो अनियट वादर गुणस्थान ।

१० दसमो सुक्षम संप्राय गुणस्थान ।

११ इग्यारमूं उपशान्ति मोह गुणस्थान ।

१२ वारमूं क्षीण मोहनी गुणस्थान ।

१३ तेरमूं संयोगी केवली गुणस्थान ।

१४ चौदमूं अयोगी केवली गुणस्थान ।

१२ बारमें बोले पांच इन्द्रियांको तेबीस विषय

श्रोतइन्द्रीको तीन विषय

जीव शब्द १ अजीव शब्द २ मिश्र शब्द ३

चक्षु इन्द्रीको पांच विषय

कालो १ पीलो २ धोलो ३ रातो ४ लीलो ५

घ्राण इन्द्रीको दोय विषय

सुगंध १ दुर्गन्ध २

रस इन्द्रीको पांच विषय

खट्टो १ मीठो २ कड़वो ३ कसायलो ४ तीखो ५

स्पर्श इन्द्रीको आठ विषय

हलको १ भारी २ खरदरो ३ सुहालो ४ लूखो ५ चोपड्यो ६ ठंडो ७ उन्हो ८

१३ तेरमें बोले दश प्रकारका मिथ्याती ।

१ जीवनें अजीव सरदह ते मिथ्याती

२ अजीवनें जीव सरदह ते मिथ्याती

३ धर्मनें अधर्म सरदह ते मिथ्याती

४ अधर्मनें धर्म सरदह ते मिथ्याती

५ साधुनें असाधु सरदह ते मिथ्याती

६ असाधुनें साधु सरदह ते मिथ्याती

७ मार्गनें कुमार्ग सरदह ते मिथ्याती

८ कुमार्गनें मार्ग सरदहै ते मिथ्याती

९ मोक्षगयांनें अमोक्षगया सरदहै ते मिथ्याती

१० अमोक्षगयांनें मोक्षगया सरदहै ते मिथ्याती

१४ चौदमें बोले नवतत्वको जांणपणों तीका

११५ एकसो पन्दराह बोल

१४ चौदाह जीवका—

सुक्ष्म एकेंद्रीका दोय भेदः—

१ पहिलो अपर्याप्तो २ दूसरो पर्याप्तो

बादर एकेन्द्रीका दोय भेद :—

३ तीजो अपर्याप्तो ४ चौथो पर्याप्तो

बेइन्द्री का दोय भेद :—

५ पांचमूं अपर्याप्तो ६ छट्ठो पर्याप्तो

तेइन्द्रीका दोय भेदः—

७ सातमूं अपर्याप्तो ८ आठमूं पर्याप्तो

चोइन्द्रीका दोय भेदः—

९ नवमूं अपर्याप्तो १० दशमूं पर्याप्तो

असन्नी पंचेन्द्रीका दोय भेदः—

११ इग्यारमूं अपर्याप्तो १२ बारमूं पर्याप्तो

सन्नी पंचेन्द्रीका दोय भेद—

१३ तेरमूं अपर्याप्तो १४ चौदमूं पर्याप्तो

१४ चौदे अजीवका भेदः—

धर्मास्ति कायका ३ तीन भेदः—

खंध, देश, प्रदेश,

अधर्मास्ति कायका ३ तीन भेदः—

खंध, देश, प्रदेश,

आकाशास्ति कायका ३ तीन भेदः—

खंध, देश, प्रदेश,

कालको दशमूं भेद (ए दश भेद अरूपीके)

पुद्गलास्ति कायका ४ च्यार भेदः—

खंध, देश, प्रदेश, परमाणु

९ पुन्य नव प्रकारे

अन्नपुन्य १ पाणपुन्य २ लैणपुन्य* ३ सयणपुन्य* ४ वत्थपुन्य ५ मनपुन्य ६ बचनपुन्य ७ कायापुन्य ८ नमस्कारपुन्य ९

१८ पाप अठारे प्रकार :—

प्राणातिपात १ मृषावाद* २ अदत्तान ३ मैथुन ४ परिग्रह ५ क्रोध ६ मान ७ माया ८ लोभ ९ राग १० द्वेष ११ कलह १२ अभ्याख्यान १३ पैशुन्य* १४ परपरिवाद १५ रतिअरति १६ मायामृषा १७ मिथ्यादर्शन शल्य १८

---

* लैण=जागां जमीनादिक * सयन=पाट बाजोटा दिक

* वाद=बोलना * पैशुन्य=चुगली

२० वीस आस्रवका :—

मिथ्यात्व आस्रव १ अव्रत आस्रव २ प्रमाद आस्रव ३ कषाय आस्रव ४ जोग आस्रव ५ प्राणातिपात जीवकी हिंसा करेते आस्रव ६ मृषावाद झूठ बोले ते आस्रव ७ अदत्तादान चोरी करेते आस्रव ८ मैथुन सेवे ते आस्रव ९ परिग्रह राखे ते आस्रव १० श्रुत इन्द्री मोकली मेलेते आस्रव ११ चक्षु इन्द्री मोकली मेले ते आस्रव १२ घ्राण इन्द्री मोकली मेले ते आस्रव १३ रस इन्द्री मोकली मेले ते आस्रव १४ स्पर्श इन्द्री मोकली मेले ते आस्रव १५ मनप्रवर्तावे ते आस्रव १६ वचनप्रवर्तावेते आस्रव १७ कायाप्रवर्तावे ते आस्रव १८ भण्डोपगरणमेलताअजयणाकरे * ते आस्रव १९ सुई कुसाग्रमात्र सेवे ते आस्रव २०

२० वीस संवरका :—

सम्यक् ते संवर १ व्रत ते संवर २ अप्रमाद ते संवर ३ अकषाय संवर ४ अजोग संवर ५ प्राणातिपात न करे ते संवर ६ मृषावाद न बोले ते संवर ७ चोरी न करे ते संवर ८ मैथुन न सेवे ते संवर ९ परिग्रह न राखे ते संवर १०

---

* अजयणा=यत्ना

श्रुत इन्द्री बशकरे ते संबर ११ चक्षु इन्द्री बशकरे ते संबर १२ घ्राणइन्द्री बशकरे ते संबर १३ रसेन्द्री बशकरे ते संबर १४ स्पर्श इन्द्री बशकरे ते संबर १५ मन बशकरे ते संबर १६ बचन बशकरे ते संबर १७ काया बशकरे ते संबर १८ भण्डउपगरणमेलतां अजयणानकरे ते संबर १६ सुई कुसाग्र न सेवे ते संबर २०

१२ निरजरा बारे प्रकारे:—

अणसण* १ उणोदरी* २ भिक्षाचरी ३ रसपरित्याग ४ कायाक्लेश ५ प्रतिसंलेषना ६ प्रायश्चित्त ७ विनय ८ वेयावच्च ६ सिज्झाय १० ध्यान ११ विउसग्ग * १२

४ बंध च्यार प्रकारे:—

प्रकृतिबंध १ स्थितिबंध २ अनुभागबन्ध ३ प्रदेशबन्ध ४

४ मोक्ष च्यार प्रकारे:—

ज्ञान १ दर्शण २ चारित्र ३ तप ४

१५ पंदरमें बोले आत्मा आठ:—

---

* असरण=उपवासादिक।

* उणोदरी=कमखानां।

* विउसग्ग=निवर्तवो।

द्रव्य आत्मा १ कषाय आत्मा २ योग आत्मा ३ उपयोग आत्मा ४ ज्ञान आत्मा ५ दर्शण आत्मा ६ चारित्र आत्मा ७ वीर्य आत्मा ८

१६ सोलमें बोले दंडक चोवीस २४ :—

१ सातनारकीयांको एक दंडक

१० दशदंडक भवनपतिका :—

असुर कुमार १ नाग कुमार २ सोवन कुमार २ विद्युत कुमार ४ अग्नि कुमार ५ दीपकुमार ६ उदधि कुमार ७ दिसा कुमार ८ वायु कुमार ९ स्तनित कुमार १०

५ पांचथावरका पंच दंडक :—

पृथ्वीकाय १ अप्पकाय २ तेउकाय ३ वायुकाय ४ वनस्पतिकाय ५

१ बेइन्द्री को सतरमों

१ तेइन्द्री को अठारमों

१ चौइन्द्रीको उगणीसमो

१ तिर्यञ्च पंचेंद्री को वीसमों

१ मनुष्य पंचेंद्री को इकवीसमों

१ वानव्यंतर देवतांको वावीसमों

१ ज्योतषी देवतांको तेवीसमों

१ वैमांनिक देवतांको चौवीसमो

१७ सतरवें बोले लेश्या छः ६ :—

कृष्ण लेश्या १ नील लेश्या २ कापोत लेश्या ३ तेजुलेश्या ४ पद्म लेश्या ५ शुक्ल लेश्या ६

१८ अठारमें बोले दृष्टि ३ तीन :—

सम्यक् दृष्टि १ मित्थ्या दृष्टि २ सममिथ्या दृष्टि ३

१९ उगणीसमें बोले ध्यान ४ च्यार :—

आर्तध्यान १ रौद्रध्यान २ धर्मध्यान ३ शुक्लध्यान ४

२० बीसमें बोले षट द्रव्यको जांण पणो

धर्मास्तिकायनें पांचा बोलां ओलखीजे :— द्रव्यथकी एक द्रव्य खेतथी लोक प्रमाणे काल थकी आदि अन्त रहित भावथी अरूपी गुणथकी जीव पुद्गलने हालवा चालवाको साझ, अधर्मास्तिकायने पांचा बोलां ओलखीजे :— द्रव्यथी एक द्रव्य खेत्रथी लोकप्रमाणे काल थकी आदि अन्त रहित भाव थी अरूपी गुणथी थिररहवानों साझ, आकाशास्तिकायनें पांच बोलकरी ओलखीजे :—द्रव्यथी एक द्रव्य खेत्रथी लोक अलोक प्रमाणे कालथी आदि अंत रहित भाव थी अरूपी गुणथी भाजन गुण कालनें पांचा बोलां करी ओलखीजे:—द्रव्यथी

अनन्ता द्रव्य खेत्रथी अढ़ाई द्वीप प्रमाणे कालथी आदि अन्त रहित भावथी अरूपी गुणथी वर्त्तमानगुण पुद्गलास्तिकायनें पांच बोलकरी ओलखीजे:—द्रव्यथी अनन्ता द्रव्य खेत्रथी लोक प्रमाणे कालथी आदि अन्त रहित भावथी रूपी गुणथी गलि* मले, जीवास्तिकायनें पांच बोल करी ओलखीजे:—द्रव्यथी अनन्ता द्रव्य खेत्रथी लोक प्रमाणे कालथी आदि अंत रहित भावथी अरूपी गुणथी चैतन्य गुण।

२१ इकवीसमें बोले राशि २ होय:—

जीवराशि १ अजीवराशि २

२२ बावीसमें बोले श्रावक का १२ बारे व्रत:—

१ पहिला व्रतमें श्रावक स्थावर जीव हणवाको प्रमाण करे और त्रस जीव हालतो चालतो हणवाका सउपयोग त्याग करे।

२ दूजा व्रतमें मोटको झूठ बोलवाका सउपयोग त्याग करे।

३ तीजा व्रतमें श्रावक राजडण्डे लोकभण्डे इसी मोटकी चोरी करवाका त्याग करे।

* गले मले: घटे वधे: अथवा: जुदा एकत्र होय।

४ चौथा व्रतमें श्रावक मर्याद उपरांत मैथुन सेवा त्याग करे।

५ पांचमां व्रतमें श्रावक मर्यादा उपरांत परिग्रह राखवाका त्याग करे।

६ छट्ठा व्रतके विषे श्रावक दशों दिशिमें मर्यादा उपरान्त जावाका त्याग करे।

७ सातवां व्रतके विषे श्रावक उपभोग परिभोग का बोल २६ छाबीस के जिणारी मर्यादा उपरांत त्याग करे तथा पन्दरह कर्मादानको मर्यादा उपरांत त्याग करे।

८ आठमा व्रतके विषे श्रावक मर्यादा उपरांत अनर्थ दण्डका त्याग करे।

९ नवमां व्रतके विषे श्रावक सामायकको मर्याद करे।

१० दशमां व्रतके विषे श्रावक देसावगासी संवरकी मर्याद करे।

११ इग्यारमूं व्रत श्रावक पोसह करे।

१२ बारमूं व्रत श्रावक सुध साधु निर्ग्रंथनें निर्दोष आहार पाणी आदि चउदे प्रकार दान देवे।

२३ तेवीसमें बोले साधुजीका पंच महाव्रत:—

१ पहिला महाव्रतमें साधुजी सर्वथा प्रकारे जीव हिंसा करे नहीं करावे नहीं करतामें भलो जाणे नहीं मनसें वचनसें कायासें ।

२ दूसरा महाव्रतमें साधुजी सर्वथा प्रकार झूठ बोले नहीं बोलावे नहीं बोलतां प्रते भलो जाणे नहीं मनसें वचनसें कायासें ।

३ तीजा महा व्रतमें साधुजी सर्वथा प्रकारे चोरी करे नहीं करावे नहीं करतां प्रते भलोजाणे नहीं मनसें वचनसें कायासें ।

४ चौथा महा व्रतमें साधुजी सर्वथा प्रकारे मैथुन सेवे नहीं सेवावे नही सेवतां प्रते भलोजाणे नहीं मनसें वचनसें कायासें ।

५ पंचमां महा व्रतमें साधुजी सर्वथा प्रकारे परिग्रह राखे नहीं रखावे नहीं राखतां प्रते भलोजाणे नहीं मनसें वचनसें कायासें ।

२४ चौवीसमें बोले भांगा ४९ गुणचास :—

करण ३ तीन जोग ३ तीनसें हुवे ।

करण ३ तीनका नाम—करू' नहीं कराऊं नहीं अनुमोदूं, नहीं जोग ३ तीनका नाम—मनसा, वायसा कायसा ।

आंक ११ इग्यारेको भांगा ६ :—

एक करण एक जोगसें कहणां, करूं नहीं मनसा, करूं नहीं वायसा, करूं नहीं कायसा, कराऊं नहीं मनसा, कराऊं नहीं वायसा, कराऊं नहीं कायसा, अनुमोदूं नहीं मनसा, अनुमोदूं नहीं वायसा, अनुमोदूं नहीं कायसा।

आंक १२ बाराका भांगा ६ :—

एक करण दोय जोगसें, करूं नहीं मनसा वायसा, करूं नहीं मनसा कायसा, करूं नहीं वायसा कायसा, कराऊं नहीं मनसा वायसा, कराऊं नहीं मनसा कायसा, कराऊं नहीं वायसा कायसा, अनुमोदूं नहीं मनसा वायसा, अनुमोदूं नहीं मनसा कायसा, अनुमोदूं नहीं वायसा कायसा।

आंक १३ तेराको भांगा ३ तीन:—

एक करण तीन जोगसें; करूं नहीं मनसा वायसा कायसा, कराऊं नहीं मनसा वायसा कायसा, अनुमोदूं नहीं मनसा वायसा कायसा।

आंक २१ को भांगा ६ :—

दोय करण एक जोगसें, करूं नहीं कराऊं नहीं मनसा, करूं नहीं कराऊं नहीं वायसा करूं नहीं

कराऊं नहीं कायसा, करू' नहीं अनुमोदू' नहीं मनसा, करू' नहीं अनुमोदू' नहीं वायसा, करू' नहीं अनुमोदू' नहीं कायसा, कराऊं नहीं अनुमोदू' नहीं मनसा कराऊं नहीं अनुमोदू' नहीं वायसा, कराऊं नहीं अनुमोदू' नहीं कायसा।

आंक २२ बावीसको भांगा ९ नव :—

दोय करण दोय जोगसें, करू' नहीं कराऊ' नहीं मनसा वायसा, करू' नहीं कराऊं नहीं मनसा काय-सा, करू' नहीं कराऊ' नहीं वायसा कायसा, करू' नहीं अनुमोदू नहीं मनसा वायसा करू' नहीं अनु-मोदू' नहीं मनसा कायसा, करू' नहीं अनुमोदू' नहीं वायसा कायसा, कराऊ' नहीं अनुमोदू' नहीं मनसा वायसा, कराऊ' नहीं अनुमोदू' नहीं मनसा कायसा, कराऊ' नहीं अनुमोदू' नहीं वायसा कायसा।

आंक २३ तेवीसको भांगा ३ तीन :—

दोय करण तीन जोगमें करू' नहीं कराऊ' नहीं मनसा वायसा कायसा, करू' नहीं अनुमोदू' नहीं मनसा वायसा कायसा, कराऊ' नहीं अनुमोदू' नहीं मनसा वायसा कायसा।

आंक ३१ इकतीसको भांगा ३ तीन :—

तीन करणएक जोगमें, करू' नहीं कराऊ' नहीं

अनुमोदूं नहीं मनसा, करूं नहीं कराऊं नहीं अनु-मोदूं नहीं बायसा, कायसा।

आंक ३२ बत्तीसको भांगा ३ तीन :—

तीन करण दोय जोगसें, करूं नहीं कराऊं नहीं अनुमोदूं नहीं मनसा बायसा, करूं नहीं कराऊं नहीं अनुमोदूं नहीं मनसा कायसा, करूं नहीं कराऊं नहीं अनुमोदूं नहीं बायसा कायसा।

आंक ३३ तेतीसको भांगो १ एक :—

तीन करण तीन जोगसें, करूं नहीं कराऊं नहीं अनुमोदूं नहीं मनसा बायसा कायसा।

२५ पचीसमें बोले चारित्र पांच :—

सामायक चारित्र १ छेदोपस्थापनीय चारित्र २ पडिहार विशुद्ध चारित्र ३ सूक्ष्म सांपराय चारित्र ४ यथाख्यात चारित्र ५

॥ इति पच्चीस बोल सम्पूर्णम् ॥

अथ चौरासी लाख योनि ।

७ सात लाख पृथ्वीकाय ७ सातलाख अप्पकाय ७ सात लाख वायुकाय ७ सात लाख तेउकाय १० दसलाख प्रत्येक वनस्पतिकाय १४ चौदे लाख साधारण वनस्पतिकाय २ दोय लाख बेंद्री २ दोय लाख तेंद्री २ दोय लाख चौइंद्री ४ च्यार लाख नारकी ४ च्यार लाख देवता ४ च्यार लाख तिर्यंच पंचेंद्री १४ चौदे लाख मनुषकी जाति एवं च्यार गति चौरासी लाख जीवा योनि सें बारम्बार खमत खामना ।

॥ अथ श्रद्धा उपर सज्झाय ॥

देशी आरसी की ।

देव गुरू धर्म शुद्ध आराध्यां । समकित होवे तंत सारसी ॥ यथा तथ्य दिल मांहि दरसावे । जिम मुख देखे आरसी ॥ श्रद्धा बिन प्राणी पेलो जनम

यूंही हारसी ॥ श्रद्धा ॥ १ ॥ बरस छवमासी तप बहु कीधा । जघन्य पद नवकारसी ॥ सुर सुख भोग रुल्यो चिहुं गतमें । नहीं आयो धर्म बिचारसी ॥ श्रद्धा ॥ २ ॥ संका कांचा दुरगति लेज्यावे । ते नर दूर निवारसी ॥ साची श्रद्धा जे नर धारे । ते नर आतम तारसी ॥ श्रद्धा ॥ ४ ॥ कुगुरु संगत नर भव हारो । दुरगत मांय पधारसी ॥ भव भव मांहि रुले चिहुं गतमे । नहीं हुवे छुटकारसी । श्रद्धा ॥ ५ ॥ पढ़ पढ़ पोथा रह गया थोथा । संस्कृतने फारसी । बिना विचारी खोटी भाषा बोले । ते किम पार उतारसी ॥ श्रद्धा ॥ ६ ॥ शुद्ध साधाने आल देइने । डूब गया काली धारसी ॥ कोई शुद्ध साधारी कीर्ति बोले । ते नर जन्म सुधारसी ॥ श्रद्धा ॥ ७ ॥ शुद्ध साधांरी निन्दा कर कर आतम किम उबारसी ॥ नरकां जावे महा दुःख पावे । परमा धामी मारसी ॥ श्रद्धा ॥ ८ ॥ इम सांभल उत्तम नरनारी । सीख सतगुरु की धारसी ॥ शुद्ध साधांरी कर कर सेवा । आतम कारज सारसी ॥ श्रद्धा ॥ ९ ॥ शुद्ध साधांरी सुधी श्रद्धा लसला नन्दण सारसी ॥ सुधी श्रद्धास्यूं शिवगत जायां । आवागमन निवारसी ॥ श्रद्धा ॥ १० ॥ शुद्ध श्रावकरा व्रतज पालो ।

गत दुःख विडारसी ॥ जन्म मरण जाख मिट
ावे। पावे सुख अपारसी ॥ श्रद्धा ॥ ११ ॥ मत्सर
ाव साधांसुं राखे। वेगोइ पुन्य परवारसी ॥ गुण
भव मांहि निजरा देखो। बिटला हुवे बिकारसी ॥
श्रद्धा ॥ १२ ॥ गुण विना सेवा करे साधांरी। नहीं
सरे गरज लिगारसी ॥ कोइ होंण आचारी आपही
डूवे। तिहां तुज कैम निस्तारसी ॥ श्रद्धा ॥ १३ ॥
सुर सुख सेवे जे नर पावे। तप कर देही गारसी ॥
पंच आश्रव परहरो प्राणी। ममता मनरी मारसी ॥
श्रद्धा ॥ १४ ॥ तिण तिरे ने तिरसी वाला। नहीं
करे पाप लिगारसी ॥ उत्तम वयण धर शिर ऊपर।
ते उतरे भव पारसी ॥ श्रद्धा ॥ १५ ॥ उगणीसे
वीस विद चवदस। मास कातिक सुख कारसी ॥
ग्रहर राजगढ़ दिपमालका जोड़ करी तंत सारसी ॥
श्रद्धा ॥ १६ ॥

---

* तेरापंथ ओलखणां की ढाल *

आप हणें नहीं प्राणकूं, नहीं काहिनें हणावें हो,
हणतानें भलो न चिन्तवे, ऐसी दया पलावे हो
सोही तेरापंथ पावे हो ॥ १ ॥ के तो मूंन ग्रहीर

है, के निर्वद्य गावे हो, सावद्य काम संसारका, तेतो चित्तमें न चावे हो ॥ सो ॥ २ ॥ जाच्यां बिन एक तृणलो, करसूं नांहि उठावे हो, भोगतज्या भामण तणां, मांठी नजर न ल्यावे हो ॥ सो ॥ ३ ॥ रत अने कवडी भणी, नहीं राखें रखावे हो, जे जे उपग्रण जिण कह्या, तिणसूं अधिक न ल्यावे हो ॥ सो ॥ ४ ॥ पंच महाव्रत पालता, नव विध शील पलावे हो, सुमति गुप्त बारह भेदसूं, पूरव कर्म खपावे हो, ॥ सो ॥ ५ ॥ संजम सतरह भेद सूं, रूडीरीत निभावे हो, परिग्रह आयां संग्राममें, सूरा जिस साहमा ध्यावे हो ॥ सो ॥ ६ ॥ अनाचार बावन तजे, गुण सत्तावीस पावे हो, दोष बयांलिस टालके, असणादिक ल्यावे हो ॥ सो ॥ ७ ॥ काज अनागत कार्ये, तिणदिशि नहीं ध्यावे हो, ताक २ तेरापंथी, ताजा घर नहीं जावे हो ॥ सो ॥ ८ ॥ निन्दत छेदत ज्यो कोई, तिणसूं नांही रिसावे हो, कोईकेदातादानको, तिणसूं राग न ल्यावे हो ॥ सो ॥ ९ ॥ कमल कादासें दूर रहै, जिस जगमें नांहि लिपावे हो, यापी थानक छांड नें, बासा दूर दिरावे हो ॥ सो ॥ १० ॥ हिन्सा धर्म उडायन, दया धर्म दिपावे हो, जिहां २ के

जिननी आगन्या, तिणमें धर्म बतावे हो॥ सो
॥ ११ ॥ सूत्तरमें जिन भाषियो, तेहियो दान दि-
रावे हो, दान कुपातरनें दीयां, देता आडा न आवै
हो॥ सो॥ १२॥ वरजणों तो जिहां हो रह्यो
मुनि वहिरण जावे हो, देखत सुगत फकीर कों,
तो पाछाफिर आवे हो,॥ सो॥ १३॥ नव तत्व
निर्णय नित करै, समकित नें सरधावे हो, मुक्ति
नगर मुसकिल घणों, तिणरो मार्ग बतावे हो
॥ सो॥ १४॥ तेरा वचन विमासनें सूत्तर सीख
सीखावे हो, तिण वयणांसूं भर्तमे, भवियण को
चलावे हो॥ सो॥ १५॥ आपे समकित औषधी,
वैदे भोजन पचावे हो, तेरापंथी वैद ज्यों, धर्म भोजन
रूचावे हो॥ सो॥ १६॥ मैल खोट प्रते काढ़वा,
सोनो सोनो तावे हो, ज्यूं तेरापंथी परखीया, हृदय
न्याय ल्यावे हो ॥ सो॥ १७॥ तेरापंथ ओलख्यां
पाछे दूजो दाय न आवे हो, अमृत भोजन जीमियां
कूकस कुणखावे हो ॥ सो ॥ १८॥ कहे कथादि-
वारता, सूत्तर सें मिलावे हो, तुज वचनांसे नहीं
मिलें ताकूं तुरत उडावे हो ॥ सो॥ १९॥ सूत्र
न्यायें पाखंडभणों, भीखनजी ओलखावै हो, तेरापंथ
ते धारियो, दया धर्म बतावें हो ॥ सो॥ २०॥

भीखनजी तेरापंथी, तिणमें ये गुणपावे हो, प्रभू तेरा-पंथरा, भोभो गुण गावे हो ॥ सी ॥ २१ ॥

अथ श्री सोलह सतीनो स्तवन

आदिनाथ आदि जिनवर वंदी, सफल मनोरथ कीजियेए प्रभाते उठि मंगलिक कामे, सोलह सतीना नाम लीजियेए ॥ १ ॥ बालकुमारी जग हितकारी, ब्राह्मी भरतनी बहिनड़ीए ॥ घट घट व्यापक अक्षर रूपे, सोलह सती मांहि जे वडीए ॥ २ ॥ बाहु बल भगिनी सतिय शिरोमणि, सुंदरि नामे ऋषभ सुताए ॥ अंक स्वरूपी त्रिभवन मांहि जेह अनोपम गुण जुताए ॥ ३ ॥ चन्दनवाला बालपणेथी, शीयलवंती शुद्ध श्रावि-काए ॥ उड़दना बाकुला वीर प्रति लाभ्या, केवल लही व्रत भाविकाए ॥ ४ ॥ उग्रसेन धुआ धारिणी नन्दनी, राजेमती नेम वल्लभाए ॥ जोबन वेशे काम नें जीत्यो संयम लेइ देव दुल्लभाए ॥ ५ ॥ पंच भरतारी पांडव नारी, द्रुपद तनया वखाणियेए ॥ एकसो आठे चीर

पूरण शीयल महिमा तस जाणिइए ॥ ६ ॥ दशरथ नृपनी नारी निरुपम, कौशल्या कुल चन्द्रिकाए ॥ शीयल सलुणी राम जनेता, पुन्य तणी प्रनालिकाए । ॥ ७ ॥ कोशंबिक ठामे संतानिक नामे, राज्य करे रंग राजीयोए ॥ तस घर घरणी मृगावती सती, सुर भुवने यश गाजीयाए ॥ ८ ॥ सुलसा साची शीयल न काची, राची नहीं विषया रसेए ॥ मुखडुं जोतां पाप पलाये, नाम लेतां मन उल्लसेए ॥ ९ ॥ राम रघुवंशी तेहनी कामिनी, जनक सुता सीता सतीए ॥ जग सहु जाणे धीज करतां, अनल शीतल थयो शीयलथी ए ॥ १० ॥ काचे तांतणे चालणी बांधी, कूवा थकी जल काढीयुं ए ॥ कलंक उतारवा सतीय सुभद्रा, चंपा बार उघाडीयुं ए ॥११॥ सुर नर वंदित शीयल अखंडित शिवा शिव पद गामनी ए ॥ जेहने नामे निर्मल थइए, बलिहारी तस नामनी ए ॥ १२ ॥ हस्तीनागपुरे पांडु रायनी, कुन्ता नामे कामिनी ए ॥ पांडव माता दसे दसार नी, बहेन पतिव्रता पद्मिनी ए ॥ १३ ॥ शीयलवती नामे शीलव्रत धारिणी, त्रिविधे तेहने वंदीये ए ॥ नाम जपंता पातक जाए, दरशण दुरित निकंदीय ए ॥ १४ ॥ निषधानगरी नलह नरिंदनी, दमयंती तस गेहिनी ए ॥ संकट पड़तां शीलयज राख्युं, त्रिभुवन

कीर्ति जेहनो ए ॥ १५ ॥ अनंग अजिता जग जन पूजिता, पुष्पचुला ने प्रभावती ए ॥ विश्व विख्याता कामित दाता, सोलमी सती पद्मावती ए ॥१६॥ वीरे भाखी शास्त्रे साखी, उदय रतन भाखे मुदा ए ॥ वहाणु वाहतां जे नर भणशे, ते लेशे सुखसंपदा ए ॥१७॥इति॥

जयाचार्य कृत—

श्रीभिखणजी स्वामीके गुणाकी ढाल ।

नन्दण वन भिक्षु गणमे बसोरी। हेजी प्राण जावे तोइ पग म खीसोरी ॥ नन्दण ॥ १ ॥ गण मांहि ज्ञान ध्यान शोभेरी। हेजी दीपक मंदिर मांहे जिसोरी ॥ नन्दण ॥ २ ॥ अवनीतको देशना न दीपेरी। हेजी गणिका तणो शिणगार जिसोरी ॥ नन्दण ॥ ३ ॥ टालोकड़रो भणवो न शोभेरी। हेजी नाक बिना ओतो मुखड़ो जिसोरी ॥ नन्दण ॥ ४ ॥ दुःखदाइ खुद्र जीवा सरीषारी। हेजी नंदक टालोकड़ बमण जिसोरी ॥ नन्दण ॥ ५ ॥ शासण में रङ्ग रत्ता रहोरी। हेजी सुर शिव पद मांहि बास बसारी ॥ नन्दण ॥ ६ ॥ भागबले भिखु गण पायोरी। हेजी रत्न चिंतामण पिण न इसोरी ॥ नन्दण ॥ ७ ॥

गणपति थाप्यां गाढ़ा रहीरी । हेजी समचित गामण मांहि हुलसीरी ॥ नन्दण ॥ ८ ॥ आड डोड चित से स आणोरी । हेजी मोह कर्म रो तज दो न मोरा ॥ नन्दण ॥ ९ ॥ खिल खीलाश्यांरा याद करी री । हेजी अचल रहो पिण मतिरे मुसीरी ॥ नन्दण ॥ १० ॥ वार वार सुं कहिय तुनेरी । हेजी अडिग पणे थेतो गणमे वसीरी ॥ नन्दण ॥ ११ ॥ उगणीसे गुणतीस फागुणरी । हेजी जयजश आणामें सुख विलसोरी ॥ नन्दण ॥ १२ ॥

---:o:---

आचार्य गुण माला ।

❁ कवित ❁

हंस ज्यूं प्रकाश कर मिथ्याध्वांत मेट गणि,
पाषंड कुं छांड़ जिन आणा सिरधारी है।
आज्ञा अणआज्ञा दया दान सहु ओलखाय,
व्रताव्रत सुध नव तत्व सुविचारी है।
सम्यक्त्व समाय जिन शासनको दृढ़ कर,
वांधी मर्याद चिहुं तीर्थ हितकारी है।

पंचम आरेके मांय भव्य जन तारनको,
प्रगट्या उजागर श्री भिक्षुगणी सारी है ॥ १ ॥
ऋस्व वय मांय निज मात पिता छांड़ कर,
भिक्षु गणी पास लियो चरण सुख धामी है।
न्याय नीत निपुण विलोक गणीराज पद,
दियो हद कियो जिन शासनमें नामी है।
मुक्ति वधू लेवा चित्त हूंस दिन रात लगी,
प्रवल प्रतापी दक्ष नाथ शिवगामी है।
गुणको समंद ताय पार गुरु पावे नांय,
ऐसो सुख साज गणी दोपंमाल खामी है ॥२॥

॥ सवैया ॥

शासन वीर जिनन्द तणो,
कर्म्म फंद मिटावण सारंग धारी।
ज्ञान क्रिया उजवाल गणाधिप,
पाषण्ड पुंजकुं पेलणहारी।
वाण सुधा वरषाय भविजन,
बोध पमाय किया व्रतधारी।
लोक उद्धार कियो अधिको,
एहवो गणी राय ऋषि ब्रह्मचारी ॥३॥

श्री जिनराज तणो पट छाजत,

राजत स्वाम उजागर सारो।

उज्वल कीर्त फवे जगमें,

वर प्राज्ञ महा पुन्यवंत उदारो।

धर्म जिसो अवतार भयो,

जन पंकज कुं विकशावनहारो।

प्रात समय उर नाम रटूं,

नित माह्य जीत सदा जयकारो ॥४॥

॥ कवित ॥

विनय विवेक वर विमल विनीत वारु,

पण्डित प्रवीण जाण युगपद दियोजी।

विड़द महेश ज्यूं सुरेश ज्यूं प्रत्यक्ष दीपे,

धर्म जिन आणारूप वज्र कर लियोजी।

कान्ति मदन लपन रतीश ज्यूं अधिक सोहै,

अविचल अंचु मन हर्ष अति हियोजी।

गुणको गम्भीर जाण जीत गणी कृपा कर,

मघवा मुनिन्द्र वेद तीर्थ नाथ कियोजी ॥५॥

सर्व गुण योग्य गणी आखंडल पेख करी,

सरल भद्रीक पुन्यवंत मन भायोजी।

गिरा घन वर्षी जिम ग्रीष्ट भाड़ मराडी प्राय,
भवी मन सांभल आनन्द अति पायोजी ।
सभामें जिनन्द ज्यूं सुरिन्द ज्यूं गणिन्द दीपे,
मानुं उडुगणमें ज्यूं चंद सुख दायोजी ।
कहे मुनि अष्टापद कैसे मैं बनाय कहुं,
माणक ना गुणाकेरो पार नहीं पायोजी ।

॥ सवैया ॥

बाल पणों तज ओक भये,
वर साधु महाव्रत पांडवधारी ।
योग्य भयो दुनियां मुखसे,
कहे नाथ रहो तुम आनन्दकारी ।
सूर्य गती भ्रम रूप अपाट व,
मेट दियो चित्तमें हुंसियारी ।
तेज प्रताप दिप्यो अधिको,
एहवो गणी डाल महा सुखकारी ॥७॥
परवत पाट मुनेश जिनेश,
दिनेश सुरेश नरेश ज्यूं सोहे ।
जेम चकोर निशापति पेखत,
तेम भवी गणी आनन मोहे ।

उत्पतिया बुद्धि लायक सायक,
पेख भवी मन हर्षित होवै ।
शासण शीश चढ़ाय करी,
वर कालू गणेश भवी मन मोवै ॥८॥

श्रीकालूगणीके गुणाकी ढाल ।

❁ कवित ❁

कोइ मारवाड़हुके कोइ मेदपाटहुके, कोइ देश मालव के सुकृत विभागी है । कोइ हरियानके ढूंढारके थलीके कोइ, कच्छ गुजरातहुके धर्म अनुरागी है । श्राविक वो श्राविका लुभाये पद पंकजमे, हर्ष हर्ष आये चित्त स्वाम लिव लागी है । सोहन कहत सबे सूरति निहारे तेरी, कालू गणधारी तूं तो सखर सौभागी है ।

॥ ढाल १ ली ॥

अपने मौलाकी मैं योगन बनूंगी योगन बनूंगी
वैरागन बनूंगी अ० (भैरवी)

स्वाम चरन मेरो शीश धरूंगा, शीश धरूंगा मैं सुक्ति वरूंगा स्वाम० ॥ ए आंकड़ी ॥ आदनाथ जिम

आद करैया, भ्रम हरैया भारी ॥ पाखंड दमन रमन जिन मतमें, भिक्षु भये अवतारी ॥ मैं शीश धरूंगा ॥१॥ जिन आज्ञा सिर धार गणाधिप, सीमा बहु विध बांधी। जन प्रतिबोधी स्वर्ग सिधाया, साठे अनसन साधी ॥२॥ सिद्ध पाट गढ़ घाट थाट कर, गुण मणि माट दयालू। छोगां नन्द चन्द जिम शीतल, भवि पंकज विकसालू ॥ मैं पाय परूंगा तूल नन्दके मैं पाय परूंगा ॥ पाय परूंगा मैं शीश धरूंगा स्वाम चरण ॥३॥ गिरा अपूरब धाराधर सम, बरषावत गनधारी। उन्मूलत बंबूल कुमिथ्या, सिंचत गनबन क्यारी ॥ मैं पाय० ॥ ४ ॥ काप रोप कर कीर्ति तिहारी, फैली जक्त मझारी। जैसे जल बिच तेल बिंदुवो, दुग्ध मध्य जिम वारी ॥ ५ ॥ ग्रहण सूर शशि वेग तेग धर, गमन करत गण-नारी। वश नहिं आवो तब दे दोनूं बैठे हाथ पसारी ॥६॥ इन्द्र कहै ए जगको लछो; लोक कहै इन्द्रानी। संशय हरन कहै ज्ञानी ए, कालू कीरति जानी ॥७॥ जश मामो ए तेरो कीरति, अखी रहो भ्रुवतारी। चिरंजीवो प्रभु कोटि दिवारी, अरजी एह हमारी ॥८॥ शुभ वत्सर शर अभ्र तपासित, सप्तमी उत्सव सेरा। चतुर गढ़में चतुर चंग चित, सोवन हर्ष घणेरा ॥ मैं पाय परूंगा ॥ ९ ॥ इति ॥

॥ ढाल ॥

वाह २ खुब खुली है गोरे तनपर कालो चुन्दड़ी वाह २ सीताके खोलेमें हणुमन्त न्हाखी मुन्दड़ी (एदेशी)

मनड़ो लाग्याहो अन्नदाता आपरे नाम में जी। कृपा कर मुज ने ले चालो शिवपुर धाममे जी ॥ मैंतो अरज करूं शिर नामी। अवतो श्रवण करो तुम स्वामी। ढील न किजे अंतरयामी ॥ ए आंकड़ी ॥ श्रीभिक्षु वसु पाटे ओपताजी। ए तो गणिवर गुणनिधि कालू। निशदिन रस काया प्रतिपालु, दिन उद्धारण परम दयालु ॥ मन १ ॥ जननी छोगां कुखे जनमियाजी। वप्पा मूल शशी सुत निको, वारू कोठारी कुल टीको, शहर सखर छापुरगढ़ तीखो ॥ २ ॥ लघुवय माता साथे संजम लियोजी। उद्यम ज्ञान ध्यान वर कीधो, वारू समय वांच रस लीधो, डालगणि लख गणपद दीधो ॥ म० ३ ॥ वरषत वाणी सघन सुहामणीजी। बहु विध मनवंछित सुखकरणी, पातो पाप पंक पर-हरणी, चित धर सुनत तास दुःख टरणी ॥ ४ ॥ कीर्ति वेली फेली दशों दिशाजी, ग्रहण पुरिन्दर निज वधु रहेली, तो कहे मम मति मे चाल सहेली, तिणां आपां रमस्यां किहुं भेली ॥ ५ ॥ कीर्ति वोली तूंतो भोली पुरंदरी है, मैं तो तुम साथे नहीं पावुं, पहो निश

सुमति संग सुख पावुं, गणपति छांड किहां नहीं जावुं ॥६॥ सुण इन्द्राणी वदन कुमलावणीजी, आवी पतिने एम प्रकाशे तेतो नहीं आवे तुम पासे, इम सुण हरि थयो अधिक उदासे ॥७॥ प्रभुता इन्द्र तणी पर आपरीजी, शीतलता शशिहर सम जानी, कांठ रजत सारद सुखदानी, पाणी विष कमला लहराणी ॥८॥ निशदिन वंछा तुम दरशण तणीजी, लाग रही मुझ तनमन मांयो, दिवस गिणत छिवे दरशन पायो, आजतो हूं बड बखत कहायो ॥ ९ ॥ तुम गुण सिंधु मुझ मति विंदुवोजी । मैं तो पार कदे नहीं पाऊं, पिण निज मनको हूंस पूराऊं, किंचित गुणकरी तोय रिझाऊं ॥ १० ॥ युग मुनि वत्सर सुचि कृष्ण अष्टमीजी । आयो सोहन शरण तिहारी, मस्तक कर धर द्यो रिझवारी, प्रभु अपनो विरुद विचारी ॥११॥

अथ जिन कल्पी साधुकी ढाल लिख्यते ।

जिन कल्पी कष्ट उदेरिने लेवै । परिसाहा सहै सम परिणामोंरे ।। आक्रोश विविध प्रकारना उपजे । तोइ उदेरि न जावै तिण ठामोरे ।। शूरां वीरांरो ओशुद्ध मारग ।। १ ।। मास मास खमण कोइ करै निरन्तर । इतरा कर्म काटे एक छिनमेंरे ।। वचन कुवचन सहै सम भावे । राग द्वेष न आणे मुनि मनमेंरे ।। शू० ।। २ ।। मास सवा नव जीव रह्यो गर्भमेंरे । तो ए दुःख कितरा दिनकारे ।। एम विचार सहै समभावे । शूर मुनि द्रढ मनकारे ।। शू० ।।३।। लाभ अलाभ सहै समभावे । वली जीतव मरण समानोरे ।। निन्दा स्तुति सुख दुःख समचित । समगिणे मान अपमानोरे ।। शू० ।। ४ ।। बाइस तेतीस सागर तांइ । जीव वसियो नरक मझारोरे ।। तो किंचित दुःखस्यूं सुंदलगिरी । एम विमासे अण

गारोरे ॥ शू० ॥ ५ ॥ मेघ सरिषा मोटा मुनिश्वर । कियो पादुप गमण संथारोरे ॥ खोलीमें जीव छतां तन त्याग्यो । एक मास पहली गुण धारोरे ॥ शू० ॥ ६ ॥ सालिभद्र नें धनें सरीषा । ज्यांरो सुख माल तन् ग्रोकारोरे ॥ त्यांपिण मास मास खमण तप कीधा । बले पादुप गमण संथारोरे ॥ शू० ॥७॥ रोग रहित तीर्थंकरनो तन । ते पिण लेवै कष्ट उदिरोरे ॥ तो सहजांही रोगादिक उपना आइ । तो समा परिणामां सहै शूर बीरोरे शू० ॥ ८ ॥ इत्यादिक मुनि रहामों देखी । ते कष्ट पड्यां नहीं कायरे ॥ अल्पकालमें शिव सुख पामें । शूर शिरोमणी साचारे ॥ शू० ॥ ९ ॥ नरकादिक दुःख तिब्र बेदना । जीव सहि अनन्ती बारोरे ॥ तो किंचित बेदना उपना महामुनि । सहै आणी मन हर्ष अपारोरे ॥ शू० ॥१०॥ ए बेदना थी हुवै कर्म निर्जरा ए बेदना थी कटै कर्मोरे ॥ पुन्यरा थाट बंधे शुभ जोगे । बलि हुवे निर्जरा धर्मोरे ॥ शू० ॥ ११ ॥ समचित बेदन सुखरो कारण । ए बेदनथी कटै कर्मोरे ॥ सुर शिवना सुख लहै अनोपम । बले हुवै निर्जरा धर्मोरे ॥ शू० ॥१२॥ सम भावे सह्यां होवे निर्जरा एकांत । असम भावे सह्यां होवे पाप

एकंतोरे ॥ ठाणा अंग चौथे ठाणे श्रीजिन भाख्यो । इम जाणी समचित सहे संतोरे ॥ शू० ॥ १२ ॥

इति सम्पूर्णम् ।

॥ अथ अनाथी मुनिको स्तवन ॥

राय श्रेणिक वाड़ी गया । दीठो मुनि एकंत ॥ रूप देखी अचरज थयो । राय पूछेरे कुण वृतान्त ॥ श्रेणिक राय हूं रे अनाथी निग्रंथ । मैतो लीधोरे साधुजी रो पन्थ ॥ श्रेणिक ॥ १ ॥ कोसम्बी नगरी हुंती । पितामुज प्रवल धन ॥ पुत्र परवार भर पूरस्यूं तिणरो हूं कुंवर रत्तन ॥ श्रेणिक ॥ २ ॥ एक दिवस मुज वेदना उपनी । मो स्यूं खमियन जाय । मात पिता झूख्या घणा । न सक्यारे मुज वेदना वंटाय ॥ श्रेणिक ॥ ३ ॥ पिताजी म्हारे कारणे । खरच्या बहोला दाम ॥ तो पिण वेदना गई नहीं । एहवोरे अथिर संसार ॥ श्रेणिक ॥ ४ ॥ माता पिण म्हारे कारणे । धरती दुःख अथाय । उपावतो किया घणा । पिण म्हारेरे सुख नहीं थाय ॥ श्रेणिक ॥ ५ ॥

बन्धु पिण म्हारे हुंता। एक उदरना भाय॥ औषध तो बहु विध किया। पिण कारी न लागी काय॥ श्रेणिक॥ ६॥ बहिनां पिण म्हारे हुंती। बड़ी छोटी ताय। बहुविध लूण उवारती पिण म्हारेरे सुख नहीं थाय॥ श्रेणिक॥ ७॥ गोरड़ी मन मोरड़ी। गारड़ी अबला बाल। देख वेदना म्हायरी न सकीरे मुझ वेदना बंटाय॥ श्रेणिक॥ ८॥ आंख्यां बहु आंसु पड़े। सिंच रही मुझकाय॥ खाण पाण विभूषा तजी। पिण म्हारेरे समाधी न थाय॥ श्रेणिक॥६॥ प्रेम विलुधो पदमणी। मुझस्यूं अलगी न थाय॥ बहुविध वेदना मैं सही। बनिता रहीरे विललाय॥ श्रेणिक॥ १०॥ बहु राजवैद्य बुलाविया। किया अनेक उपाय॥ चन्दन लेप लगाविया। पिण म्हारेरे समाधी न थाय॥ श्रेणिक॥ ११॥ जगमें कोइ किणरो नहीं। तब मे थयोरे अनाथ॥ वितरागजीरे धर्म बिना। नहीं कोइरे सुगतिरो साथ॥ श्रेणिक॥ १२॥ वेदना जावे मांहरी। तो लेऊं संजम भार॥ इम चिन्तवतां वेदना गइ प्रभातेरे थयो अणगार॥ श्रेणिक॥ १३॥ गुण सुण राजा चिन्तवे। धन २ एह अणगार॥ राय श्रेणिक समकित लीवो। वान्दी आयोरे नगर मझार॥ श्रेणिक॥ १४॥ अनाथी-

जीरा गुणगांवतां ॥ काटे कर्मांरी कोड़ । गुण सुण सुन्दर इम भणे । ज्याने वन्दुरे बेकरजोड़ ॥ श्रं गिक ॥ १५ ॥

श्रावक शोभजी कृत—

श्रीभिक्षूगणिके गुणाकी ढाल ।

मोटो फंद इण जीवरेरे । कनक कामणी होय ॥ उलझ रह्यो निकल सकूं नहीरे । दर्शणरो पड्योरे विछोय ॥ स्वामीजीरा दर्शण किण विध होय ॥ १ ॥ कुटम्ब ऋद्धिस्यूं राचियोरे । अन्तराय सुजोय ॥ मंगलीक दर्शण श्रीपूज्यनारे । सुगत पहुंचावे सोय ॥ स्वा० ॥ २ ॥ संसारनो सुख दुःख भोगव्यांरे । कर्म तणो बंध होय ॥ दर्शण नन्दण वन जिसोरे । कर्म चिन्ता देवे खोय ॥ स्वा० ॥ ३ ॥ दान दया बोध बीजनेरे । हिरदे मे दीज्यो पोय । परदेशां गुण विस्तररे । ज्यूं सोनेमें रत्तन जड़ोय ॥ स्वा० ॥ ४ ॥ चोरी जारी आद खोगण तणोरे । इण भव परभव होय ॥ खरचो पुरब भव तणोरे । श्रीपूज बिना कुण पूरोय ॥ स्वा० ॥ ५ ॥ साचे मोतीज्यूं

धायक श्रीपूज्यनारे। हिरदैं में लीज्यो पोय। ज्ञान सागर आयां बिनारे। जीव मैल किम धोय॥ स्वा०॥ ६॥ सोम दर्शण श्रीपूज्यनारे। हिरदैमे लीज्यो पोय॥ सागर ज्यूं गुण पूजनारे। गागर ज्यूं क्लेस टालीय॥ स्वा०॥ ७॥ गुण बिना दर्शण भेषनारे। कार २ डूबै सोय॥ पूज बिना दर्शण किंरा करुं रे। आप समा नहीं कोय॥ स्वा०॥ ८॥ पाषण्ड जाडो हूंण भरतमें रे। भिक्षणजी दियो रे बिगोय॥ भिनो चीरज्यूं जुवान मरोड़नेरे ज्यूं चरचा में लियारे निचोय॥ स्वा०॥ ९॥ धुवीं भ्रमर घासनोंरे। कस्तुरी संग लिपटोय॥ ज्यूंचित दर्शण मांहिरो। आप डूसो लियोजी मनमोय॥ स्वा०॥ १०॥ मीन कादे में तड़ फोड़ेरे। कद मिलसी मुझ तोय॥ ज्यूं तड़ फड़े तुज आविकारे। कमल जेम कमलोय॥ स्वा०॥ ११॥ कृषणीरो मन मेहथीरे। बादल बरसे सोय। पपईया मोर पुकारता। ज्यूं रहे बाट रह्या सर्व जोय॥ स्वा०॥१२॥ दर्शण श्रीजी दुवारमेरे। सेवक दीपक जोय॥ भाग भलो जद जागसी। शोभो चरणा स्यूं कमल लगोय॥ स्वा०॥ १३॥

आयुष टूटोको सान्धोको नहि रे को ढाल।

आयुष टूटो को सान्धो को नहि रे, तिण कारण मति करो प्रमाद रे। जरा आयांने शरणो को नहिरे, हिंसा टाली ने धर्म सम्भालरे ॥आ०॥१॥ कुटुम्ब कबीलो नारी कारणेरे, मत करो कोई जाड़ा पापरे। वीरतणी परे सब्या भुरसी रे, पूर्वभव घणो सहसी सन्ताप रे ॥ आ० ॥ २॥ धनगडियो लहिनो रह्यो लोक में रे, लागे पोता लग टूं वताय रे। जीभयो नयो आवे उतो बोलनो रे, रही हूंस मनसांरी मन मांयरे ॥आ०॥३॥ ऊंचा चिणाया मन्दिर मालिया रे, दे दे जमींमें ऊंडी नीव रे। इकदिन ऊभा छोड़ी चालसी रे, सुखदुःख सहसी अपनो जीव रे ॥ आ० ॥ ४ ॥ चक्रवर्ती हलधर राणा केशवा रे, इमि बली इन्द्र सुरांरे नाथ रे। उगमिने २ सगला आथस्यां रे, जोयजो कांई अचरज वाली बात रे ॥ आ० ॥ ५ ॥ जुगलियांरे तीन पल्योपमनो आयुषोरे, लाम्बीज्यांरी तीनकोसरी कायरे। कल्पवृक्ष पूरे ज्यांने दशजातनारे, बादल जिम गया बिलाय र ॥ आ० ॥ ६ ॥ भगवन्त चौवीसवां श्रीवर्द्धमानजी रे, शक्रेन्द्र वोल्यो इसड़ी बात रे। स्वामी दोयघड़ी आयुने वधारजोरे, जिमि अष्ट भस्मग्रह टल

जायरे ॥ भा० ॥ ७ ॥ वलता श्रीवीर जिनेन्द्र इमड़ी कहे रे, सुनरे शक्रेन्द्र माहरो वाय रे। तीन काल में बात हुई नहीरे, आयुषो बधारियो नहि जायरे ॥ भा० ॥ ८ ॥ अस्थिर संसार जाणी मुनि तज नीसरयारे, करता मुनि नवकल्पी विहाररे। भारंडपक्षीनी ट्री ज्यांने उपमारे, नधरैमुनि ममता नेह लिगाररे ॥ भा० ॥ ९ ॥ चारित्र पाले रूडी रीति सूं रे, देवे बली अपनो छन्दा रोक रे। तुरत विराजे मुनि मुक्तिमे रे, यश लहे इहलोकने परलाक रे ॥ भा० ॥ १० ॥ शब्द रूप देखिने समता करो रे, मत करो कोइ भणियांरो अभिमानरे। चोथ ऋषिजी कहे शहर जालोर में रे, सूत्र थी मुझ होज्यो निस्तार रे ॥ ११ ॥

अथ मुक्ति जानेकी डिग्री।

❀ दोहा ❀

तीर्थङ्कर महावीरने, कौशल गणधर साज।
कानून प्ररूप्या है दया, सब जीवन हित काज ॥ १ ॥
दान शील तप भावना, असल खुलासा सार।
जिन पुरुषां धारण किया, पहुंचा मुक्ति मंझार ॥ २ ॥

चौदह सहस्र साधु हुए, आर्या छत्तीस हजार।
लाखां श्रावक श्राविका, पाया भव जल पार ॥ ३ ॥

चाल हीर रांझेके ख्याल की।

मेरी अदालत प्रभुजी कीजिये, जिन शासन नायक मुक्ति जागेकी डिग्री दीजिये। (जि० टेक) खुद चेतन मुद्दई बना है, आठों कर्म मुद्दाइला। दावा रास्ता मुक्ति मार्गका, धोखा दे जाय टालाजी। जि० ॥ १ ॥ तप कागद स्टाम्प लिखाया, तलवाना क्षमा विचारी। सिझाय ध्यान मजमून बनाकर, अर्जी आन गुजारीजी। जि० ॥ २ ॥ मैं जाता था मुक्ति मार्गमे, कर्मोंने आय घेरा। धोखा देकर राह भुलाया, लूट लिया सब डेराजी। जि० ॥ ३ ॥ बहुत खराब किया कर्मोंने, चौरासीके मांही। दुःख अनन्ता पाया मैंने, अन्त पार कछु नाहींजी। जि० ॥ ४ ॥ सच्चे मिले वकील कानूनी, पंच महाव्रत धारी। सूत्र देख मसौदा कीन्हा, तब मैं अर्जी डारीजी। जि० ॥ ५ ॥ पांच सुमति तीन गुप्ति ये, आठों गवाह बुलाओ। शील असल है बड़ा चौधरी, उसको पूछ मंगाओ जी। जि० ॥ ६ ॥ अर्जी गुजरी चेतन तेरी, हुआ सफीना जारी। हाजिर आयो जवाब लिखाओ,

लाखो सबूती सारोजी। जि० ॥ ७ ॥ आठों मुद्दाइ-लह हाजिर आये, मोह मुख्तार बुलाये। चार कषाय अरु आठ मदोंको, साथ गवाहीमें लाये जी। जिन शासन नायक झूठा दावा है चेतन जीवका ॥ ८ ॥ हमने नहीं बहकाया इसको, यह मेरे घर आया। कर्जा लेकर हमसे खाया, ऐसा फरेब मचायाजी। जि० ॥ ९ ॥ विषय भोगमें रमिया चेतन, घाटा नफा नहीं जाना। कर्जदार जब लारे लाग्या, तब लाग्या पछताना जी। जि० ॥ १० ॥ हाजिर खड़े गवाह हमारे, पूछिये हाल जु सारा। विना लियां कर्जा चेतनसे, कैसे करे किनाराजी। जि० ॥ ११ ॥ चेतन कहे सतावी मांहीं, सुन शासन सरदार। ईमानदार हैं गवाह हमारे, जाणे सब संसारजी। जि० ॥ १२ ॥ मैं चेतन अनाथ प्रभुजी, कर्म फरेबी भारी। जीव अनन्ते राह चलतको, लूट चौरासीमें डाराजी। जि० ॥ १३ ॥ बड़े बड़े पण्डित इन लूटे, ऐसा दम बतलाया। धर्म कहा अरु पाप कराया, ऐसा कर्ज चढ़ाया जी। जि० ॥ १४ ॥ हिंसा मांहीं धर्म बताया, तपस्या सेती डिगाया। इन्द्रिय सुखमें मग्न करीने, झूठा जाल फैलाया जी। जि० ॥ १५ ॥ ऐसा करो इन्साफ प्रभुजी, अपील होने न पावे। हक्करसी चेतन

को होवे, जन्म मरण मिट जावे जी। जि० ॥ १६ ॥ ज्ञान दर्शन करी मुंसफी, दोनोंको समझाया। चेतन-की डिग्री करदीनी, कर्मोंका कर्ज बतायाजी। जि० ॥ १७ ॥ असल कर्ज जो था कर्मोंका, चेतन सेती दिलाया। शुद्ध संयम जब करी जमानत, आगेका सूद मिटायाजी। जि० ॥ १८ ॥ आश्रव छोड़ संवर-को धारो, तपस्या से चित्त लाओ। जल्दी कर्ज अदाकर चेतन, सीधा मुक्तिको जाओजी। जि० ॥ १९ ॥ शुद्ध संयम जद करी जमानत, चेतन डिग्री पाई। फाल्गुन सुदि दशमी दिनमंगल, संवत् उगणीसै अठाईजी। जि० ॥ २० ॥

करणी हो कीज्यो चित्त निर्मले की ढाल।

भव्य जीवा आदि जिनेश्वर विनऊं, सतगुरु लागूं पाय। भव्य जीवा मन वचन काया वश करो, छाण्डो चार कषाय। भव्य जीवा करणी हो कीज्यो चित्त निर्मले ॥ १ ॥ (आंकड़ी) भव्य जीवा मनुष्य जमारो दोहिलो, सूत्र सुणवो सार। भव्य जीवा साची श्रद्धा दोहिली, उत्तम कुल अवतार। भ० ॥ २ ॥ भव्य

जीवा मोह मिथ्यात्वरी नींदमें सूतो काल अनन्त। भव्य जीवा जन्म मरण युग पूरियो, ज्ञान बिना नवि अन्त। भ० ॥ ३ ॥ भव्य जीवा सिकियो इण संसार-में, ज्यों भड़भूजारो भाड़। भव्य जीवा निग्रन्थ गुरु हेला दिये, अबतो आंख उघाड़। भ० ॥ ४ ॥ भव्य जीवा नरक तणो दुःख दोहिलो, सुणतां थड़हड़ थाय। भव्य जीवा पापकर्म एकठा किया, मार अनन्ती खाय भ० ॥ ५ ॥ भव्य जीवा चन्द्र सूर्यरो दर्शन नहीं, दीसे घोर अन्धार। भव्य जीवा न्हासणने सेरी नहीं, जहां देखे जहां मार। भ० ॥ ६ ॥ भव्य जीवा अन्धो जीमण रातरो, करतां जीव मराय। भव्य जीवा भोभर विष्ठा जेहने, चांपे मूंढा मांय। भ० ॥ ७ ॥ भव्य जीवा परमाधामी देवता, ज्यांरी पन्द्रह जात। भव्य जीवा मार देवे एकण जीवने, करै अनन्ती घात। भ० ॥ ८ ॥ भव्य जीवा अर्थ अनर्थ धर्म कारणे, जल ढोल्यो बिन ज्ञान। भव्य जीवा बाहिर शुचि बहुला किया, माहें मैल अज्ञान। भ० ॥ ९ ॥ भव्य जीवा वैतरणी लोही राधनी, तिणरो तीखो नीर। भव्य जीवा तिणने डुबोवे तेहमें, छिन छिन होय शरीर। भ० ॥ १० ॥ भव्य जीवा ढांढा ज्यों चरतो सदा,

छेदतो, दया न आणो लिगार। भ० ॥ ११ ॥ भवा
जीवा वृक्ष तहां कूड़ सांभली, तिणरे वैसाणे छाय।
भवा जीवा पान पडि तरवारसा टूक टूक होय जाय।
भ० ॥ १२ ॥ भवा जीवा धन्वामे खूंतो रहै, जूती
धररै भार। भवा जीवा लोह तणो रथ जोतरै, धरती
धूप अंगार। भ० ॥ १३ ॥ भवा जीवा परनी छाती
दाहदे, चोख्या वित्त बहुवार। भवा जीवा धन खाधो
कुटुम्बिया, सहै एकलो भार। भ० ॥ १४ ॥ भवा
जीवा हाथ पांव छेदन करै, नाखे अंग मरोर। भवा
जीवा पुकार करै किण आगले, वहां नहीं किणरो
जोर। भ० ॥ १५ ॥ भवा जीवा रङ्गराती मातो
फिरै परनारी प्रसङ्ग। भवा जीवा अग्निवर्णी लोह
पुत्तली, वैठे तिणरै अङ्ग। भ० ॥ १६ ॥ भवा जीवा
पाप कर्म वोहला किया, कर कर मनरो जोग। भवा
जीवा वोलै परमाधामी देवता, किमो हमारो दोष।
भ० ॥ १७ ॥ भवा जीवा घणा जीतवा सुख वंछवा,
सागर पल है मार। भवा जीवा विन भुगत्यां छूटे
नहीं, अर्ज करै वारम्वार। भ० ॥ १८ ॥ भवा जीवा
क्रोध मान माया लोभमे, छकियो वह्यो अन्याय।
भवा जीवा साध श्रावक वल्यो, देतो धर्म अन्तराय।
भ० ॥ १९ ॥ भवा जीवा जीव हणो धर्म जाणियो,

सेव्या कुगुरु कुदेव। भव्य जीवा निग्रन्थ मार्ग नवि ओलख्यो, ताणी कुलरीटेव। भ० ॥ २० ॥ भव्य जीवा कपट करी धन मेलियो, चाड़ी चुगली खाय। भव्य जीवा अभक्ष्य भक्ष्या जीवने हणी, न पाली छः काय। भव्य० ॥ २१ ॥

※ अन्तर ढाल ※

—:o:—

(समझू नर विरला देशी)

कोई लोग मिथ्यात्वी त्यांने नहीं ज्ञान, वले पूरो नहीं विज्ञानरे। समझू नर विरला। (आंकड़ी) ॥ आज दोय तीर्थङ्कररे झगड़ो लागो, तेतो श्रावस्ती नगरीरे वागोरे ॥ स० ॥ १ ॥ ये दोनों माहोमांहीं वादमें बोले, एक एकरा पड़दा खोलेरे। स० ॥ वीर कहे म्हारो चेलो गोशालो, मोसूं मतकर झूठो झकालोरे। स० ॥ २ ॥ गोशालो कहे हूं थारो चेलो नाहीं, तें कूड़ी कथी लोकां मांहीरे। स० ॥ मैं तो साधपणो थां आगे नहीं लीधो, मैंतो गुरु तोने कदेय न कीधोरे। स० ॥ ३ ॥ वीर कहे गोशालो तीर्थङ्कर नाहीं,

तीर्थङ्करना गुणछे मो मांहीरे । स० ॥ गोशालो कहे हूं तीर्थङ्कर शूरो, ओतो काश्यप प्रत्यच कूरोरे । स० ॥ ४ ॥ वीरने सम्मुख कह्यो गोशालो, तूंतो मो पहिलो करसी कालोरे । स० ॥ जव वीर कहे सुणरे गोशालो, करसी तूं मो पहिलो कालोरे । स० ॥ ५ ॥ आप आप तणा मत दोनों थापे, एक एकने माहोमांहीं उत्थापैरे । स० ॥ यांमे कुण साचो कुण मृषावाई, कोई कहे म्हांने तो खवर न कांईरे । स० ॥६॥ यांमें कोई कहे गोशालोजी साचो, यांने किण बिध जाणां काचोरे । स० ॥ यांमे उघाड़ी दीसे करामातो, तुरत कीधी वे साधांरी घातोरे । स० ॥ ७ ॥ इण देखतां वे इणरा वाल्या दोय चेलां, इणसूं पाछा न हुआ हेलारे । स० ॥ इणने खोटो कहतो जव बोलतो सेंठो, पछे अणबोल्यो कांई वैठोरे । स० ॥ ८ ॥ गोशालोजी बोले गुंजार करतो, बीर पाछो बोले सोई डरतोरे । स० ॥ गोशालोजी सिंहतणीवर गूंज्या, वीरना साधु सगला धूज्यारे । स० ॥ ९ ॥ वीररी तो लोकां देखलीधी सिद्धाई, इणमें कला न दीखे कांईरे । स० ॥ जो सिद्धाई होवे तो देखावता यांने, जव ये पण ऊभा रहता क्यांनेरे । स० ॥ १० ॥ ओ तो इण ऊपर चलायने आयो, इण कोठग वागरे

मांयोरे । स० ॥ श्रो शूर पणोतो दोसे दूणा मांई, दूणामें कमी न दीखे कांईरे । स० ॥ ११ ॥ जब पिण लोकांमें हूंतो दूसड़ो अन्धारो, ते बिकलांने नहीं विचारोरे । स० ॥ श्रो गोशालो पाखण्डी प्रत्यक्ष पापी, तिणने दियो तीर्थङ्कर थापीरे । स० ॥ १२ ॥ कोई चतुर विचक्षण था तिणकाले, त्यां खोटो जाण्यो गोशालोरे । स० ॥ श्रो गोशालो कुपात्र मूढ मिथ्या-तो, तिण कीधी साधांरी घातोरे । स० ॥१३॥ क्षमा शूरा अरिहन्त भगवन्त, त्यांरे ज्ञानतणो नहीं अन्तरे । स० ॥ ज्यांरा कोड़ जिह्वा कर नित्य गुण गावे, त्यांरो पार कदे नहीं आवेरे । स० ॥ १४ ॥ यां लक्षणांकर तीर्थङ्कर पिछाणो, तेतो भगवन्त महावीर जाणोरे । स० ॥ ये तो अतिशय गुणोकरी पूरा, यांने कदेय म जाणो कूड़ारे । स० ॥ १५ ॥ कोई तो भगवंतने जिन जाणे, ते तो एकान्त त्यांने बखाणेरे । स० ॥ कोई अज्ञानी गोशालेरी ताणे, ते तो जिनगुण मूल न जाणेरे । स० ॥ १६ ॥ कोई कहे दोनोंही साचा, आपांथी दोनों ही आछारे । स० ॥ आपांने तो यांरै झगड़े में न पड़णो, सगलांने नमस्कार करणोरे । स० ॥ १७ ॥ कोई कहे दोनों ही कूड़ा, ते कर रह्या फेल फितूरारे । स० ॥ आप आप तणो मत बांधन

काजे, तिणसूँ झगड़ा करता नहीं लाजेरे । स० ॥ १८ ॥ ओ तो पेट भरणरो करैछे उपाय, लोकांने घालेछे फन्द मांयरे । स० ॥ इण विध कोई बोले अज्ञानी, ते तो भाषा काढे मनमानीरे । स० ॥१९॥ इसड़ो अन्धारो हूँतो तिणकाले, अशुभ उदय आयो न सम्भालेरे । स० ॥ तीर्थङ्कर थकां हुआ इसडा बेहदा, ते तो अनादि कालरा सेंहदारे । स० ॥ २० ॥ इमि सांभल उत्तम नरनारी, अन्तरङ्ग मांहीं करज्यो बिचारी रे । स० ॥ पक्षपात किणरी मूल नहीं कीजे, साचो मार्ग ओलख लीजेरे । स० ॥ २१ ॥

※ अथ दश दानोंको ढाल ※

❁ दोहा ❁

दशदान भगवन्त भाषिया, सूत्र ठाणांग मांय ।
गुण निपन्न नामछे तेहना, भोलां ने खबर न काय ॥१॥
धर्म अधर्म दो मूलका, प्रसिद्ध लोकमें एह ।
आठां को अर्थ ऊंधो करे, मिश्र धर्म कहे तेह ॥२॥
मिश्र धर्म परूपता, कूड़ो वाद करन्त ।
आठांमें अधर्म कह्यो, सांभलज्यो दृष्टन्त ॥३॥

आम नीमकी रूंखनो, जुदो जुदो विस्तार।
नीम निमोली तेल खल, नीमतणो परिवार ॥ ४ ॥
इमि हिज आठों दाननो, अधर्म तणो परिवार।
धर्म दानमें मिले नहीं, श्रीजिन आज्ञा बाहर ॥५॥
इतरामें समझो नहीं, तो कहूं भिन्न भिन्न भेद।
विवरा सहित बताइयां, मत कोइ करज्यो खेद ॥६॥

❁ ढाल ❁

कृपण दीन अनाथ ए, म्लेच्छादिक त्यांरी जाति ए। रोग शोक ने आर्त्त ध्यान ए, त्यांने देवे अनुकम्पा दान ए ॥ १ ॥ त्यांने देवे मूलादिक जमी कन्द ए, त्यांमें अनन्त जीवांरा बृन्द ए। तिण दिया कहे मिश्र धर्म ए, तिणरे उदय आया मोह कर्म ए ॥ २ ॥ लवण आदिक पृथ्वी काय ए, आपे अग्नि ढोले पानी बाय ए। शस्त्रादिक विविध प्रकार ए, इन दानसूं रुले संसार ए ॥ ३ ॥ बन्धीवानादिकने काज ए, त्यांने कष्ट पड्यां देवे साज ए। थोरी बावरी भील कसाइने ए, सचितादिक द्रव्य खवाइने ए ॥ ४ ॥ छोड़ावा देवें ग्रन्थ ताम ए, संग्रह दान छे तिणरो नाम ए। यह तो संसारनो उपकार ए, अरिहन्तनी आज्ञा बाहर ए ॥ ५ ॥ ग्रह करड़ा लग्या जाण ए, सुणी लागी पनोती आण ए। फिकर घणो मरवातणो ए, फिर

कुटुम्ब तणी जतनां भणी ए ॥ ६ ॥ भयनो घाल्यो देवे आम ए, भय दान छै तिणरो नाम ए। लेवै कुपात्र आय ए, तिणमें मिश्र किहांथी थाय ए ॥ ७ ॥ खर्च करै मुवारै केड़ ए, जीमाड़ै न्यातनै तेड़ ए। तीन वारा दिन अनुमान ए, चौथो कालुणी दान ए ॥ ८ ॥ वर्ष छः मासो श्राद्ध ए, जिम तिम करै कुल मर्याद ए। सूवां पहिलो खर्च करै कोय ए, घणां नै तृप्त करै सोय ए ॥ ९ ॥ आरम्भ कियां नहीं धर्म ए, जीमायां बन्धसी कर्म ए। बुद्धिवन्त करज्यो विचार ए, यांमें संवर निर्जरा नही लिगार ए ॥ १० ॥ घणां री लज्जावश थाय ए, सांकड़े पड्यां देवें ताय ए। देवे सचित्तादिक धन धान्य ए, यह तो पांचमो लज्जा दान ए ॥ ११ ॥ यह तो सावद्य दान साक्षात ए, वली दियो कुपात्र हाथ ए। तिणमें कहै मिश्र धर्म ए, तिणथी निश्चय बंधसी कर्म ए ॥ १२ ॥ मुकलावा पहरावणी मोसाल ए, सगांने जोड़ जोड़ सम्भाल ए। त्यांने द्रव्य देवे यश काम ए, गर्व दान छै तिणरो नाम ए ॥ १३ ॥ कीर्तिया वादी मल्ल ए, रावलिया रामत खल्ल ए। नट भोपा आदि विशेष ए, दान देवे त्यांने अनेक ए ॥ १४ ॥ इण दानथी बन्धे कर्म ए, मूर्ख कहै मिश्र धर्म ए। जेहनो प्रत्यक्ष खोटी वात ए,

खोटी श्रद्धाने मूल मिथ्यात ए ॥ १५ ॥ गणिकादिक सेवे कुशील ए, दान देवे करावे कील ए। यह तो प्रत्यक्ष खोटो काम ए, अधर्म दान छै तिणरो नाम ए ॥ १६ ॥ सूत्र अर्थ सिखाय ए, शुद्ध मार्ग आणे ठाय ए। आपे सम्यक्त्व चारित्र एह ए, धर्म दान छै आठमो तेह ए ॥ १७ ॥ वले मिले सुपात्र आण ए, देवे निर्दूषण द्रव्य जाण ए। यह तो दान मुक्तिनो माग ए, तिण दिया दारिद्र्य जावें भाग ए ॥ १८ ॥ छः काय मारणरा त्याग ए, कोई पचखे आण विराग ए। अभय दान कह्यो जिनराय ए, धर्म दानमें मिलियो आय ए ॥ १९ ॥ सचित्तादिक द्रव्य अनेक ए, उधारा जिमि देवे विशेष ए। पाछो लेवारो मनमें ध्यान ए, नवमो काअन्ति दान ए ॥ २० ॥ लेणायतने देवें एह ए, हांती नेतादिक तेह ए। पाछो लेवणरो एकान्त काम ए, कन्तिति दान छै तिणरो नाम ए ॥ २१ ॥ नवमे दशमे दानरी चाल ए, धुरिया बोरै-वालो ख्याल ए। ज्ञानी माने सावद्य मांय ए, तिणमें मिश्र किहांथी थाय ए ॥ २२ ॥ दश दानरी यह विचार ए, संक्षेप कह्यो विस्तार ए। वीरनी आज्ञामें दान एक ए, आज्ञा बाहिर दान अनेक ए ॥ २३ ॥ असंयति घर आवियो ए, निर्दूषण आहार वेरावियो

ए। तिणने दियां एकन्त पाप ए, भगवतीमें कह्यो जिन पाप ए ॥ २४ ॥ धर्म अधर्म दान दोय ए, पिण मिश्र म जाणो कोय ए। किमि जाणे मिथ्यात्वी जीव ए, मूलमें नहीं सम्यक्त्व नींव ए ॥ २५ ॥ इमि जाणीने करो विचार ए, आठ अधर्म तणो परिहार ए। घणा सूत्रांनी साख ए, श्रीवीर गया छे भाख ए ॥२६॥

॥ चेतावनी ॥

चेत चतुर नर कहै तनैं सतगुरु, किस विधि तू ललचाना है। तन धन यौवन सर्व कुटुम्बो, एक दिवस तज जाना है। चेत० ॥ १ ॥ मोह मायाकी वड़ी भालमें, जिममें तू लोभाना है। काल अहेरी चोट चाकरी, ताक रह्यो नीशाना है। चेत० ॥ २ ॥ काल अनादिरो तूही रे भटक्यो, तो पण अन्त न पाना है। चार दिनांकी देख चान्दनी, जिसमे तू लोभाना है। चेत० ॥ ३ ॥ पूर्व भवरा पुण्य योग थी, नरकी देही पाना है। मास सवा नौ रह्या गर्भमें, ऊन्धे मुख भूलाना है। चेत० ॥ ४ ॥ मल मूतकी अशुचि कोथली, मांहैं सांकड़ दीना है। रुधिर शुक्र-

नो आहार अपवित्र, प्रथम पणे तैं लीना है। चेत० ॥ ५ ॥ ऊंठ क्रोड़री सुई सारकी, ताती कर चोभाना है। तिणसूं अष्ट गुणी वेदना गर्भमें, देख्या दुःख असमाना है। चेत० ॥ ६ ॥ बालपणो थे खेल गंवायो, यौवनमें गर्वाना है। अष्ट प्रहर कीधी मद मस्ती, खोटी लाग लगाना है। चेत० ॥ ७ ॥ रङ्गी चङ्गी राखत देही, टेढ़ी चाल चलाना है। आठ पहर कीधो घर धन्धो, लग रह्या आर्त्तध्याना है। चेत० ॥ ८ ॥ मात पिता सुत बहिन भाणजी, तिरिया सूं दिल चीना है। वे नहीं तेरे तूं नहीं उनका, स्वार्थ लगी संगीना है। चेत० ॥ ९ ॥ अर्थ अनर्थ करी धन मेल्यो, घणांसूं बैर बंधाना है। लक्ष्मी तो तेरे लारे न चलसी, यहांकी यहां रह जाना है। चेत० ॥ १० ॥ ऊंचा ऊंचा महल चिणाया, करै घना कारखाना है। घड़ी एक राखत नहि घरमें, जालत जाय मशाना है। चेत० ॥ ११ ॥ धर्म सेती द्वेष न धरना, परभव सेती डरना है। चित्त आपनो देख मुसाफिर, करनी सेती तरना है। चेत० ॥ १२ ॥ छिन छिनमें तेरी आयु घटत है, अञ्जली जैसे झरना है। क्रोड़ों यत्न करै बहु तेरा, तो पण इक दिन मरना है। चेत० ॥ १३ ॥ साधु सन्तको सुनी न

वाणी, दान पात्र न दीना है। तप जप क्रिया कछु न कीधी, नरभव लाभ न लीना है। चे० ॥ १४ ॥ चक्री केशव राजा राणा, इन्द्र सुरों का इन्दा है। सेठ सेनापति सबही मानव, पडया कालके फन्दा है। चेत० ॥ १५ ॥ यौवन गंवाय बूढ़ा होय बैठा, तो पिण समय न आना है। धर्म रत्न तुझ हाथ न आयो, परभवमें पछताना है। चेत० ॥ १६ ॥

॥ कर्मनी सिज्झाय ॥

देव दानव तीर्थङ्कर गणधर, हरि हर नरवर सबला। कर्म प्रमाणे सुख दुख पास्यां, सबल हुआ महा निबला रे। प्राणी कर्म समो नहीं कोई ॥ १ ॥ (आंकड़ी) आदीश्वरजीने कर्म अटाख्या, वर्ष दिवस रहा भूखा। वीरने बारह वर्ष दुख दीधा, उपना ब्राह्मणी कूखा रे। प्राणी० ॥२॥ बत्तीस सहस्र देशांरो साहिब, चक्री सनतकुमार। सोलह रोग शरीरमें उपना, कर्म किया तनुछार रे। प्राणी० ॥ ३ ॥ साठ सहस्र सुत मास्या एकण दिन, जोधा जवान नर जैसा। सगर हुवो महापुत्र नो दुखियो, कर्मतणा फल ऐसारे। प्राणी० ॥ ४ ॥ कर्म हवाल किया हरि-

चन्दने, बेची सु तारा राणी। बारह वर्ष लग माथे आण्यो, नीच तणे घर पाणी रे। प्राणी० ॥ ५ ॥ दधिवाहन राजानी बेटी, चावी चन्दन बाला। चौपद ज्यों चौहटामें बेची, कर्म तणा ये चाला रे। प्राणी० ॥ ६ ॥ सम्भूम नाम आठवां चक्री, कर्मां सायर नाख्यो। सोलह सहस्र यक्ष ऊभा देखें, पिण किणही नवि राख्यो रे। प्राणी० ॥ ७ ॥ ब्रह्मदत्त नाम बारहवां चक्री, कर्मांकीधो आन्धो। इमि जाणी प्राणी थे कांइं, कर्म कोई मति बान्धो रे। प्राणी० ॥ ८ ॥ छप्पन करोड़ यादव नो साहिब, कृष्ण महाबली जाणी। अटवी मांहीं मुवो एकलड़ो, बिल बिल करतो पाणी रे। प्राणी० ॥ ९ ॥ पाण्डव पांच महा जूझारा, हारी द्रौपदी नारी। बारह वर्ष लग वन रड़वड़िया, भमिया जेम भिखारी रे। प्राणी० ॥ १० ॥ बीस भुजा दश मस्तक हुंता, लक्ष्मण रावण मार्यो। एकलड़े जग सहु नर जीत्यो, ते पिण कर्मां सूं हार्यो रे। प्राणी० ॥ ११ ॥ लक्ष्मण राम महा बलवन्ता, अरु सतवन्ती सीता। कर्म प्रमाणे सुख दुःख पाम्यां, बीतक बहुतसा बीता रे। प्राणी० ॥ १२ ॥ सम्यक्त्व धारी श्रेणिक राजा, बेटे बान्ध्यो मुसका। धर्मी नरने कर्मां धकायो, कर्मां सूं जोर न किसका रे। प्राणी० ॥१३॥

सती शिरोमणि द्रौपदी कहिये, जिन सम अवर न कोई। पांच पुरुषनी हुई ते नारी, पूर्व कर्म कमाई रे। प्राणी० ॥ १४ ॥ आभा नगरी नो जे स्वामी, साचो राजा चन्द। मांई कीधो पखी कूकड़ो, कर्मा नाख्यो ते फन्द रे। प्राणी० ॥१५॥ ईश्वर देव पार्वती नारी, कर्त्ता पुरुष कहावे। अहनिशि महल श्मशानमें वासो, भिक्षा भोजन खावे रे। प्राणी० ॥ १६ ॥ सहस्त्र किरण सूर्य्य परितापी, रात दिवस रहे अटतो। सोलह कला शशिधर जगचावो, दिन २ जाय घटतो रे। प्राणी० ॥ १७ ॥ इमि अनेक खंड्या नर कर्मे, भांज्या ते पिण साजा। ऋषिहर्ष कर जोड़िने विनवे, नमो नमो कर्मे महाराजा रे ॥ प्राणी० ॥ १८ ॥

॥ जीवा तू तो भोलो रे की ढाल ॥

मोह मिथ्यात्वकी नींदमे, जीवा सोयो काल अनन्त। भव भव मांहि तू भटकियो, जीवा ते साम्भल तुसन्त। जीवा तू तो भोलो रे, प्राणी इमि रुलियो संसार। जीवा० ॥ १ ॥ ऐसा कई अनन्त जिन हुआ, जीवा उत्कृष्ट ज्ञान अगाध। इण भवणी लेखो लियो, जीवा कौन बतावे थारी याद। जीवा० ॥ २ ॥ पृथ्वी

पानी अग्निमें, जीवा चौथो वायु काय। एक एक काया मध्ये, जीवा काल असंख्याता जाय। जीवा० ॥ ३ ॥ पांचवीं काया वनस्पती, जीवा साधारण प्रत्येक। साधारणमें तू वस्या, जीवा ते सांभलो सुविवेक। जीवा० ॥ ४ ॥ सूक्ष्म अग्र निगोदमें, जीवा श्रेणी असंख्याती जाण। असङ्गता प्रतर एक श्रेणीमें, जीवा इमि गोला असंख्य प्रमाण। जीवा० ॥ ५ ॥ एक एक गोला मध्ये, जीवा शरीरअसंख्याता जाण। एक एक शरीरमें, जीवा जीव अनन्ता प्रमाण। जीवा० ॥ ६ ॥ तेमांथी अनादि जीवड़ा, जीवा मोक्ष जाव इगचाल। एक शरीर खालो न हुवे, जीवा न हुवे अनन्ते काल। जीवा० ॥ ७० ॥ एक एक अभवी सङ्ग, जीवा भव अनन्ता होय। वली विशेषि जाणिये, जीवा जन्म मरण तूं जोय। जीवा० ॥ ८ ॥ दोय घड़ो काची मध्ये, जीवा पैंसठ सहस्र सौ पांच। बत्तीस अधिका जाणज्यो, जीवा यह कर्मानी खांच। जीवा० ॥ ९ ॥ छेदन भेदन वेदन वेदना, जीवा नरकें सही वारम्वार। तिणसेती निगोदमें, जीवा अनन्त गुणी विचार। जीवा० ॥ १० ॥ एकेन्द्री मांय थी निकल्यो, जीवा इन्द्रिय पाम्यो दोय। तब पुण्याई ताहरी, जीवा ते भी अनन्ती होय। जीवा० ॥ ११ ॥ कृमि तेइन्द्रिय

चौइन्द्रिय जीवमां, जीवा वेवे लाख ये जात। दुःख दीठा संसारमें, जीवा सुणता अचरिज वात। जीवा० ॥ १२ ॥ जलचर थलचर खेचरु, जीवा उरपुर भुजपुर जात। शीत ताप तृषा सही, जीवा दुःख सह्या दिन रात। जीवा० ॥ १३ ॥ भूमि भमन्ता जीवड़ो, जीवा पाम्यो नर भव सार। गर्भावासमें दुःख सह्या, जीवा ते जाणे करतार। जीवा० ॥ १४ ॥ मस्तक तो हेठो हुवे, जीवा ऊपर रहे वेहूं पाय। आंख्यां आड़ी मुष्टि वेहूं, जीवा कृमि रह्या विष्ठा घर मांय। जीवा० ॥ १५ ॥ वाप वीर्य माता रुधिर, जीवा दूसड़ो लियो थे आहार। भूल गयो जन्म्या पछे, जीवा सेवी करे अविचार। जीवा० ॥ १६ ॥ ऊठ करोड़ सुई लाल करे, जीवा चांपे रूं रूं माय। अष्ट गुणी हुवे वेदना, जीवा गर्भावासा रे माय। जीवा० ॥ १७ ॥ जन्मता हुवे करोड़ गुणी, जीवा मरता करोड़ां करोड़। जन्म मरणनी जीवनें, जीवा जाणज्यो मोटो खोड़। जीवा० ॥ १८ ॥ दश धनाय उपनो, जीवा इन्द्रिय हीणी होय। आयुषो थोड़ो हुवे, जीवा धर्म किसो विधि होय। जीवा० ॥ १९ ॥ कदाचित् नरभव पामियो, जीवा उत्तम कुल अवतार। देही निरोगी पायने, जीवा यों ही खोयो जमवार। जीवा० ॥२०॥ ठग फांसीगर चोरटा, जीवा

धीवर कमाई री न्यात। उपजीने न मूश्रो जिसो, जीवा ऐसो न रहो कोई जात। जीवा० ॥ २१ ॥ चौदह हो राजलोकमें, जीवा जन्म मरण री जोड़। खाली बालाग्रमात्र यह, जीवा ऐसो न रही कोई ठौड़। जीवा० ॥ २२ ॥ यहो जीव राजा हुवो, जीवा हस्ती बान्ध्या बार। कबहिक कर्मा वशे, जीवा न मिले अन्न उधार। जीवा० ॥ २३ ॥ इमि संसार भमतो थको, जीवा पाम्यो सम्यक्त्वसार। आदरी ने छिटकाय दियि, जीवा जाय जमारो हार। जीवा० ॥ २४ ॥ खोटा देवज अङ्गिया, जीवा लागो कुगुरु केड़। खोटा धर्मज आदरी, जीवा कीध चउगत फेर। जीवा० ॥ २५ ॥ कबहिक नरकि गयो, जीवा कब हो हुवो तू देव। पुण्य पापना फल थकी, जीवा लागी मिथ्यात्वनी टेव। जीवा० ॥ २६ ॥ ओगाने बले मूंमती, जीवा मेरु जितरो लोध। एक हो सम्यक्त्व विना, जीवा कार्य नहीं हुओ सिद्ध। जीवा० ॥ २७ ॥ चार ज्ञान तणा धणी, जीवा नरक सातवीं जाय। चौदह पूर्वनो भण्यो, जीवा पड़े निगोदने मांय। जीवा० ॥ २८ ॥ भगवन्त नो धर्म पाल्यां पछे, जीवा करणी ने जावे फोक। कदाचित् पड़वाई हुवे, जीवा अर्ध पुद्गल मांहे मोक्ष। जीवा० ॥ २९ ॥ सूक्ष्मने बादर पणे, जीवा मेली वर्गणा सात।

एक पुद्गल प्रावर्तनो, जीवा भोगी घणी छे मात। जीवा० ॥ ३० ॥ अनन्त जीव मुक्ते गया, जीवा टालो पातम दाय। नहीं गया नहीं जावसी, जीवा एक निगोदना मोख। जीवा० ॥ ३१ ॥ पाप आलोई आपणा, जीवा अव्रत नाला रोक। तेथी देवलोक जावसी, जीवा पन्द्रह भव मांहि मोक्ष। जीवा ॥ ३२ ॥ एहवा भाव सुणी करी, जीवा श्रद्धा याणी नाय। ज्यूं आयो तिमहिज गयो, जीवा लख चौरासी मांय। जीवा० ॥ ३३ ॥ कई उत्तम नर चिन्तवे, जीवा जाणे अस्थिर संसार। साचो मार्ग श्रद्धिने, जीवा जाये मुक्ति मंझार। जीवा० ॥३४॥ दान शील तप भावना, जीवा इणासूं राखो प्रेम। क्रोड़ कल्यान छे तेहने, जीवा ऋषि जयमलजी कहे एम। जीवा० ॥ ३५ ॥

॥ यौवन धन पावणाको ढाल ॥

हाड़ चामका बना रे पूतला, भीतर भर्या रे भगड़ारा, ऊपर रङ्ग सुरङ्ग लगाया, कारीगर करतारा। यौवन धन पावणा दिन चारा। ओजी याको गर्व करे सो गंवारा ॥ १ ॥ पशुकी चामका बनत पनैया,

नौबत और नगारा। नरकी तो चाम कछु काम नहीं आवे, जल बल ह्वा जायगा छारा। यौ० ॥ २ ॥ यह संसार सकल विधि झूठो, झूठो सब परिवारा। कहत कबीर सुनो भाई जीवो, प्रभु भजे निस्तारा। यौ० ॥ ३ ॥

॥ उपदेश पच्चीसी ॥

(जुहारा जाटका गढ़ जैपुर बांकारे एदेशी)

चौरासीमें चाक ज्योंरे, करी करी कर्म कठोर। घरटी ज्यों फिरियो घणोरे, पाम्यो दुःख अघोर। सुज्ञानी जीवड़ा करणी भल कीजेरे ॥ १ ॥ काज सरे करणी कियांरे, भाष गया भगवन्त। अल्प दुखांने आदर्यांरे, आगे सुख अनन्त। सु० ॥ २ ॥ सतगुरु सीख माने नहींरे, राखे खोटी रूढ। पुण्य हीनाते बापड़ारे, महा मिथ्यात्वी मूढ। सु० ॥ ३ ॥ पाप करीने प्राणियांरे, नरकां करे निवास। भूंडा फल तहां भोगवेरे, नाखे हिये निःश्वास। सु० ॥ ४ ॥ पाप चितारे पाछलारे, अधर्मी सुर आय। जिमि कीधा कर्म जीवड़ेरे, तिमि भुगतावे ताय। सु० ॥ ५ ॥ रोवे झूरे रांकज्योंरे, अधिका दुःख अनन्त। यम गाढ़ा

वैरी जिसा रे, पीड़ा वहुत करन्त । सु० ॥ ६ ॥ वर्ष दशहजारनी रे, जघन्य आयुषो जाण । उत्कृष्टो सागर तेतीसनो रे. भाष गया जगभाण । सु० ॥ ७ ॥ नीठ नरकांसूं नीसयाा रे, तिर्यञ्च मांहीं तास । भांति भांति दुःख भोगवे रे, सूत्र मांही समास । सु० ॥ ८ ॥ हलका कर्म पड्या हुवे रे, पुण्य तणे प्रभाव । माणस हुवे मोटका रे, मखरा सरल स्वभाव । सु० ॥ ६ ॥ लाड़ा नहीं कर्म जेहने रे, आय मिले अणगार । पांच महाव्रत पालता रे, धीरा महा गुणधार । सु० ॥१०॥ दयावन्त ऋषि देखने रे, लुल लुल लागे पाय । प्रद-क्षिणा देई प्रेमसूं रे, नीचो शीश नमाय । सु० ॥११॥ साधुजी सूत्र साखथी रे, दे रूड़ा उपदेश । काया माया कारमी रे, राखो धर्मरी रेश । सु० ॥ १२ ॥ साधु वचन सुणी हुलसेरे, घटमें आवे ज्ञान । सुख सगला संसारना रे, जाण्या जहर समान । सु० ॥१३॥ वैराग्ये मन वालने रे, साधपणो ले सार । उत्तम कोई श्रादरे रे, विधि सेती व्रतवार । सु० ॥१४॥ करणी कर कर्म काटने रे. पूरा संच्या पुण्य थाट । दया पाली हुवे देवता रे, गहगा सुख गह गाट । सु० ॥ १५ ॥ देवाङ्गना घनो दीपती रे, जपे जय जयकार । पल सागर लगि प्रेमसूं रे, सुख विलसे संसार । सु०

॥ १६ ॥ पुण्यवन्त पामे बलो रे. उत्तम कुल अवतार। घर सम्पत्ति हुवे घणी रे, बहुत बजावे बहार। सु० ॥ १७ ॥ चारित्र लेइ चूंपसूं रे, आठ कर्म करि अन्त। पामे परम गति पांचवीं रे, अविचल सुख अनन्त। सु० ॥ १८ ॥ साधुजी चन्दन सारखा रे, टाले तन मन ताप। निर्भागी वन्दे नही रे, पोते भारी पाप। सु० ॥ १९ ॥ साधुजी नावां सारखा रे, पहुंचावे भव पार। नेड़ा पिण ढूके नहीं रे. निर्भागी नर नार। सु० ॥ २० ॥ भिन्न २ भेद भाषि भलाजी, उपकारी अणगार। निर्बुद्धि समझे नहीं रे, घटमें घोर अन्धार। सु० ॥ २१ ॥ वेश्या सङ्गति वेसतां रे, व्रतरो होय विनाश। शुद्ध समकित विनशे सही रे, पांषण्डियां रे पास। सु० ॥ २२ ॥ एक घड़ी आधी घड़ी रे, साधुनी संगति थाय। चेलायती नामे चोर ज्यों रे, जीव भलो गति जाय। सु० ॥ २३ ॥ संवत् अठारहसे साठमें रे, वदी आश्विन सोमवार। बारस तिथि बीदासरे रे, आखी ढाल उदार। सु० ॥ २४ ॥ उपदेश पच्चीसी ओपती रे, जोड़ी जुगते जाण। ऋषि चन्द्रभान रूडे मने रे, चेतो चतुर सुजाण। सु० ॥ २५ ॥

॥ सुगुरु पच्चीसी ॥

———:०:———

सुगुरु पिछाणो इण आचारे, सम्यक्त्व जेहने
शुद्ध जी । कहणी करणी एकज सरखी, अहनिशि धर्म
विलुब्धजी । सु० ॥ १ ॥ निरतिचार महाव्रत पाले,
टाले सगला दोषजी । चारित्रसूं लयलीन रहे नित्य,
चित्तमें सदा सन्तोषजी । सु० ॥ २ ॥ जीव सहूना
जो छे पीहर, पीड़े नहीं षट काय जी । आप वेदन
पर वेदन सरीखी, न हणे न करे घाय जी । सु० ॥३॥
मोह कर्मने जे वश न पड़े, नीरागी निर्माय जी ।
जयणा करतो हलवे चाले, पूंजी सूंभी पायजी । सु०
॥ ४ ॥ अरहो परहो दृष्टि न देखे, न करे चालतां
बातजी । दूषण रहित सूझतो देखे, तो लिये पाणी
भातजी । सु० ॥ ५ ॥ भूख तृषा पीड्यां दुख पीड़े,
छूटे जो निज प्राणजी । तो पिण अशुद्ध आहार न लेवे,
जिनवर आप प्रमाणजी । सु० ॥ ६ ॥ अरस नीरस
आहार गवेषे, सरस तणी नहि चाहजी । जीमि करतां
जो सरस मिले तो हर्ष नहीं मन मांहजी । सु० ॥७॥
शीत काले शीत लहु सूखे, ऊनाले रवि तापजी ।
विकट परिसह घट अहियासे, नाणे मन सन्तापजी ।
सु० ॥ ८ ॥ मार कूटे परे उपद्रव, कोई कलङ्क दे

भीषजी । कर्म तणा फल जाणी उदी रे, पिण नाणे मन रील जी । सु० ॥ ९ ॥ मन वच काया जे नवि डगडे, छाण्डे पांच प्रमाद जी । पांच प्रमाद संसार बधारे, जाणे ते निःस्वाद जी । सु० ॥ १० ॥ सरल स्वभाव आवे मन रूड़े, न करे वाद विवाद जी । चार कषाय कर्मना कारण, वर्जे मद उन्माद जी । सु० ॥ ११ ॥ पाप स्थान अठारह वर्जे, न करे तासु प्रसङ्ग जी । विकथा मुख थी चार निवारे, सुमति गुप्ति सुरङ्ग जी । सु० ॥ १२ ॥ अङ्ग उपाङ्ग सिद्धान्त बखाणे, दे सूधो उपदेश जी । सूधे मार्गे चाले चलावे, पंचाचार विशेष जी । सु० ॥ १३ ॥ दश विध यति धर्म जिन भाष्यो, तेहना धारणहारजी । धर्म थकीजे किमि ही न चूके, जो हुए क्रोड़ प्रकार जी । सु० ॥१४॥ जीव-तणी हिंसा जे न करे, न वदे मृषावाद जी । तृणमात्र अण दीधो न लेवे, सेवे नहीं अब्रह्मजी । सु० ॥ १५ ॥ नव विधि परिग्रह मूल न राखे, निशि भोजन परिहार जी । क्रोध मान मायाने ममता, न करे लोभ लिगार जी । सु० ॥ १६ ॥ ज्योतिष आगम निमित्त न भाषे, न करावे आरम्भ जी । औषध न करे नाड़ी न जोवे, सदा रहे निरारम्भजी । सु० ॥१७॥ डाकिनी शाकिनी भूतणी न काढ़े, न करे हलवो हाथ जी । मन्त्र यन्त्रनी

राखड़ी करी ते, नवि आपे परमार्थ जी । सु० ॥ १८ ॥ विचरे ग्राम नगर पुर सगले, न रहे एकण ठाम जी । चौमासो ऊपर चौमासो, न करे एकण ग्राम जी । सु० ॥ १९ ॥ चाकर नौकर पास नवि राखे, न करावे कोई काज जी । न्हावण धोवण वेश बणावण, नहीं करे शरीर नो साज जी । सु० ॥ २० ॥ व्याज वट्टानो नाम न जाणे, न करे वणिज व्यापार जी । धर्म हाट मांगडी ने बैठा, वणिजे पर उपकार जी । सु० ॥२१॥ ते गुरु तरे औरांने तारे, सागर मां जिमि जहाज जी । काष्ठ प्रसङ्गे लोह तरे जिमि, तिमि सुगुरु सङ्गति पाज जी । सु० ॥ २२ ॥ सुगुरु प्रकाशक लोचन सरिखा, ज्ञान तणा दातार जी । सुगुरु दीपक घट अन्तर केरा, दूर करे अन्धकार जी । सु० ॥ २३ ॥ सुगुरु अमृत सरीखा शीतल, देय अमर गति वासजी । सुगुरु तणी सेवा नित्य करतां, छूटे कर्मनो पाशजी । सु० ॥ २४ ॥ सुगुरु पचासी श्रवणे सुणीने, करज्यो सुगुरु प्रसङ्ग जी । कहे जिन हर्ष सुगुरु सुपसाये, ज्ञान हर्ष उछरङ्गजी । सु० ॥ २५ ॥

॥ कुगुरु पच्चीसी ॥

श्रीजिनवाणी हिये धरो, कुगुरु तणी संगति परिहरो। लोह खीलारां साथी जेह, कुगुरु तणा छे लच्छन एह ॥१॥ कालो सांप कुगुरु स्यूं भलो, एक बार करे मासलो। कुगुरु भवोभव दुःख देह। कुगुरु ॥ २ ॥ पृथ्वी पाणी अग्नि ने वाय, वनस्पती छठो त्रस काय। एह तणी रक्षा न करेह। कुगुरु० ॥ ३ ॥ पापतणा थानक अठार, तेतो सेवै बारम्बार। संयमत्तार उड़ावे खेह। कुगुरु० ॥ ४ ॥ धुरसूं पञ्च महाव्रत धारें, सर्व सावद्य त्याग उच्चारें। चारित्र भांजे रंजे देह। कुगुरु० ॥ ५ ॥ परिग्रह सेती राखे मोह, धनने काजे करे पर द्रोह। प्रभु वचसूं बीहे नवि जेह। कुगुरु० ॥ ६ ॥ असनादिक चारों आहार, राते पिण न करे परिहार। दोष दुर्गतिनो विधारो देह। कुगुरु० ॥७॥ पाणी काचो ने वावरे, आपतणो दूषण ढ़ावरे। चारित्र भंज्या रंजन देह। कुगुरु० ॥ ८ ॥ मोटी पदवी बाजे घणी, लोकां मांहे प्रभुता घणी। तेपण करणी खोटी करेह। कुगुरु० ॥ ९ ॥ पावा दिवरावे वीटणा, गुण हीना ने अवगुण घणा। गृहवासीनी परे

वसेह । कुगुरु० ॥ १० ॥ खीर शक्कर घरमाग बड़ी, गर्व हिये विभूषा करी । खाद्य मिलन रा सांसो धरेह । कुगुरु० ॥ ११ ॥ गृहस्थ जिसि करे व्यापार, वेचे वस्त्र पुस्तक भार । व्याज बटे धन उपजावेह । कुगुरु० ॥ १२ ॥ आठ पहरने साठ घड़ी, पांच प्रमाद सूं प्रीतड़ी । क्रिया पड़िकमणो न करेह । कुगुरु० ॥ १३ ॥ वैठिया पोठिया चलावे भार, गाड़ी वैठी करे विहार । ईर्या सुमति किसी पालेह । कुगुरु० ॥ १४ ॥ हंसे गुस्से वोले फारसी, न्हाय धोय जोवै आरसी । रङ्गा चङ्गा रहे निःसन्देह । कुगुरु० ॥१५॥ अभक्ष्य आहार ने आड़ा पड़े, सीख दिया तो उलटा लड़े । आपानन्द न पचखाणेह । कुगुरु० ॥ १६ ॥ सेवे देवी दुर्गा मात, वरणी करे वेसे नय रात । दुष्ट जाप दिल मांह करेह । कुगुरु० ॥ १७ ॥ रात दिवस औषध आरम्भ, गोली चूर्ण करे मन रङ्ग । नाड़ी तिगंछा वैद्यका करेह । कुगुरु० ॥१८॥ विषय किलोल काथा वाहे चरित्र, वांचे कान करे अपवित्र । शुद्ध कथा न समझावेह । कुगुरु० ॥ १९ ॥ पोले न चाले सूधे राहा, औरां शुद्ध चलावे काहा । कामणा चोराहा देणेह । कुगुरु० ॥ २० ॥ गश्त माल कर पैसा लीए, कामणा मोह वश करदीए । पाप दुष्ट कर पेट भरेह ।

कुगुरु० ॥२१॥ सुखसे कहें अमेकां यती, पिण आचार न जाने एक रती। अणाचारी चाल चालेह। कुगुरु० ॥ २२ ॥ पापी श्रमण पीड़ पाप भरेह, शुद्ध साधांरी निन्दा करेह। नरका दुःखांसूं नहीं डरेह। कुगुरु० ॥ २३ ॥ कुगुरु पचीसी जाणो खरी, कहे जिन हर्ष कुमति परिहरी। सुगुरु सेवे भव जल तिरेह। कुगुरु० ॥ २४ ॥

---

* स्त्री चरित्र की ढाल *

ढाल ६ ठो नणदल हे नणदल एदेशी।

सतीयां तो सीता सारषी ज्यांरा जिनवर किया बखांण भवियण कुसती कपिला सारषी त्यांरि कर लीज्यो पिछांण भवियण चरित्र सुणों नारी तणां ॥१॥ छोड़ो संसार नों फंद। भ०। सीलवंता नर सांभले ते पांमैं परम आणंद। भ० च० ॥ २ ॥ कुसती मैं ओगण घणां। भाष्या श्री जिनराय। भ०। थोड़ासा परगट करूं ते सुणज्यो चितलाय। भ० च० ॥ ३ ॥ नारि कुड़ कपट निं कोथली ओगणां नों भंडार। भ०। कलह करवा नैं सांतरि भेद पड़ावणहार। भ० च०

॥ ४ ॥ देहली चढ़तो डिगपडे चढ़ ज्यावे डुंगर असमान । भ० । घरमें बैठो डर करै राते जाय मसांण । भ० च० ॥ ५ ॥ देख बिलाड़ ओदकै सिंघनैं सन्मुख जाय । भ० । सांप उसीसे दे सोवे ऊंदर स्युं भीडकाय । भ० च० ॥ ६ ॥ कोयल मोर तणी परै बोलै मीठा बोल । भ० । भीतर कडवि कुटकसि बाहिर करै किलोल । भ० च० ॥ ७ ॥ खीण रोवै खिण मैं हंसे खिण मुख पाडे बूंब । भ० । खिण राचे विरचै खिणें खिण दाता खिण सूंम । भ० च० ॥ ८ ॥ धर्म करतां धुंकल करै ऐसो नार अलाम । भ० । बन्दर ज्युं नचावे निज कंथ नैं जाणैक असल गुलाम । भ० च० ॥ ९ ॥ नारि नैं काजल कोटडी ए वेहुं एकज रङ्ग । भ० । काजल नर कालो करै नारि करै सिल भंग । भ० च० ॥१०॥ नारी नैं वन वेलड़ी दोनूं एक स्वभाव । भ० । कंटक रुंख कुसील नर तिण स्युं वेहुं लग ज्यात । भ० च० ॥ ११ ॥ नाम छै अबला नार नों पण सबलि छै इण संसार । भ० । सबला सुर नर तेहनैं नीमला कर दीया नार । भ० च० ॥ १२ ॥ सुर नर किन्नर देवता त्यानैं पिण बस कीया नार । भ० । नाख्या नरक निगोदमैं त्यांरि तो बस्व नैं बार । भ० च० ॥ १३॥ नैण बैण नारी तणां वचनज तीखा मेल ।

भ० । अंग तीखो तरवार ज्युं ईण माखो सकल संकेल । भ० च० ॥१४॥ बिरची तो बाघण ज्युं बुरी स्त्री अनरथ मूल । भ० । पाप करी पोते भरै अंग उपजावै शूल । भ० च० ॥१५॥ मोर तणीं पर नेहनां बोलै मीठा बोल । भ० । साप सैं पूछा ईगलै पाडलेवै नर भोल । भ० च० ॥ १६ ॥ पुरुष पोते कपडा जोसी नरगुण नंविं भांत । भ० । नारी कातर बस पड्यां काटै है दिन रात । भ० च० ॥१७॥ बाघण बुरी बन मांयली बिलगी पकडि खाय । भ० । नारी बाघण बस पड्यां नर न्हासो किहां जाय । भ० च० ॥१८॥ फाटां कांनांरी जोगणीं तिन लोकनैं खाय । भ० । जीवंती चुणै कालजो मुवां नर्क ले जाय । भ० च० ॥ १९ ॥ नारी लखणां नाहेरि करै बचनरी चोट । भ० । केइक सन्त जिन उवस्या लिधी दया नीं ओट । भ० च० ॥ २० ॥ तीया मदन तलावडी डुब्यो बहु संसार । भ० । केइक उत्तम नर उवस्या सत गुर बचन सम्भाल । भ० च० ॥२१॥ जिम जलोक जल मांयेलि तीम नारी पिण जांण । भ० । वालागी लोही पियै । नारी पियै निज प्रान । भ० च० ॥२२॥ राता कपडा पहरै नैं काठा बांध्या माथारा केस । भ० । हांतां मैंम्बो लगाय नैं ईण ठगोरि ठगोयो सारो देस । भ०

च० ॥ २३ ॥ लोक कहै ग्रहै वारमों लागां हणौं प्राण । भ० । नाखै नरक निगोदमैं नारी नव ग्रेह जांण । भ० च० ॥ २४ ॥ इण संसार असार मैं तिण मैं माटि गाल । भ० । सांगस छोडै मारी जै गावै टोडर माल । भ० च० ॥ २५ ॥ नगर उजीणीं नौं राजीयो हरचंद नामैं राय । भ० । सोमला उपर मोहियो नाख्यो नंदिये वुहाय । भ० च० ॥ २६ ॥ जहर दियो निज कंथ नैं नाम जसौदा नार । भ० । कंथ मार काष्टे चढ़ी गई नरक मंझार । भ० च० ॥२७॥ ब्रह्म-दत्त चक्रव्रत वारमों तेहनौं चुलणीं मात । भ० । विपेरी वाह्नि थकी करवा मांडि पुत्र नौं घात । भ० च० ॥ २८ ॥ परदेसी राजा तणीं सुरीकंथा नार । भ० । स्वार्थ न पुगो जांण नैं मार्‌यो निज भरतार । भ० च० ॥ २९ ॥ वरस वारै वन सेविया लिछमण नैं श्रीराम । भ० । दसरथ दुख सह्या घणां तेतो कैके-इरा काम । भ० च० ॥ ३० ॥ कुणांक वहल कुमारकै साच्यो माहा संग्राम । भ० । हार हाथी नैं कारैणैं तेतो पद्मावति रा काम । भ० च० ॥ ३१ ॥ धारणीं नाथ धुजावियो असीनारि अजोग । भ० । मुंज राजा तणो क्षय कियो ते पिण नारी तणों संजोग । भ० च० ॥३२॥ माहासतक श्रावक वरे हुई रेवंती नार ।

भ० । भीष्ट करवा भरतार नैं आई पोसा संभार । भ० च० ॥ ३३ ॥ देवदत्त सुनार नां पुत्रनी हुई कुपातर नार । भ० । देव छलो नैं धीज उतरी सुसरा नैं झुठो पाड । भ० च० ॥ ३४ ॥ कपिला पटराणीं राजातणीं तिण कीधी माह्नतस्युं प्रीत । भ० । तिण मालदे नाहक मरावीयो हुई बहुत फजीत । भ० च० ॥३५॥ अभिया राणीं नैं कपिला ब्राह्मणी सेठनें दीया उपसर्ग अनेक । भ० । सेठ सुदर्शण चलो योंहीं मन में आंण बिबेक । भ० च० ॥ ३६ ॥ ओगुण कह्या कुसत्यां तणां कहतांनें आवे पार । भ० । सतीयां रा गुण छै अति घणां त्यांरो तो बहुत बिस्तार । भ० च० ॥ ३७ ॥ पठै कपिलारै ओगणा तणीं चाल्यो छै द्रधकार । भ० । सेठनै अंगस्युं भीडीयो पिण सेठन चलीयो लिगार । भ० च० ॥ ३८ ॥

॥ दुहा ॥

नर नारी दोनुं सरिखा मिल्यां अधिको बधे सनेह । सुगणांनैं नीगुंणी मीलै तो तटके तुटै नेह ॥ १ ॥ सेठ डरपै सर्व नारस्युं तिणनैं उपसर्ग उपज्यो जांण । एक मासमैं च्यार पोसा करै राते जाय मसांण ॥ २ ॥ कर्म धर्म संभालतां सुखे गमावे काल । किण विध उपसर्ग उपजै किण विध आवै आल ॥ ३ ॥ धाती बाह्मन

राजातणीं पटरांणी अभिया नार । रूपे रंभा सारणी सुख भोगवे संसार ॥ ४ ॥ तिण चंपा नगरी बाहिरे ईसांण कुंणरे मांय । बाग एक छे रलियां मणों छे उत्तम सुखदाय ॥ ५ ॥ ते फल्यो फुल्यो रहै सदा पिण वसंतरुत विशेष । तिहां नरनारी अनेक क्रिड़ा करे सुख पामें नीजरां देख ॥ ६ ॥ अभिया रांणीं तिणसमें आई वसंतरुत जांण । बाग सुंण्यो फुल्यो फल्यो जब बोले एहवी वांण ॥ ७ ॥

सुदर्शण सेठ के बखान की ॥ ढाल ३२ वीं ॥

(आज आणंद मन उपैनों सुण प्राणीरे एदेशी)

मनरो मनोरथ पूरो थयो । सुंणप्रांणीरे । मन-चिंताविया सरीया काज आज सुंण प्रांणीरे । जगमें जस फेल्यो घणों । सु० । म्हांरी रही सीलस्युं लाज । आ० ॥ १ ॥ संजम पाखे तूं जीवड़ा । सु० । पामें नहीं भव पार । आ० । जनम मरण करतो थको । सु० । भमीयों ईण संसार । आ० ॥ २ ॥ कबु एक नरक निगोद में । सु० । कबु एक तिर्यंच मंझार । आ० । कबु एक सुर नर देवता । सु० । ईण रीतै भमीयों संसार । आ० ॥३॥ कबु एक ईष्ट संजोगीयो ।

सु० । कबु एक ईष्ट वियोग । आ० । कबु एक भोग न भोगव्या । सु० । कबु एक अति घणों सोग । आ० ॥ ४ ॥ ईण रीते भमतो थको । सु० । मिट्यो नहीं भ्रम जाल । आ० । अबै अपूरव पांमीयों । सु० । श्री जिनधर्म संभाल । आ० ॥५॥ धर्म तणां जैतन करो । सु० । अब ईसो अवसर पाय । आ० । धर्म विहुंणां मानवीं । सु० । गया जमारो गमाय । आ० ॥ ६ ॥ अब पंच महाव्रत आदरुं । सु० । छोड़ीनें परिग्रह-वास । आ० । बारे भेदे तपतपुं । सु० । ज्युं पामुं सिवपुर बास । आ० ॥ ७ ॥ ईम भावतां भावनां । सु० । आगयो अतिही वैराग । आ० । जो ईहां साध पधारसी । सु० । तो करस्युं संसार नां त्याग । आ० ॥ ८ ॥ ईम भावनां भावतां । सु० । साधु बाट जोवै तांह । आ० । तो संजम लेस्युं निश्चै करी । सु० । ईणमें शंका नहीं तिलकाय । आ० ॥ ६ ॥ सुध परणांमां भावै भावनां । सु० । दुबध्या दुरेटाल । आ० । साचै मन भावै भावनां । सु० । सफल वीतै ते काल । आ० ॥ १० ॥

❀ दोहा ❀

तिण कालेनैं तिण समैं चोनांणीं अणगार । धर्मघोष थिवर समोसर्या । साथे साधांरो बहु परिवार

नहीं वंदिया दान देवानैं सुंवजरे। ते भिक्षा मांगत घर २ फिरै भटकै भांड जिम डुंमजरे॥ अ०॥ १३॥ साधुनैं वांद्या भल भावस्युं दीधो अढ़लक दांनजरे। तेतो भरथे सर जांणज्यो ज्यांरो पर सिधलोकमें नांमव रे॥ अ०॥ १४॥ साधांनैं बांद्यां थकां कटै करमांरा फंदजरे। नीच गोतरो चय करै ऊंच गोतरो वंदजरे॥ अ०॥ १५॥ चोथी गत देवता तणीं भाषी श्रीमुनि-रायजरे। सुख तिहां नित भोगवे कुंण कर्म उपजे जायजरे॥ अ०॥ १६॥ बैराग संजम पालै सदा उर श्रावकरो धर्मजरे ते स्वर्ग लोकमें उपजै बांधिनैं सुभ कर्मजरे॥ अ०॥ १७॥ उर अकांम निरजरा करी अत्यांन तप करै जांणजरे। ते सील पालै लज्या करी ते उपजै वेमांणिकजरे॥ अ०॥ १८॥ पांचमी गत सिधां तणीं अनंत सुखांरी खांणजरे। कीण करणी कर उपजै सिद्ध गत मांहै आंणजरे॥ अ०॥ १९॥ पंच महाव्रत आदरैं सहै परिसाबीस दोयजरे। बारै भेदे तप तपै तेहनैं सिद्धगत होयजरे॥ अ०॥ २०॥ देव अरिहंत नैं ओलख्या ओलख्या गुरु निग्रंथजरे। धर्म दयामय आदरै एहीज मुक्तरो पंथजरे॥ अ० ॥ २१॥ तीन कालनां सुखदेव तांतणां भेला कीजै कुलजरे। तेहनैं अनंति वर्ग वधारियें नहीं मि

सुखांरे तुलजरे ॥ अ० ॥ २२ ॥ ते पिण सुख छै सासता नहीं आवै तेहनों पारजरे। संसारनां सुख छै कारमां जातां न लगै बारजरे ॥ अ० ॥ २३ ॥ ए संसारनां सुख थिर नहीं जैसी आभा रिबायजरे। बीण संतां बार लागै नहीं जैसो कायर बांहजरे ॥ आ० ॥ २४ ॥ तन धन जोबन कारमों जैसो कसुंबल रंगजरे। टीन सात पांचका पेखणां पछै होय जाय विरङ्गजरे ॥ अ० ॥ २५ ॥ गर्भ जनम मरण तणां भाष्या श्रीजिनरायजरे। ते धर्म कीया थी छुटीयै धर्म दयामय थायजरे ॥ अ० ॥ २६ ॥ इम जांणी धर्म आदरो ढील न कीजे तांमजरे। सो खीण जावै सो आवै नहीं ते सुण राखो चित ठामजरे ॥ अ० ॥२७॥

॥ दुहा ॥

धर्म कथा सुण परखदा हिवडै हरषित थाय।
सगत सारु व्रत आदरी आया जीण दिस जाय ॥१॥
सेठ सुदर्शन तिण समैं बोल्यो जोड़ी हाथ।
पाछलै भवहुं कुंणहुंतो ते कृपा कर कहो स्वामीनाथ ॥२॥
धर्मघोष साधु तीण अवसरै सेठ सुदर्शन नैं कहै आंम।
पाछल भव कहुंछुं थांहरो ते सुण राखे चित ठांम ॥३॥

——:०:——

सुदर्शण सेठ के बखान की ॥ ढाल ३६ वीं ॥

(आछेलाल एदेशी)

इम सुणनै मनोरमा नार ॥ छुटी आंसुडारी धार ॥ आछेलाल ॥ मुर्च्छा गत आय धरणीं ढलीजी ॥ १ ॥ वले कुटंब सहु परिवार ॥ रोवै बांगां पाड ॥ आ० ॥ विलखाथई नैं विल २ करैजी ॥२॥ ओ सेठ छो सगलांरैं आधार ॥ तिणस्युं रुदन करां वार वार ॥ आ० ॥ सुख मांहैं दुःख उपनोंजी ॥३॥ रुदन करतां देखि तिण वार ॥ सेठ बोल्यो तिणवार ॥ आ० ॥ किसो भरोसो इण कालरोजी ॥४॥ थे सज्जन न्यातीला लोग ॥ नहीं कोई राखवा जोग ॥ आ० ॥ परभव जातां जीवनैंजी ॥५॥ काचो सग पण एह ॥ तिणस्युं किसोरे स्नेह ॥ आ० ॥ ओ मेलो मिल्यो छे सर्व कारमोंजी ॥६॥ एवासो वसीयो आय ते नहीं नेठाउ थाय ॥ आ० ॥ निश्चो नहीं किण वातरोजी ॥ ७ ॥ काल चटको देय ॥ आंधी गीणैं न मेह ॥ आ० ॥ काल आयां उठ जावणोंजी ॥ ८ ॥ हुं परदेशी ज्युं तांम ॥ मोन कोईय नहीं विसराम ॥ आ० ॥ हुं किसे भरोसें रहुं घर मंझेंजी ॥ ९ ॥ में मेल्या लाखां

उपर कोड ॥ ते पिण गया उभा छोड़ ॥ आ० ॥ त्यांनैं पिण मेल्या मसांणैं मैं जी ॥ १० ॥ ऊंचा महल कराया होडा होड ॥ ते पिण गया उभा छोड़ ॥ आ० ॥ परभव जासी प्राणीं एकलोजी ॥ ११ ॥ जीव भोगवे निज पुन्य पाप ॥ क्युं करो तुम सोग सन्ताप ॥ आ० ॥ जगमें कोई किहनों नहींजी ॥ १२ ॥ मात पिता सुत भाय ॥ कोई काहुको नाय ॥ आ० ॥ एकलो आयो जासी एकलोजी ॥ १३ ॥ इम जाणीं करो जिन धर्म ॥ ज्युं रहै सहुनों सर्म ॥ आ० ॥ धर्म सखाई इण जीवरो जी ॥ १४ ॥ धर्म स्युं शीझै आत्म काज ॥ पामैं अविचल राज ॥ आ० ॥ शिव सुख पामैं जीव साश्वताजी ॥ १५ ॥ इत्यादिक दियो उप- देश ॥ दया धर्मनों रेश ॥ आ० ॥ सेठ न्यातीला सन्तोषीयाजी ॥१६॥ कहै म्हांन हुवेछै अंवार ॥ आग्यारो ढील मत करो लीगार ॥ आ० ॥ जोखिण जावैते आवै नहीं जी ॥१७॥ इत्यादिक सहु परिवार ॥ वले बोली मनोरमां नार ॥ आ० ॥ आप कहो ते सत्य वायछैजी ॥१८॥ पिण म्हांनैं आधार था आप ॥ तिणस्युँ करांछा विलाप ॥ आ० ॥ हिवे जिम सुख होवै तिम करोजी ॥१९॥ आप सुखिलयो संजम भार ॥ म्हारो म्होमत राखो लीगार ॥ आ० ॥ म्हैं जास्यां कमाई आप आपरीजी ॥२०॥

॥ दुहा ॥

सेठ सुदर्शण तेहनैं । आगन्यां दिधी रुडो रीत ॥ हिवे करे महाछव दिख्यातणां । ते सुंणज्यो धर प्रीत ॥१॥ मर्दन स्नांन करायनैं । आभूषण विविध प्रकार ॥ सिणगार वैसांण्यों सिबका उपरे । जब सेठ गुंण्यों नवकार ॥ २ ॥ सहंस्र उपाडी सिवका । चालया नगर संभ्कार ॥ चारण भाट वाखे विरदावली । साथे सहु परिवार ॥ ३ ॥ धात्रीवाहन तिण अवसरे । सेठनों निरखण जांण ॥ हिवे करे म्होछव दिखातणां । कर-माटे मंडांण ॥४॥ वाजीत्र विविध प्रकारनां । आवाज करे गुंजार ॥ ते लागे कांनांनें सुहामणां । मननें हर्ष अपार ॥ ५ ॥

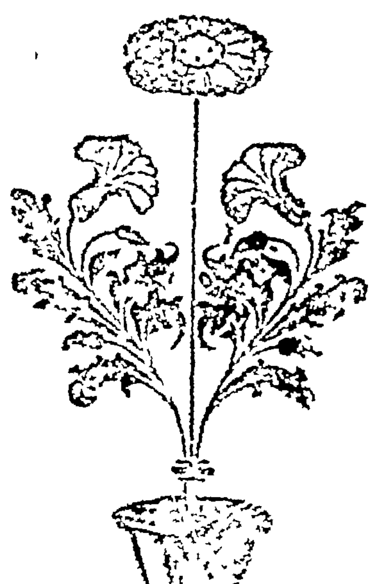

॥ अथ पानाकी चरचा ॥

१ जीव रूपीकि अरूपी, अरूपी किणन्याय कालो पीलो नीलो रातो धोलो ए पांच वर्ण नहीं पावे इण न्याय ।

२ अजीव रूपीकि अरूपी, रूपी अरूपी दोनूं ही छै किणन्याय धर्मास्तिकाय अधर्मास्तिकाय आकाशास्तिकाय काल ए च्यारूं तो अरूपी और पुद्गलास्तिकाय रूपी ।

३ पुन्य रूपीकि अरूपी, रूपी ते किणन्याय पुन्यते शुभ कर्म, कर्म ते पुद्गल पुद्गल ते रूपी ही छै ।

४ पाप रूपीकि अरूपी, रूपी ते किणन्याय पापते अशुभ कर्म कर्मते पुद्गल पुद्गल ते रूपी ही छै ।

५ आस्रव रूपीकि अरूपी, अरूपी ते किणन्याय आस्रव जीवका परिणाम छै, परिणामते जीव छै, जीव ते अरूपी छै, पांच वर्ण पावे नही इण न्याय ।

६ संवर रूपीकि अरूपी, अरूपी किणन्याय पांच वर्ण पावे नही ।

७ निर्जरा रूपीकि अरूपी अरूपी छे ते किणन्याय निर्जरा जीवका परिणाम छे पांच वर्ण पावे नहीं इण न्याय ।

८ बंध रूपीकि अरूपी, रूपी किणन्याय बंध ते शुभ अशुभ कर्म छे, कर्म ते पुद्गल छे, पुद्गल ते रूपी छे ।

९ मोक्ष रूपीकि अरूपी अरूपी छे ते किणन्याय समस्त कर्मासि मुकावे ते मोक्ष अरूपी ते जीव सिद्ध थया ते मां पांच वर्ण पावे नहीं इणन्याय ।

॥ लड़ी दूजी सावद्य निर्वद्यकी ॥

१ जीव सावद्यकि निर्वद्य दोनूं ही छे ते किणन्याय चोखा परिणामां निर्वद्य खोटा परिणामा सावद्य छे ।

२ अजीव सावद्य निर्वद्य दोनूं नही अजीव छे ।

३ पुन्य सावद्य निर्वद्य; दोनूं नहीं अजीव छे ।

४ पाप सावद्य निर्वद्य दोनूं नहीं अजीव छे ।

५ आस्रव सावद्यकि निर्वद्य; दोनूं ही छे किणन्याय मिथ्यात्व आस्रव अव्रत आस्रव प्रमाद आस्रव, कषाय आस्रव, ए च्यार तो एकान्त सावद्य छे,

शुभ जोगां से निरजरा होय जिण आसरी निर्वद्य छै अशुभ जोग सावद्य छै।

६ संबर सावद्यकि निर्वद्य निर्वद्य छ ते किणन्याय कर्मां नें रोकि ते निर्वद्य छै।

७ निरजरा सावद्यकि निर्वद्य निर्वद्य छै ते किण-न्याय कर्म तोडवारा परिणाम निर्वद्य छै।

८ बंध सावद्यकि निर्वद्य दोनूं नहीं ते किणन्याय अजीव छै दूण न्याय।

९ मोक्ष सावद्यकि निर्वद्य; निर्वद्य छै, सकल कर्म मूकाय सिद्ध भगवंत थया ते निर्वद्य छै।

॥ छट्ठी तीजी आज्ञा मांहि बाहिरकी ॥

१ जीव आज्ञा मांहि कि बारे; दोनूं छै ते किण-न्याय, जीवका चोखा परिणाम आज्ञा मांहि छै, खोटा परिणाम आज्ञा बाहिर छै।

२ अजीव आज्ञा मांहि बाहिर; दोनूं नहीं; अजाव छै।

३ पुन्य आज्ञा मांहि कि बाहिर दोनूं नहीं अजीव छै दूणन्याय।

४ पाप आज्ञा मांहि बारे दोनूं नहीं अजीव छै।

५ आस्रव आज्ञा मांहिकि बारे; दोनूं छै, ते किणन्याय, आस्रव नां पांच भेद छै तिणमे मिथ्यात्व अव्रत प्रमाद कषाय ए च्यार तो आज्ञा बाहिर छै अने जोग नां दोय भेद शुभ जोग तो आज्ञा मांहि छै अशुभ जोग आज्ञा बाहिर छै।

६ संवर आज्ञा मांहि कि बाहिर, आज्ञा मांहि छै ते किणन्याय कर्म रोकवारा परिणाम आज्ञा मांहि छै।

७ निर्जरा आज्ञा मांहिकि बाहर, आज्ञा मांहि छै ते किणन्याय कर्म तोडवारा परिणाम आज्ञा मांहि छै।

८ बंध आज्ञा मांहिकि बाहिर, दोनूं नहीं ते किणन्याय, आज्ञा मांहि बाहिर तो जीव हुवे ए बंध तो अजीव छै इणन्याय।

९ मोक्ष आज्ञा मांहिकि बाहिर, आज्ञा मांहि छै ते किणन्याय, कर्म मूंकाय सिद्ध थया ते आज्ञा मे छै।

॥ छट्ठो चौथो जीव अजीवको ॥

१ जीव ते जीव छै कि अजीव, जीव ते किणन्याय सदाकाल जीवको जीव रहसी अजीव कदे हुवे नहीं।

२ अजीव ते जीव छे के अजीव छे; अजीव छे अजीव को जीव किणा ही कालमें हुवे नहीं ।

३ पुन्य जीव छे के अजीव छे; अजीव छे ते किणा-न्याय पुन्यते शुभकर्म शुभ कर्मते पुद्गल छे पुद्गल ते अजीव छे ।

४ पाप जीव छे के अजीव छे; अजीव छे किणान्याय पाप ते अशुभ कर्म पुद्गल छे पुद्गल ते अजीव छे ।

५ आस्रव जीव छे के अजीव छे जीव छे; ते किण-न्याय शुभ अशुभ कर्म ग्रहे ते आस्रव छे कर्म ग्रहे ते जीव ही छे ।

६ संवर जीवके अजीव, जीव छे ते किणान्याय कर्म रोके ते जीव ही छे ।

७ निर्जरा जीवके अजीव, जीव छे किणान्याय कर्म तोड़े ते जीव छे ।

८ बंध जीवके अजीव छे, अजीव छे ते किणन्याय शुभ अशुभ कर्मको बंध अजीव छे ।

९ मोक्ष जीवके अजीव, जीव छे, किणान्याय समस्त कर्म मूकावे ते मोक्ष जीव छे ।

॥ छठो पांचवीं जीव चोरके साहूकार ॥

१ जीव चोरके साहूकार, दोनूं छे किणान्याय चोखा परिणामां साहूकार छे मांठा परिणामां चोर छे ।

२ अजीव चोरकि साहूकार, दोनूं नहीं किणन्याय चोर साहूकार तो जीव हुवे ये अजीव छै।

३ पुन्य चोरकि साहूकार, दोनूं नहीं अजीव छै।

४ पाप चोरकि साहूकार, दोनूं नहीं अजीव छै।

५ आस्रव चोरकि साहूकार, दोनूं छै किणन्याय च्यार आस्रव तो चोर छै, अनें अशुभ जोग पण चोर छै शुभ जोग साहूकार छै।

६ संवर चोरकि साहूकार, साहूकार छै किणन्याय कर्म रोकवारा परिणाम साहूकार छै।

७ निर्जरा चोरकि साहूकार, साहूकार छै किणन्याय कर्म तोड़वारा परिणाम साहूकार छै।

८ बंध चोरकि साहूकार, दोनूं नहीं अजीव छै।

६ मोक्ष चोरकि साहूकार साहूकार किणन्याय कर्म मूंकायकर सिद्ध थया ते साहूकार छै।

॥ लड़ी छटी जीव छांडवा जोगके आदरवा जोगकी ॥

१ जीव छांडवा जोगकि आदरवा जोग छांडवा जोग छै किणन्याय पोते जीवनूं भाजन करे अनेरा जीव पर ममत्व भाव न करे।

२ अजीव छांडवा जोगछे आदरवा जोग, छांडवा जोग छे किणन्याय अजीव छे।

३ पुन्य छांडवा जोगछे आदरवा जोग, छांडवा जोग छे ते किणन्याय पुन्य ते शुभ कर्म पुद्गल छे कर्म ते छांडवा ही जोग छे।

४ पाप छांडवा जोगछे आदरवा जोग, छांडवा जोग छे किणन्याय पाप ते अशुभ कर्म छे जीवनें दुखदाई छे ते छांडवा जोग छे।

५ आस्रव छांडवा जोगछे आदरवा जोग, छांडवा जोग छे किणन्याय आस्रव द्वारे जीवरे कर्म लागे छे आस्रव कर्म आवानां बारणा छे ते छांडवा जोग छे।

६ संवर छांडवा जोगछे आदरवा जोग, आदरवा जोग छे किणन्याय कर्म रोके ते संवर छे ते आदरवा जोग छे।

७ निर्जरा छांडवा जोगछे आदरवा जोग, आदरवा जोग छे किणन्याय देशथी कर्म तोडे देशथी जीव उज्जल थाय ते निर्जरा छे ते आदरवा जोग छे।

८ बन्ध छांडवा जोगछे आदरवा जोग, छांडवा जोग छे, ते किणन्याय शुभ अशुभ कर्म नो बन्ध छांडवा जोग ही छे।

९ मोक्ष छांडवा जोगके आदरवा जोग, आदरवा जोग ते किणन्याय सकल कर्म खपावे जीव निरमल थाय सिद्ध हुवे इणन्याय आदरवा जोग छै।

॥ षटद्रव्यपर लड़ी सातमी रूपी अरूपीकी ॥

१ धर्मास्तिकाय रूपीकि अरूपी, अरूपी किणन्याय पांच वर्ण नहीं पावे इणन्याय।

२ अधर्मास्तिकाय रूपीकि अरूपी, अरूपी किणन्याय पांच वर्ण नहीं पावे इणन्याय।

३ आकाशास्तिकाय रूपीकि अरूपी, अरूपी किणन्याय पांच वर्ण नहीं पावे इणन्याय।

४ काल रूपीकि अरूपी, अरूपी किणन्याय पांच वर्ण नहीं पावे इणन्याय।

५ पुद्गल रूपीकि अरूपी, रूपी किणन्याय पांच वर्ण पावे इणन्याय।

६ जीव रूपीकि अरूपी अरूपी किणन्याय पांच वर्ण नहीं पावे इणन्याय।

॥ छवद्रव्यपर लड़ी आठमी सावद्य निर्वद्यकी ॥

१ धर्मास्तिकाय सावद्यकि निर्वद्य, दानूं नहीं अजीव छै।

२ अधर्मास्तिकाय सावद्यके निर्वद्य, दोनूं नहीं अजीव छै।

३ आकाशास्तिकाय सावद्यके निर्वद्य, दोनूं नहीं अजीव छै।

४ काल सावद्यके निर्वद्य, दोनूं नहीं अजीव छै।

५ पुद्गलास्तिकाय सावद्यके निर्वद्य, दोनूं नहीं अजीव छै।

६ जीवास्तिकाय सावद्यके निर्वद्य, दोनूं छै खोटा परिणामा सावद्य छै चोखा परिणामा निर्वद्य छै।

छवद्रव्यपर लडी नवमी आज्ञामांहिबाहेरकी।

१ धर्मास्तिकाय आज्ञा मांहिके बाहिर दोनूं नहीं ते किणन्याय आज्ञा मांहि बाहिर तो जीव छै। अने ए अजीव छै।

२ अधर्मास्तिकाय आज्ञा मांहिके बाहिर दोनूं नहीं किणन्याय अजीव छै।

३ आकाशास्तिकाय आज्ञा मांहिके बाहिर दोनूं नहीं किणन्याय अजीव छै।

४ काल आज्ञा मांहिके बाहिर दोनूं नहीं किणन्याय अजीव छै।

५ पुद्गल आज्ञा मांहिकि बाहिर दोनूं नहीं किण-
न्याय अजीव छै ।

६ जीव आज्ञा मांहिकि बाहिर दोनूं छै किणन्याय
निर्वद्य करणी आज्ञा मांहि छै सावद्य करणी
आज्ञा बाहिर छै इणन्याय ।

॥ छव द्रव्यपर लड़ी दशमी चोर साहूकारकी ॥

१ धर्मास्तिकाय चोर कि साहूकार दोनूं नहीं किण-
न्याय चोर साहूकार तो जीव छै ए धर्मास्तिकाय
अजीव छै इणन्याय ।

२ अधर्मास्तिकाय चोरकि साहूकार दोनूं नहीं
अजीव छै ।

३ आकाशास्तिकाय चोरकि साहूकार दोनूं नहीं
अजीव छै ।

४ काल चोरकि साहूकार दोनूं नहीं अजीव छै ।

५ पुद्गल चोरकि साहूकार दोनूं नहीं अजीव छै ।

६ जीव चोरकि साहूकार, दोनूं छै किणन्याय, माठा
परिणामां आसरी चोर छै चोखा परिणामां
आसरी साहूकार छै ।

॥ छव द्रव्यपर लड़ी इग्यारमी जीव अजीवकी ॥

१ धर्मास्तिकाय जीवकि अजीव, अजीव छै ।

२ अधर्मास्तिकाय जीवकी अजीव, अजीव छै।

३ आकाशास्तिकाय जीवकी अजीव, अजीव छै।

४ काल जीवकी अजीव, अजीव छै।

५ पुद्गलास्तिकाय जीवकी अजीव, अजीव छै।

६ जीवास्तिकाय जीव कै अजीव, जीव छै।

॥ छव द्रव्यपर लड़ी बारमी एक अनेक की ॥

१ धर्मास्ति काय एक छै की अनेक छै, एक छै, किणन्याय, द्रव्यथकी एकही द्रव्य छै।

२ अधर्मास्तिकाय एक छै की अनेक छै एक छै, द्रव्यथकी एकही द्रव्य छै।

३ आकाशास्तिकाय एककी अनेक, एक छै, लोक अलोक प्रमाणे एकही द्रव्य छै।

४ काल एक छै की अनेक छै, अनेक छै द्रव्यथकी अनन्ता द्रव्य छै इणन्याय।

५ पुद्गल एक छै की अनेक छै, अनेक छै, द्रव्य थकी अनन्ता द्रव्य छै इणन्याय।

६ जीव एक छै की अनेक छै, अनेक छै अनन्ता द्रव्य छै इणन्याय।

॥ लड़ी तेरमी ॥

छवमें नवमेंकी चरचा।

१ कर्मांकोकर्त्ता छव द्रव्यमे कोण नव तत्वमे कोण

उत्तर छवसे जीव नवमे जीव आस्रव ।

२ कर्मांको उपावता छवमे कोण नवमे कोण उ० छवसे जीव नवमे जीव आस्रव ।

३ कर्मांका जगावता छवसे कोण नवमे कोण उ० छवसे जीव नवमे जीव आस्रव ।

४ कर्मांको रोकता छवमे कोण नवमे कोण उत्तर छवसे जीव नवमे जीव संवर ।

५ कर्मांको तोड़ता छवसे कोण नवमे कोण छवमे जीव नवमे जीव निर्जरा ।

६ कर्मांको बान्धता छवमे कोण नवमे कोण छवमे जीव नवमे जीव आस्रव ।

७ कर्मांको मुकावता छवमें कोण नवमे कोण छवमे जीव नवमे जीव मोक्ष ।

॥ छट्टी चौदमी ॥

१ अठारे पाप सेवे ते छवमे कोण नवमे कोण छवमें जीव नवमें जीव आस्रव ।

२ अठारे पाप सेवाका त्याग करे ते छवमे कोण नवमे कोण छवसे जीव नवमें जीव निर्जरा ।

३ सामायक छवमें कोण नवमें कोण छवमें जीव नवमे जीव संवर ।

४ ब्रत छवमें कोण नवमें कोण छवमें जीव नवमें जीव संवर ।

५ अब्रत छवमें कोण नवमें कोण छवमें जीव नवमें जीव आस्रव ।

६ अठारे पापको वहरमण छवमें कोण नवमें कोण छवमें जीव नवमें जीव संवर ।

७ पञ्च महाब्रत छवमें कोण नवमें कोण छवमें जीव, नवमें जीव संवर ।

८ पांच चारित्र छवमें कोण नवमें कोण छवमें जीव, नवमें जीव, संबर ।

९ पांच सुमती छवमें कोण नवमें कोण छवमें जीव, नवमं जीव, निर्जरा ।

१० तीन गुप्ती छवमें कोण नवमें कोण छवमें जीव नवमें जीव, संबर ।

११ बारे ब्रत छवमें कोण नवमें कोण छवमें जीव नवमें जीव, संबर ।

१२ धर्म छवमें कोण नवमें कोण छवमें जीव, नवमें जीव,-संवर, निर्जरा ।

१३ अधर्म छवमें कोण नवमें कोण छवमें जीव, नवमें जीव, आस्रव ।

१४ दया छवमें कोण नवमें कोण छवमें जीव,

नवमें जीव, संवर, निर्जरा ।

१५ छिन्द्रा छवमें कोण नवमें कोण छवमें जीव, नवमें जीव, आस्रव ।

॥ लड़ो १५ पंदरमो ॥

१ जीव छवमें कोण नवमें कोण छवमें जीव, नवमें जीव, आस्रव, संवर, निर्जरा मोक्ष ।

२ अजीव छवमें कोण नवमें कोण छवमें पांच, नवमें अजीव, पुन्य, पाप, बंध ।

३ पुन्य छवमें कोण नवमें कोण छवमें पुद्गल, नवमें अजीव, पुन्य, बंध ।

४ पाप छवमें कोण ? नवमें कोण ? छवमें पुद्गल, नवमें अजीव, पाप बंध ।

५ आस्रव छवमें कोण नवमें कोण छवमें जीव, नवमें जीव, आस्रव ।

६ संवर छवमें कोण नवमें कोण छवमें जीव, नवमें जीव संवर ।

७ निर्जरा छवमें कोण नवमें कोण छवमें जीव, नवमें जीव, निर्जरा ।

८ बंध छवमें कोण नवमें कोण छवमें पुद्गल, नवमें अजीव, पुन्य, पाप, बंध ।

९ मोक्ष छवमें कोण नवमें कोण छवमें जीव,
नवमें जीव, मोक्ष ।

॥ लड़ी १६ सोलहमी ॥

१ धर्मास्ति छवमें कोण नवमें कोण छवमें धर्मास्ति,
नवमें अजीव ।

२ अधर्मास्ति छवमें कोण नवमें कोण छवमें
अधर्मास्ति, नवमें अजीव ।

३ आकाशास्ति, छवमें कोण नवमें कोण छवमें
आकाशास्ति, नवमें अजीव ।

४ काल छवमें कोण नवमें कोण छवमें काल,
नवमें अजीव ।

५ पुद्गल छवमें कोण नवमें कोण छवमें पुद्गल,
नवमें अजीव, पुन्य, पाप बंध ।

६ जीव, छवमें कोण नवमें कोण छवमें जीव,
नवमें जीव, आस्रव संवर, निर्जरा मोक्ष ।

॥ लड़ी १७ सतरमी ॥

१ लिखणा (कलम) पूठो, कागद को पानों,
लकाड़ी की पाटी; छवमें कोण नवमें कोण छवमें
पुद्गल, नवमें अजीव ।

२ साचो, रजोहरण, चादर चोलपट्टो आदि भंड उपगरण; छवमें कोण नवमें कोण छवमें पुद्गल, नवमें अजीव ।

३ धानको दाणों; छवमें कोण नवमें कोण छवमें जीव, नवमें जीव ।

४ रूंख (वृक्ष) छवमें कोण नवमें कोण छवमें जीव, नवमें जीव ।

५ तावड़ो छायां छवमें कोण नवमें कोण छवमें पुद्गल, नवमें अजीव ।

६ दिन रात छवमें कोण नवमें कोण छवमें काल, नवमें अजीव ।

७ श्रीसिद्ध भगवान छवमें कोण नवमें कोण छवमें जीव, नवमें जीव मोक्ष ।

॥ लड़ो १८ अठारमों ॥

१ पुन्य और धर्म एककै दोय, दोय किणन्याय, पुन्य तो अजीव छै, धर्म जीव छै ।

२ पुन्य और धर्मास्ति एक कै दोय; दोय, किण-न्याय, पुन्य तो रूपी छै धर्मास्ति अरूपी छै ।

३ धर्म और धर्मास्ति एक कै दोय दोय, किण-न्याय, धर्म तो जीव छै, धर्मास्ति अजीव छै ।

४ अधर्म और अधर्मास्ति एक के होय होय, किण-न्याय, अधर्म तो जीव छे, अधर्मास्ति अजीव छे।

॥ लड़ी १९ उन्नीसमी ॥

५ पुन्य अनें पुन्यवान एक के होय होय, किण-न्याय, पुन्य ता अजीव छे पुन्यवान जीव छे।

६ पाप अने पापी एकके होय होय, किणन्याय, पाप तो अजीव छे, पापी जीव छे।

७ कर्म अनें कर्मां को करता एकके होय होय, किणन्याय, कर्म तो अजीव छे; कर्मांरो करता जीव छे।

॥ लड़ी १६ सोलहमी ॥

१ कर्म जीव के अजीव अजीव।

२ कर्म रूपीके अरूपी रूपी छे।

३ कर्म सावद्यके निरवद्य; दोनूं नहीं अजीव छे।

४ कर्म चोरके साहूकार; दोनूं नहीं; अजीव छे।

५ कर्म आज्ञा मांहिके बाहिर; दोनूं नहीं अजीव छे।

६ कर्म छांडवा जोग के आदरवा जोग; छांडवा जोग छे।

७ आठ कर्मां में पुन्य कितना पाप कितना ज्ञाना-वर्णी, दर्शणावर्णी, मोहनीय, अंतराय, ए च्यार

कर्म तो एकान्त पाप छै, वेदनी, नाम, गोत्र, आयु ए च्यार कर्म पुन्य पाप दोनूं ही छै।

॥ लड़ी २० बीसमी ॥

१ धर्म जीव कि अजीव जीव छै।

२ धर्म सावद्य कि निरवद्य निरवद्य छै।

३ धर्म आज्ञा मांहि कि बाहिर श्री वितराग देवकी आज्ञा मांहि छै।

४ धर्म चोर कि साहूकार साहूकार छै।

५ धर्म रूपी कि अरूपी अरूपी छै।

६ धर्म छांडवा जोग कि आदरवा जोग आदरवा जोग छै।

७ धर्म पुन्य कि पाप दोनूं नहीं किणन्याय धर्म तो जीव छै पुन्य पाप अजीव छै।

॥ लड़ी २१ इक्कीसमी ॥

१ अधर्म जीव कि अजीव जीव छै।

२ अधर्म सावद्य कि निरवद्य सावद्य छै।

३ अधर्म चोर कि साहूकार चोर छै।

४ अधर्म आज्ञा मांहि कि बाहिर; बाहिर छै।

५ अधर्म रूपी कि अरूपी रूपी छै।

६ अधर्म छांडवा जोग कि आदरवा जोग छांडवा जोग छै ।

॥ लड़ी २२ बाइसमी ॥

१ सामायक जीव कि अजीव जीव छै ।
२ सामायक सावद्य कि निरवद्य निरवद्य छै ।
३ सामायक चोर कि साहूकार साहूकार छै ।
४ सामायक आज्ञा मांहि कि बाहिर आज्ञा मांहि छै ।
५ सामायक रूपी कि अरूपी अरूपी छै ।
६ सामायक छांडवा जोग कि आदरवा जोग आदरवा जाग छै ।
७ सामायक पुन्यकि पाप दोनूं नहीं, किणन्याय पुन्य पाप अजीव छै, सामायक जीव छै ।

॥ लड़ी २३ तेवीसमी ॥

१ सावद्य जीव कि अजीव जीव छै ।
२ सावद्य सावद्य छै कि निरवद्य सावद्य छै ।
३ सावद्य आज्ञा मांहि कि बाहिर बाहिर छै ।
४ सावद्य चोर कि साहूकार चोर छै ।
५ सावद्य रूपी कि अरूपी अरूपी छै ।

६ सावद्य छांडवा जोग कै आदरवा जोग छांडवा जोग छै।

७ सावद्य पुन्य, कै पाप दोनूं नहीं; पुन्य पाप तो अजीव छै; सावद्य जीव छै।

॥ लडी २४ चोबीसमी ॥

१ निरवद्य जीव कै अजीव जीव छै।

२ निरवद्य सावद्य कै निरवद्य निरवद्य छै।

३ निरवद्य चोर कै साहूकार साहूकार छै।

४ निरवद्य आज्ञा मांहि कै बाहिर मांहि छै।

५ निरवद्य रूपी कै अरूपी अरूपी छै।

६ निरवद्य छांडवा जोग कै आदरवा जोग आदरवा जोग छै।

७ निरवद्य धर्म कै अधर्म धर्म छै।

८ निरवद्य पुन्य कै पाप पुन्य पाप दोनूं नहीं, किणन्याय पुन्य पाप तो अजीव छै, निरवद्य जीव छै।

॥ लडी २५ पचीसमी ॥

१ नव पदार्थ में जीव कितना पदार्थ अने अजीव कितना पदार्थ जीव, आस्रव, संवर निर्जरा,

मोक्ष, ए पांच तो जीव छे; अने अजीव, पुन्य, पाप, बंध, ए च्यार पदार्थ अजीव छे।

२ नव पदार्थ मे सावद्य कितना निरवद्य कितना जीव अनें आस्रव ए दोय तो सावद्य निरवद्य दोनूं छे, अजीव, पुन्य पाप, बंध, ए सावद्य निरवद्य दोनूं नहीं। संवर, निर्जरा, मोक्ष, ए तीन पदार्थ निरवद्य छे।

३ नव पदार्थ में आज्ञा मांहि कितना आज्ञा बाहिर कितना जीव, आस्रव, ए दोय तो आज्ञा मांहि पण छे, अने आज्ञा बाहिर पण छे। अजीव, पुन्य, पाप, बंध, ए च्यार आज्ञा मांहि बाहिर दोनूं ही नहीं। संवर, निर्जरा मोक्ष, ए आज्ञा मांहि छे।

४ नव पदार्थ में चोर कितना साहूकार कितना जीव, आस्रव, तो चोर साहूकार दोनूं ही छे। अजीव, पुन्य, पाप, बंध ए चोर साहूकार दोनूं नहीं; संवर, निर्जरा, मोक्ष, ए तीन साहूकार छे।

५ नव पदार्थ में छांडवा जोग कितना आदरवा जोग कितना जीव, अजीव, पुन्य, पाप, आस्रव, बंध, ए छव तो छांडवा जोग छे; संवर, निर्जरा,

मोक्ष ए तीन आदरवा जोग छै अनें जाणवा जोग नवही पदार्थ छै।

६ नव पदार्थ में रूपी कितना अरूपी कितना जीव, आस्रव, संवर, निर्जरा, मोक्ष ए, पांच तो अरूपी छै; अजीव रूपी अरूपी दोनूं छै पुन्य, पाप, वंध रूपी छै।

७ नव पदार्थ में एक कितनां अनेक कितना उ० अजीव टालो आठ पदार्थ तो अनेक छै, अनै अजीव एक अनेक दोनूं छै, किणन्याय धर्मास्ति अधर्मास्ति आकाशास्ति ये तीनूं द्रव्य थकी एक एक ही द्रव्य छै।

॥ लड़ी २६ छवीसमी ॥

१ छव द्रव्य में जीव कितना अजीव कितना एक जीव पांच अजीव छै।

२ छव द्रव्य में रूपी कितना अरूपी कितना जीव; धर्मास्ति; अधर्मास्ति आकाशास्ति; काल; ए पांच तो अरूपी छै. पुद्गल रूपी छै।

३ छव द्रव्य में आज्ञा मांहि कितना आज्ञा वाहिर कितना जीव तो आज्ञा मांहि वाहिर दोनूं छै; वाकी पांच आज्ञा मांहि वाहिर दोनूं नहीं।

४ छव द्रव्य में चोर कितना साहूकार कितना जीव तो चोर साहूकार दोनूं छे; बाकी पांच द्रव्य चोर साहूकार दोनूं नहीं; अजीव छे।

५ छव द्रव्य में सावद्य कितना निरवद्य कितना एक जीव द्रव्य तो सावद्य निरवद्य दोनूं छे; बाकी पांच द्रव्य सावद्य निरवद्य दोनूं नहीं।

६ छव द्रव्य में एक कितना अनेक कितना धर्मास्ति; अधर्मास्ति; आकाशास्ति; ए तीनों तो एक ही द्रव्य छे; काल; जीव; पुद्गलास्ति ए तीन अनेक छे; इणांका अनन्ता द्रव्य छे।

७ छव द्रव्य में सप्रदेशी कितना अप्रदेशी कितना एक काल तो अप्रदेशी छे; बाकी पांच सप्रदेशी छे।

॥ लड़ी २७ सत्ताइसमी ॥

१ पुन्य धर्म के अधर्म दोनूं नहीं; किणन्याय धर्म अधर्म जीव छे; पुन्य अजीव छे।

२ पाप धर्म के अधर्म दोनूं नहीं, किणन्याय धर्म अधर्म तो जीव छे पाप अजीव छे।

३ बंध धर्म के अधर्म दोनूं नहीं; किणन्याय धर्म अधर्म तो जीव छे बंध अजीव छे।

४ कर्म अनें धर्म एक कै होय होय छै; किणन्याय कर्म तो अजीव छै; धर्म जीव छै।

५ पाप अने धर्म एक कै होय होय छै; किणन्याय पाप तो अजीव छै; धर्म जीव छै।

६ अधर्म अनें अधर्मास्ति एक कै होय होय; किण-न्याय अधर्म तो जीव छै; अधर्मास्ति अजीव छै।

७ धर्म अनें धर्मास्ति एक कै होय होय; किणन्याय धर्म तो जीव छै; धर्मास्ति अजीव छै।

८ धर्म अनें अधर्मास्ति एक कै होय होय; किणन्याय धर्म तो जीव छै; अधर्मास्ति अजीव छै।

९ अधर्म अनें धर्मास्ति एक कै होय होय; किणन्याय अधर्म तो जीव; धर्मास्ति अजीव छै।

१० धर्मास्ति अनें अधर्मास्ति एक कै होय होय; किणन्याय धर्मास्ति को तो चालवा नो सहाय छै; अनें अधर्मास्तिनो थिर रहवानों सहाय छै।

११ धर्म अनें धर्मी एक कै होय एक छै; किणन्याय धर्म जीवका चोखा परिणाम छै।

१२ अधर्म अनें अधर्मी एक कै होय एक छै; किण-न्याय अधर्म जीव का खोटा परिणाम छै।

——:०:——

प्रश्नोत्तर

१ थारी गति कांई—मनुष्य गति।

२ थारी जाती कांई—पंचेन्द्री।

३ थारी काय कांई—त्रसकाय।

४ इन्द्रियां कितनी पावे—५ पांच।

५ पर्याय कितना पावे—६ छव।

६ प्राण कितना पावे—१० दश पावे।

७ शरीर कितना पावे—३ तीन—औदारिक; तेजस; कार्मण।

८ जोग कितना पावे—९ नव पावे च्यार मन का; च्यार वचनका; एक काया को; औदारिक।

९ उपयोग कितना पावे—४ च्यार पावे मतिज्ञान १ श्रुतिज्ञान २ चक्षु दर्शन ३ अचक्षु दर्शन ४

१० थारे कर्म कितना ८ आठ।

११ गुणस्थान किसो पावे—व्यवहारथी पांचमूं, साधु नें पूछे तो छट्ठो ।

१२ विषय कितनो पावे—२३ तेवीस ।

१३ मिथ्यात्वनां दश बोल पावे कि नहीं, व्यवहारथी नही पावे ।

१४ जीवका चौदा भेदासें सें किसो भेद पामे, १ एक चोदमूं पर्याप्ता सन्नी पंचेन्द्री को पावै ।

१५ आतमां कितनी पावै श्रावकमे तो ७ सात पावै; अनं साधु मे आठ आवै ।

१६ दण्डक किसो पावे—एक इकवीसमु ।

१७ लेस्या कितनी पावे—६ छव ।

१८ दृष्टी कितनी पावे—व्यवहारथी एक; सम्यक दृष्टी पावे ।

१९ ध्यान कितना पावे—३ तीन, शुक्ल ध्यान टालके ।

२० छवद्रव्यमें किसा द्रव्य पावे—१ एक जीव द्रव्य ।

२१ राशि किसो पावे—एक जीव राशि ।

२२ श्रावक का बारा व्रत श्रावक में पावै ।

२३ साधुका पञ्च महाव्रत पावे कै नहीं—साधु में पावै श्रावक में पावै नहीं ।

२४ पांच चारित्र श्रावक में पावे कै नहीं, नहीं पावे, एक देश चारित्र पावे ।

१ एकेन्द्री की गति कांई—तिर्यंच गति ।

२ एकेन्द्री की जाति कांई—एकेन्द्री ।

३ एकेन्द्री में काया किसी पावे—पांच थावर की ।

४ एकेन्द्री में इन्द्रियां कितनी पावे—एक स्पर्श इन्द्री ।

५ एकेन्द्री में पर्याय कितनी पावे—४ च्यार मन भाषा ए दोय टली ।

६ एकेन्द्री में प्राण कितना पावे—४ च्यार पावे स्पर्श इन्द्रीय बलप्राण १ काय बलप्राण २ श्वासोश्वास बलप्राण ३ आयुषो बलप्राण ४

७ मूरड माटी मुलतानी पत्थर सोनो चांदी रतनादिक पृथ्वीकाय का प्रश्नोत्तर :—

प्रश्न	उत्तर
गति कांई	तिर्यञ्च गति
जाति कांई	एकेन्द्री
काय किसी	पृथ्वीकाय
इन्द्रियां कितनी पावे	एक स्पर्श इन्द्री
पर्याय कितनी पावे	४ च्यार, मन भाषा टली
प्राण कितना	४ च्यार पावे, स्पर्श इन्द्री बल प्राण १ काय बल २ श्वासोश्वास बल ३ आयु बलप्राण ४

८ पांणी ओमादि अप्पकायकी

प्रश्न	उत्तर
गति कांई	तिर्यंच गति
जाति कांई	एकेन्द्री
काय किसी	अप्पकाय
इन्द्रियां कितनी	एक स्पर्श इन्द्री
पर्याय कितनी	४ च्यार, मन भाषाटली
प्राण कितना	४ च्यार, ऊपर प्रमाणे

९ अग्नी तेउकायनी

प्रश्न	उत्तर
गति कांई	तिर्यंच गति
जाति कांई	एकेन्द्री
काय किसी	तेउकाय
इन्द्रियां कितनी	एक स्पर्श इन्द्री
पर्याय कितनी	४ च्यार, मन भाषा टली
प्राण कितना	४ च्यार, ऊपर प्रमाणं

१० वायु कायकी

प्रश्न	उत्तर
गति कांई	तिर्यंच गति
जाति कांई	एकेन्द्री
काय कांई	वायुकाय
इन्द्रियां कितनी	एक स्पर्श इन्द्री
पर्याय कितनी	४ च्यार, ऊपर प्रमाणे
प्राण कितना	४ च्यार, ऊपर प्रमाणे

११ वृक्ष, लता, पान, फूल, फल, सौलण, फूलण आदि वनस्पतिकायनी

प्रश्न	उत्तर
गति कांई	तिर्यंच गति
जाति कांई	एकेन्द्री
काय कांई	वनस्पतिकाय
इन्द्रियां कितनी	एक स्पर्श इन्द्री
पर्याय कितनी	च्यार, ऊपर प्रमाणे
प्राण कितना	च्यार, ऊपर प्रमाणे

१२ लट गिंडोला आदि बेन्द्रीकी

प्रश्न	उत्तर	
गति कांई	तिर्यंच गति	
जाति कांई	बेन्द्री	
काय कांई	त्रस काय	
इन्द्रियां कितनी	२ दोय, स्पर्श, रस, इन्द्री	
पर्याय कितनी	५ पांच मन पर्याय टली	
प्राण कितना	६ छव, रस इन्द्री बल प्राण	१
	स्पर्श इन्द्री बल प्राण	२
	काय बल प्राण	३
	श्वासोश्वासबल प्राण	४
	आउखो बल प्राण	५
	भाषा बल प्राण	६

१३ कीड़ी मकोड़ा आदि तेइन्द्रीका

प्रश्न	उत्तर
गति काई	तिर्यंच गति
जाति काई	तेइन्द्री
काय काई	त्रस काय
इन्द्रियां कितनी	३ तीन, स्पर्श १ रस २ घ्राण ३
पर्याय कितनी	५ पांच, मन टली
प्राण कितना	७ सात, छव तो ऊपर प्रमाणे घ्राण इन्द्री बल प्राण वध्यो

१४ माखी मच्छर टीडी पतंगिया विच्छु आदि चोइन्द्री का

प्रश्न	उत्तर
गति काई	तिर्यंच गति
जाति काई	चोइन्द्री
काय काई	त्रस काय
इन्द्रियां कितनी	४ च्यार, श्रुत इन्द्री टली
पयाय कितनी	५ पांच, मन टली
प्राण कितना	८ आठ, सात तो ऊपर प्रमाणे एक चक्षु इन्द्री बल प्राण और बध्यो

१५ पंचेन्द्रीकी

प्रश्न	उत्तर
मति कितनी पावे	४ च्यार ही पावे

जाति कांई	पंचेन्द्री
काय कांई	त्रस काय
इन्द्रियां कितनी	पांचोंही
पर्याय कितनी	६ छवों ही पावै सन्नीमें, और असन्नीमें ५ पांच, मन टल्यो,
प्राण कितना पावै	सन्नीमें तो १० दशुं ही पावै, असन्नी में ६ पावै मन टल्यो

१६ नारकी पूछा

प्रश्न	उत्तर
गति कांई	नरक गति
जाति कांई	पंचेन्द्री.
काय कांई	त्रस काय
इन्द्रियां कितनी	५ पांचोही
पर्याय कितनी	५ पांच, मन भाषा भेली लेखवी
प्राण कितना	१० दशोंही

१७ देवताकी पूछा

प्रश्न	उत्तर
गति कांई	देव गति
जाति कांई	पंचेन्द्री
काय कांई	त्रस काय
इन्द्रियां कितनी	५ पांचोही
पर्याय कितनी	५ मन भाषा भेली लेखवी
प्राण कितना	१० दशोंही

१८ मनुष्य की पूछा असन्नी की

प्रश्न	उत्तर
गति काई	मनुष्य गति
जाति कांई	पंचेन्द्री
काय कांई	त्रस काय
इन्द्रियां कितनी	५ पांच
पर्याय कितनी	३॥ श्वास लेवेतो उश्वास नह
प्राण कितना	७॥ श्वास लेवेतो उश्वास न

१९ सन्नी मनुष्य की पूछा

प्रश्न	उत्तर
गति कांई	मनुष्य गति
जाति कांई	पंचेन्द्री
काया कांई	त्रस काय
इन्द्रियां कितनी	५ पांच
पर्याय कितना	६ छव
प्राण कितना	१० दश

१ तुमे सन्नीकि असन्नी ? सन्नी, किणन्याय मन
२ तुमे सूक्ष्मकि वादर, ? वादर किण० ? दीखं
३ तुमे त्रसकि स्थावर ? त्रस, किण० ? हालू चालं
४ एकेन्द्री सन्नी कि असन्नी—असन्नी, किण०
नहीं ।
५ एकेन्द्री सूक्ष्म कि वादर—दोनूं ही छे

एकेन्द्री दोय प्रकार की छै, दीखै ते बादर छै, नहीं दीखै ते सूक्ष्म छै।

६ एकेन्द्री त्रस के स्थावर—स्थावर छै, हाल चालै नहीं।

७ एकेन्द्री में इन्द्रियां कितनी—एक स्पर्श इन्द्री (शरीर)।

८ पृथ्वीकाय अप्पकाय तेउकाय वायुकाय वनस्पतिकाय।

प्रश्न	उत्तर
सन्नी के असन्नी	असन्नी छै मन नहीं
सूक्ष्म के बादर	दोनूं ही प्रकार की छै
त्रस के स्थावर	स्थावर छै

९ बेइन्द्री तेइन्द्री चौइन्द्री की पूछा

प्रश्न	उत्तर
सन्नी के असन्नी	असन्नी छै मन नहीं
सूक्ष्म केबादर	बादर छै
त्रस के स्थावर	त्रस छै

१० तिर्यंच पंचेन्द्री की पूछा

प्रश्न	उत्तर
सन्नी के असन्नी	दोनूं ही छै
सूक्ष्म के बादर	बादर छै
त्रस के स्थावर	त्रस छै

११ असन्नी मनुष्य चौदे स्थानकमें नीपजै

प्रश्न	उत्तर
सन्नी के असन्नी	असन्नी छे
सूक्ष्म के वादर	वादर छे
त्रस के स्थावर	त्रस छे

१२ सन्नी मनुष्य ते गर्भ में उपजै जिणारी पूछा

प्रश्न	उत्तर
सन्नी के असन्नी	सन्नी छे
त्रस के स्थावर	त्रस छे
सूक्ष्म के वादर	वादर छे

१३ नारकी का नेरीया की पूछा

प्रश्न	उत्तर
सन्नी के असन्नी	सन्नी छे
सूक्ष्म के वादर	वादर छे
त्रस के स्थावर	त्रस छे

१४ देवता की पूछा

प्रश्न	उत्तर
सन्नी के असन्नी	सन्नी छे
सूक्ष्म के वादर	वादर छे
त्रस के स्थावर	त्रस छे

१५ गाय भेंस हाथी घोड़ा वलद पक्षी आदि पशु जानवर की पूछा

प्रश्न	उत्तर
सन्नी के असन्नी	दोनूं ही प्रकार का छै छिमो छिमके मन नहीं, गर्भेज के मन छै
सूक्ष्म के बादर	बादर छै, नेत्रसे देखवा मे आवै छै
त्रस के स्थावर	त्रस छै हालै चालै छै

१ एकेन्द्री मे बेद कितना पावे एक नपुंसक बेद पावे ।

२ पृथ्वी पाणी बनस्पति अग्नि बायरो यां पांचां में बेद कितना पावे—१ एक नपुंसक ही छै ।

३ बेइन्द्री तेइन्द्री चोइन्द्री मे बेद कितना पावै—एक नपुंसक बेद ही पावे छै ।

४ पंचेन्द्रीमे बेद कितना पावै—सन्नी में तो तीनों ही बेद पावे छै, असन्नीमे एक नपुंसक बेदही छै ।

५ मनुष्यमें बेद कितना पावै—असन्नी मनुष्य चौदे थानक मे उपजे जीणां मे तो बेद ऐक नपुंसक ही पावे छै, सन्नी मनुष्य गर्भमे उपजे जिणांमे बेद तीनोंही पावे छै ।

६ नारकी में बेद कितना पावै—एक नपुंसक बेद ही पावे छै ।

७ जलचर थलचर उरपर भुजपर खेचर यां पांच प्रकार का तिर्यंचा मे बेद कितना पावै—छिमो-

छिम उपजे ते असन्नी के जिणांमें तो वेद नपुंस
हो पावे छे, अनें गर्भ में उपजे ते सन्नी छै जि
से वेद तीनोंही पावे छे।

८ देवतामे वेद कितना पावै—उत्तर—भवनपती, वाणव्यन्तर, जोतिषी, पहिला दूजा देव लोक तांई तो वेद दोय स्त्री १ पुरुष २ पावे छे, और तीजा देवलोक से स्वार्थ सिद्ध तांई वेद एक पुरुष ही छे।

९ चौवीस दण्डक का जीवां के कर्म कितना उगणीस दण्डकका जीवांमे तो कर्म आठही पावे छे, अनें मनुष्य में सात आठ तथा च्यार पावे छे।

१ धर्म व्रत में के अव्रत मे—व्रत में।

२ धर्म आज्ञा मांहि के बाहिर श्रीवीतरागदेव की आज्ञा मांहि छे।

३ धर्म हिंसा में के दया में—दया में।

४ धर्म मोल मिलै के नहीं मिलै—नहीं मिलै, धर्म तो अमूल्य छे।

५ देव मोल मिलै के नहीं मिलै—नहीं मिलै, अमूल्य छे।

६ गुरु मोल लियां मिले कि नहीं मिले—नहीं मिले, अमूल्य छै।

७ साधुजी तपस्या करै ते व्रत में कि अव्रत में व्रत पुष्टको कारण छै अधिक निर्जरा धर्म छै।

८ साधुजी पारणो करै ते व्रत में कि अव्रत में अव्रतमें नहीं, किणन्याय? साधुकै कोई प्रकार अव्रत रही नहीं सब सावद्य जोगका त्याग छै। तिणसूं निरजरा थाय छै तथा व्रत पुष्टको कारण छै।

९ श्रावक उपवास आदि तप करै ते व्रत में कि अव्रत में—व्रत में।

१० श्रावक पारणो करै ते व्रत में कि अव्रत में—अव्रत में किणन्याय? श्रावक को खाणों पीणों पहरणों ए सर्व अव्रत में छै श्रीउववाई तथा सूयगडांग सूत्र में बिस्तारकर लिख्या छै।

११ साधुजी नें सूजतो निर्दोष आहार पाणी दियां कांई होवे, व्रतमें कि अव्रतमें—अशुभ कर्म क्षय थाय तथा पुन्य बंधे छै, १२ मूं व्रत छै।

१२ साधुजी नें असूजतो दोषसहित आहार पाणी दियां कांई होवे तथा व्रत में कि अव्रत में—श्री भगवती सूत्र में कह्यो छै, तथा श्री ठाणांग

सूत्र के तीजे ठाणां में कह्यो छै अल्प आयुबंधे अकल्याणकारी कर्म बंधे तथा असूजतो दीधोते व्रत से नहीं। पाप कर्म बंधे छै।

१३ अरिहंत देव देवता के मनुष्य—मनुष्य छै।

१४ साधु देवता के मनुष्य—मनुष्य छै।

१५ देवता साधुनौं वंछा करै के नहीं करै—करै साधु तो सबका पूजनीक छै।

१६ साधु देवताको वंछा करैकि नहो करै—नहीं करै।

१७ सिद्ध भगवान देवता के मनुष्य—दोनूं नहीं।

१८ सिद्ध भगवान सूक्ष्म के बादर—दोनूं नहीं।

१९ सिद्ध भगवान त्रसके स्थावर—दोनूं नहीं।

२० सिद्ध भगवात सन्नी के असन्नी—दोनूं नहीं।

२१ सिद्ध भगवान पर्याप्ता के अपर्याप्ता—दोनूं नहीं।

॥ इति पानाकी चरचा ॥

अथ: प्रतिक्रमण ।

अर्थ सहित ।

णमो अरिहंताणं णमो सिद्धाणं णमो

नमस्कार थावो श्री अरिहन्त भगवन्त नें नमस्कार थावो श्री सिद्ध भगवान नें नमस्कार थावो

आयरियाणं णमो उवज्झायाणं णमो लोए

श्री आचारज महाराज नें नमस्कार थावो श्री उपाध्याय महाराज नें नमस्कार थावो लोक के विषै

सव्व साहुणं ।

सर्व साधु मुनिराजों नें ।

॥ अथ तिक्खुता की पाटी ॥

❁ अर्थ सहित ❁

तिक्खुत्तो आयाहिणं पयाहिणं वंदामि नमं

तीन बार दाहिणा पासाथी प्रदक्षिणा देई वंदना करूं सत्कार नमस्कार

सामी सक्कारेमी समाणेमी कल्लाणं मंगलं
करूं सत्कार देऊ सनमान करूं कल्याणकारी मंगल कारी

देवयं चेइयं पज्जुवासामी मत्थएण वंदामी
धर्म देव चित्त प्रसन्न कारी ज्ञान वंत सेवना करूं मस्तके करी वंदना नमस्कार करूं

इच्छामि पडिक्कमिउं इरिया वहियाए
इच्छूं, वाञ्छूं प्रतिक्रमवो ते निवर्त्तवो मार्ग नें विषे ज्यो

विराहणा ए गमणागमणे पाणक्कमणे
विराधना हुई होय जातां आतां प्राणी बेन्द्रियादि नों आक्रमण करणूं ते चंपणूं

बीयक्कमणे हरियक्कमणे ओसा उत्तिंग पणग
बीजको दाबणूं हरि लीलीके दाबणूं ओसको कीडीका बिल नीलण फूलण

दग मट्टी मकड़ा संताणा संकमणे जे
पाणी को माट्टीका मकड़ी का दाबलो जीव जाला मर्दवो तो जो इया होय

मे जीवा विराहिया एगिंदिया बेइंदिया
मैं जीव विराध्यो होय एकेन्द्री जीव बेन्द्री जीव

तेइंदिया चउरिंदिया पंचेंदिया अभी
तेन्द्री जीव चौन्द्री जीव पंचेन्द्री जीव सनमुख

हया वत्तिया लेसिया संघाइया संघ
आताहण्यां धूलसे रगड्या आतन कस्या संघट्ट
धरती करी ढक्यां

ट्टिया परियाविया किलामिया उद्दविया
किया परिताप्या कीलामना उपजाई उपद्रव किया

ठाणा उठाणं संकामिया जीवियाओ वव
एक स्थानसे दूसरे स्थान पटक्या जीवत से

रोविया तस्समिच्छामि दुक्कडं ॥ १ ॥
नासकिया तेहनो मिच्छामि दुक्कडं ।

॥ अथ तस्सुत्तरी ॥

तस्सउत्तरी करणेणं पायच्छित्त करणेणं
तेहनो उत्तर करवो प्रायश्चित्त करवो
प्रधान

विसोही करणेणं विसल्ली करणेणं
विशुद्धि करवो सल्य रहित करवो

पावाणं कम्माणं निग्घाय णट्ठाए
पाप कर्मका नास करवा निमित्त

ठामि करेमि काउसग्गं अन्नत्थ
स्थिर करूं छूं काय उत्सर्ग इण मुजब
हुई एतलो विशेष

ऊससिएणं नीससिएणं खासिएणं छीएणं
ऊंचास्वास नीचास्वास खांसी छींक

वाय निसग्गेणं भमलीए
न्नंखाइएणं उड्डुएणं अधोवायु भंवल
उवासी डकार अङ्गसंचालेहिं
पित्तमुच्छाए सुहुमेहिं शरीरको हालवो
पित्तकर मूर्च्छा सूक्ष्मपणे दिट्ठिसंचालेहिं
सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं सुहुमेहिं दृष्टी चलावो
सूक्ष्मपणों श्लेष्मको संचाल सूक्ष्म अविराहो
एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो वीराधना
इत्यादिक यह आधार से ध्यान भांगे नहीं अरिहं
उ हुज्ज मे काउस्सगं जाव अरि
नहीं होज्यो मनें काउसगते ध्यान जिहां तक नपारेमि
ताणं भगवंताणं नमोक्कारेणं नहीं पारूं
हन्त भगवन्तने नमस्कार करीने झाणेणं
ताव कायं ठाणेणं मोणेणं ध्यानकरी
तहाताई शरीरसे स्थानसे मौनकरी
अप्पाणं वोसरामि ॥ इति ॥
आतमां नें पापथकी वोसराऊं ।

॥ अथ लोगस्स ॥

लोगस्स उज्जोयगरे धम्म तित्थयरे जि
लोक के विषे उद्योतकारी धर्म तिर्थ करता
अरिहन्ते कित्तइस्सं चउवीसंपि केव
अरिहन्ताकी कीर्ति करूं चोवीस वे

उसभ मजियं च वंदे संभव मभिनंदणं च
ऋषभ अजित पुन. वंदु संभवनाथ अभिनन्दनजी पुनः

सुमइं च पउमप्पहं सुपासं जिणं च चंदप्पहं
सुमति पुनः पद्म प्रभु सुपार्श्व जिन पुन. चंदा प्रभु
नाथजी

वंदे सुविहिं च पुप्फदंतं सीयल सिज्जंस
वंदु सुविध पुनः दूसरो ना सीतल श्रेयांस
पुष्फदंत

वासुपुज्जं च विमल मणं तं च जिणं धम्मं
वासुपूज्य पुनः विमलनाथ अनन्तनाथजिन धर्मनाथ

संतिं च वंदामि ३ कुंथु अरिहं च मल्लिं
शान्ति पुनः वंदु कुन्थु अर पुनः मल्लिनाथ
नाथ नाथ

वंदे मुणिसुव्वयं नमि जिणं च वंदामि
वंदु मुनिसुव्रत नमि जिन पुनः वंदु

रिट्ठनेमि पासं तह वद्धमाणं च ४ एवं
अरिष्ठनेम पार्श्वनाथ तथारूप वर्द्धमान पुनः वंदु यह

मये भिथुया विहूय रयमला पहीणा जर
मैं स्तुति करि दूर किया कर्म रूप खीणभया जनम
रंजमैल

मरणा चउ वीसंपि जिणवरा तित्थ, यरा मे
मर्णजिणाका पहवा चौवीस जिन राज तिर्थङ्कर म्हारे

नं भाइयं उड्डु:एणं वाय निसग्गेणं भमलीए
उवासी डकार अधोवायु भंवल

पित्तसुच्छाए सुहुमेहिं अङ्गसंचालेहिं
पित्तकर मूर्च्छा सूक्षमपणे शरीरको हालवो

सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं
सूक्षमपणों श्लेष्मको संचाल सूक्षम दृष्टी चलावो

एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहो
इत्यादिक यह आधार से ध्यान भांगे नही वीराधना

ऊ हुज्ज मे काउस्सग्गं जाव अरिहं
नहीं होज्यो मनें काउसगते ध्यान जिहां तक अरि

ताणं भगवंताणं नमोक्कारेणं नपारेमि
हन्त भगवन्तने नमस्कार करीने नहीं पारूं

ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं
तातांई शरीरसे स्थानसे मौनकरी ध्यानकरी

अप्पाणं वोसरामि ॥ इति ॥
आतमां नें पापथकी वोसराऊं ।

॥ अथ लोगस्स ॥

लोगस्स उज्जोयगरे धम्म तित्थयरेजिणे
लोक के विषे उद्योतकारी धर्म तिर्थ करता जिन

अरिहन्ते कित्तइस्सं चउवीसंपि केवली
अरिहन्ताको कीर्ति करूं चोवीस पे केवल

तभ मजियं च वंदे संभव मभिनंदणं च
भ अजित पुन. वंदु संभवनाथ अभिनन्दनजी पुनः

मइं च पउमप्पहं सुपासं जिणं च चंदप्पहं
मति पुनः पद्म प्रभु सुपार्श्व नाथजी जिन पुन. चन्द्रा प्रभु

वंदे सुविहिं च पुप्फदंतं सीयल सिज्जंस
वंदु सुविध पुनः दूसरो ना पुप्फदंत सीतल श्रेयांस

वासुपुज्जं च विमल मणं तंच जिणं धम्मं
वासुपूज्य पुनः विमलनाथ अनन्तनाथजिन धर्मनाथ

संतिं च वंदामि ३ कुंथुं अरिहं च मल्लिं
शान्ति पुनः वंदु कुन्थु नाथ अर नाथ पुनः मल्लिनाथ

वंदे मुणिसुव्वयं नमि जिणं च वंदामि
वंदु मुनिसुव्रत नमि जिन पुनः वंदु

रिट्ठनेमि पासं तह वद्धमाणं च ४ एवं
अरिष्ठनेम पार्श्वनाथ तथारूप वर्द्धमान पुनः वंदु यह

मये अभिथुया विहूय रयमला पहीणा जर
मैं स्तुति करि दूर किया कर्म रूप रंजमैल क्षीणभया जनम

मरणा चउ वीसंपि जिणवरा तित्थ, यरा मे
मर्णजिणाका पद्धवा चौवीस जिन राज तिर्थङ्कर म्हारे

पसीयं तु ५ कित्तिय वंदिए महिया जे ।
प्रसन्नथावो कीर्त्तिकरी वंदु मोटा प्रते तेह
पुज्या ध्याय

लोगस्स उत्तमा सिद्धा आरोग्ग बोहिलाः
लोकके विषै उत्तम सिद्ध छे रोग रहित समकित
बोध ला

समाहि वर मुत्तमं दिंतु ६ चंदेसु निम्मः
समाधि प्रधान उत्तम देवो चन्द्रमाथी निर्म
यरा आइच्चेसु अहियं पयासयरा सागर वर
घणां सूर्यथी अधिक प्रकाश करी समुद्र समान
गम्भीरा सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ७
गंभीर एहवा सिद्ध सिद्धी मनें देवो

॥ अथः नमोत्थुणं ॥

नमोत्थुणं अरिहंताणं भगवंताणं आइगराणं
नमस्कार थाथो अरिहन्त भगवंत ने धर्म की आदि
करता

तित्थयराणं सयंसंबुद्धाणं पुरिसोत्तमाणं
तीर्थ करता विना गुरु पोते प्रति पुरुषांमें उत्तम
बोध पाम्यां

पुरिस सिंहाणं पुरिसवरपुंडरीयाणं पुरि
पुरुषामें सिंह समान पुरुष ने पुंडरिक पुरुषा
कमल समान में

मवर गन्ध हत्थीणं लोगुत्तमाणं लोगनाहाणं
गंध हाथी समान लोक मे उत्तम लोकका नाथ
लोगहियाणं लोगपईवाणं लोगपज्जोय गराणं
लोकमे हित लोकमें प्रदीप लोकमें उद्योत कारी
कारी समान
अभयदयाणं चक्खु दयाणं मग्गदयाणं सरणदयाणं
अभय दान ज्ञान चक्षु सुमार्ग दायक शरण दायक
दाता दायक
जीवदयाणं बोहिदयाणं धम्मदयाणं धम्मदेश
संजम जीत्व बोधदायक धर्म दायक धर्म देशनां
दायक
याणं धम्मनायगाणं धम्मसारहीणं धम्मवर
दायक धर्मका नायक धर्मका सारथी उत्तम धर्मकर
चाउरंत चक्कवट्टीणं दीवोताणं सरणगई पइठा
च्यार गतिका अंतकारी चक्र द्वीपा समान शरणागत में
वर्त समान
अप्पडिहय वरनाणं दंसण धराणं विअट्टछउ
अप्रतिहत प्रधानज्ञान दर्शन धारक निवर्त्यो
माणं जिणाणं जावयाणं तिन्नाणं तारयाणं
छद्मस्थ जीत्या अने जीतावे पोते तीरा दूसरानें
पणो दूजाने तारे
बुद्धाणं बोहयाणं मुत्ताणं मोयगाणं सव्वनूणं
पोते प्रति दूजाने प्रति कर्मथी दूजाने सर्वज्ञ
बोध पाम्या बोधे मुकाण्या मुकावे

सव्वदरिसीणं सिवमयल मरुअ मणंत
सर्व दर्शी कल्याणकारी अरुज अनन्त
अचल

मक्खय मव्वाबाह मपुणरावित्ती सिद्धिगई
अक्षय अव्याबाधि फेरु आवे नहीं इसी सिद्धगति

नामधेयं ठाणं संपत्ताणं नमो जिणाणं ॥ इति ॥
नामवाला स्थान प्राप्त हुआ ज्यां जिनेश्वरानें
नमस्कार थावो

अथ आवस्सही इच्छामिणं भंते ।

आवस्सही इच्छामिणं भंते तुब्भहिं अब्भणुं
अवश्य इच्छूं छूं मैं हे भगवान तुम्हारी आज्ञासे

नायेसमाणे देवसी पडिक्कमणुं ठाएमि देवसी
दिवस प्रति क्रमण करूंमैं दिवस
संबन्धी संबन्धी

ज्ञान दर्शन चारित्र तप अतिचार चिंतवनार्थं
ज्ञान दर्शन चारित्र तप अतिचार चिन्तवना के
अरथे

करेमि काउसग्गं ॥
करूं छूं मैं काउसग ते ध्यान

अथ इच्छामि ठामि काउसग्ग ।

इच्छामि ठामि काउसग्गं जो मे देवसिउ अइ
इच्छूं छूं ठाऊं काउसग ज्यो मैं दिवसमैं अति

यार कओ काइओ वाइओ माणसिओ उस्सुत्तो
चार कीनों शरीरसे वचन से मनसे भूंडा सूत्र

उमग्गो अकप्पो अकरणिज्जो दुज्झाओ दुव्वि
उनमार्ग अकल्पनीक नहीं करवा जोग दुर ध्यान खोटी

चिंतिओ अणायारो अणिच्छिअव्वो
चिन्तवना अणाचार नहीं इच्छवा जोग

असावगपाउग्गो नाणे दंसणे चरित्ताचरित्ते
श्रावक के नहीं कर ज्ञान दर्शन देश व्रत
वा जोग पाप त
व्रत भंगादि

सुए सामाइए तिण्हं गुत्तीणं चउण्हं कसायाणं
श्रुत सामायक तीन गुप्ती च्यार कषाय

पंचण्हं मणुव्वयाणं तिण्हं गुण वयाणं चउण्हं
पांच अणूव्रत तीन गुण व्रत च्यार

सिक्खावययाणं बारस्स विहस्स सावग धम्मस्स
सिखा व्रत बारै विधि श्रावक धर्म को

जं खंडियं जं विराहियं तस्समिच्छामि
ज्यो खंडणाकरी ज्यो विराधना करी तेहनो मिच्छामि

दुक्कडं ॥
दुक्कडं

॥ अथ खमासमणो ॥

इच्छामि खमासमणो वंदिउ जावणिज्जाए
इच्छूं छूं क्षमावंत साधु वंदवा सचितादिछांडी निपप
शरीरपणें हुई निर्जरा अर्थे

निसीहियाए अणुजाणह मेमि उग्गहं निस्सही

शरीर करी आज्ञा देवो मुजे मर्यादा, अशुभ जोग

मांही निवर्तती

अहो कायं कायसंफासं खमणिज्जो मे किलामो

चर्ण फर्शवाकी म्हांरी कायासे खमज्यो हे भगवान किलामनां

आज्ञा देवो तुमारा चर्ण

फर्शतां

अप्पकिलंताणं बहुसुभेण मे दिवसोवईकंतो

थोड़ी किलामना बहुत समाधि भावकर, दिवस वीत्यो

हुई हुवेते तुमारो

जत्ता मे जवणिज्जं च मे खामेमि खमासमणो

संयम रूप इन्द्रीनोइन्द्रीना आपकुं खमाऊं हे क्षमावंत

यात्राथो तुमारा, उपशम थकी छूं साधु

निरोग शरीर

देवसियं वइक्कमं आवस्सिआए पडिक्कमामि

दिवस सम्बन्धी व्यतिक्रम अवश्य करणी नां पडिकमूं छूं

अतिचार थकी

खमासमणाणं देवसियाए आसायणाए

हे क्षमावंत श्रमण दिवस संबन्धी आसातना

तेतीसन्नयराए जं किंचिमिच्छाए मणदुक्कडाए

तेतीस मांहिली ज्यो कोई किंचित् मिथ्या मनसे दुष्ट

क्रियाकरी किया

वयदुक्कडाए कायदुक्कडाए कोहाए माणाए
वचन सें दुकृत काया से दुकृत क्रोधथी मानथी
मायाए लोभाए सबकालियाए सव्वमिच्छोवयराए
माया कपट लोभकरी सर्व कालमें सर्व मिथ्याउप
चारक्रिया
सव्वधम्माइक्कमणाए आसायणाए जो मे देवसिओ
सर्व धर्म क्रियाका एहवी आसातनाज्यो में दिवस ने
उलंघन किया विखे
अइयार कओ तस्स खमासमणो पडिक्कमामि
अति चार किया तेहनों हे क्षमावंत श्रमण निवर्तूं छूं
निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥ इति ॥
निन्दूं छूं गरहूं छूं आतमांथी वोसराउ छूं

अथः आगमें तिविहे पन्नत्ते ।

आगमे तिवहे पन्नत्ते तंजहा सुत्तागमे
आगम तीन प्रकारे प्ररूप्यो ते कहे छे सूत्र आगम
अत्थागमे तदुभयागमे ॥ एहवा श्रीज्ञान ने
अर्थ आगम सूत्र अर्थ दोनूं आगम
विषे अतिचार दोष लाग्यो होय ते आलोउ—
जंवाइधं वच्चामेलियं हिणक्खरं अच्चक्खरं पयहीणं
जे कोई बचन मिलाया हीणअक्षर अधिक पदहीण
होय अक्षर

विणयहीणं जोगहिणं घोसहियं सुट्ठुदिण्णं
विनय हीण ते मन वचन उच्चारण चोखो सूत्र
अविनय काया हीण दीनूं अवनीतने

दुट्ठुपडिच्छियं अकालेकउ सिज्झाउ काले
खोटा सूत्रकी इच्छा विनाकाले सज्झाय करी सज्झा
करी यनां

न कउसिज्झाउ असिज्झाए सिज्झाए सिज्झाए
कालमें सज्झाय न असज्झाय में सज्झाय सज्झायमें
करी करी

न सिज्झाए भणतां गुणतां चितारतां चोखतां ज्ञानको
सज्झाय न करी

ज्ञानवंत की आसातनां करी हावे तस्समिच्छामिदुक्कडं ।
तेहनो मिच्छामि दुक्कडं

अथः दंसणश्रीसमकित ।

दंसणश्रीसमकित अरिहंतो यहदेवो जावजीवं
दर्शनश्री ने समकित, तेह अरिहन्त मांहिरे, जाव जीव
दर्शन देव लग

सुसाहुणो गुरुणो जिणपन्नतं तत्तं इयसम्मत्तं
सुध साधु गुरु जिन परूप्यो ते तत्व यह समकित
धम्म

मए गहियं ।
में ग्रहणकिया

एहवा समकितने विषे जे कोई अतिचार लाग्या होय ते आलोउं, जिन वचन सांचा न सरध्या होय, न प्रतित्याहोय, न रुच्या होय, पर दर्शणनी आकांक्षा वंक्षा कीधी होय, फल प्रते संभय संदेह आण्या होय, पर पाषण्डी की प्रशंसा करी हुवे साथवतो परिचय कीधी होय। एहवाम्रो समकित रूपी रत्न उपरे मित्थ्यात्व रूप रंज मैल खेह लागी होय तस्समिच्छामि दुक्कडं।

॥ अथ बारे व्रत ॥

पढमे अणुव्वए थूलाउ पाणाइवायाउ
प्रथम देशथी व्रत मोटको प्राणाति पात को

विरमणं, व्रत पांच बोले करी उलखीजे, द्रव्यथकी
निवर्तवो व्रत

त्रस जीव बेईन्द्री तेईन्द्री चौईन्द्री पंचेन्द्री विन अपराधे आकुटी हणवानी विधि करीनें सउपयोग हणूं नहीं हणाउ नही मनसा वायसा कायसा॥ द्रव्यथकी एहिज द्रव्य, क्षेत्रथकी सर्व क्षेत्रां मांहि कालथकी जावजीवलग, भावथकी राग द्वेष रहित उपयोग सहित गुणथकी संवर निर्जरा, एहवा म्हांरे पहला व्रतनें विषे जे कोई अतिचार दोष लागो होय ते आलोउं।

जीवनें गाढे बन्धन बांध्या होय १ गाढा घाव घाल्या होय २ चामड़ी छेदन किया होय ३ अति भार घाल्या होय ४ भात पाणीनां विच्छोहा कीनां होय ५ तस्स मिच्छामि दुक्कडं ।

बीए अणुव्वए थूलाउ मूसावायाउ विरमणं
बीजो अणू व्रत स्थलथी झूंट बोलवो निवर्तवो

पांचे बोले करी ओलखीजे द्रव्यथकी कन्नालिक १
कन्याके तांई झूठ

गोवालिक २ भोमालिक ३ थापण मोसो ४
गाय भैंसादि कारण झूठ भूमि निमित लेकर झूठ नटवो

कूड़ीसाख ५
झूठी साखी

इत्यादिक मोटको झूठ मर्याद उपरांत बोलूं नहीं बोलाउं नहीं मनसा वायसा कायसा, द्रव्यथकी एहीज द्रव्य, क्षेत्रथकी सर्व क्षेत्रामे कालथकी जाव जीव लग, भावथको राग द्वेष रहित, उपयोग सहित, गुणथकी संवर निर्जरा, एहवा म्हारे दूजा व्रतने विषे जे कोइ अतिचार दोष लागो होय ते आलाऊं ।

किणाही प्रते कूड़ो आलदियो होय १
रहस्य छानी वात प्रगट करी होय २
स्त्री पुरुषनां मर्म प्रकाश्या होय ३

मृषा उपदेश दीधा होय ४

कूड़ो लेख लिख्यो होय ५ तस्स मिच्छामि दुक्कडं

तइये अणुव्वए थूलाउ अदिन्ना दाणाउ विरमणं

तीजो अणूव्रत स्थूलथकी अणदीयो लेवो ते चोरीको निवर्तवो

पांचे बोले करी ओलखीजे द्रव्यथकी खात खणी गांठखोली तालो पडकूंचीकरी वाटपाड़ी पड़ीवस्तु माटकी सधणियां सहित जाणी इत्यादिक मोटकी चोरी मर्याद उपरांत करूं नहीं कराउं नहीं मनसा वायसा कायसा द्रव्यथकी एहिज द्रव्य, क्षेत्रथकी सर्व क्षेत्रां मे, कालथकी जावजीवलगें, भावथकी राग द्वेष रहित, उपयोग सहित, गुणथकी संवर निर्जरा एहवा म्हारे तीजाव्रतमें ज्यो कोई अतिचार लागो होय ते आलोउं।

चोरकी चुराई वस्तु लीधी होय १ चोरने सहाय दीधो होय २ राज विरुद्ध व्योपार कीधा होय ३ कूड़ा तोला कूड़ामापा किया होय ४ वस्तु में भेल सभेल कीधो होय ५ सखरी दिखाय नखरी आपी होय तस्स मिच्छामि दुक्कडं।

॥ इति ॥

चउत्थं अणुव्रए थूलाउ मेहुणाउ विरमणं
चोथो अणुव्रत स्थूलथकी मैथुनकी निवर्तवो

पांचा वालांआरो आलवीजे द्रव्यथकी तो देवता देवांगना सम्बन्धिया मैथुन सेवूं नहीं सेवावूं नहीं तिर्यंच तिर्यंचणी सम्बन्धी मैथुन सेवूं नहीं सेवावूं नहीं मनुष्य सम्बन्धी मैथुन सेवूं नहीं सेवावूं नहीं, मनुष्यणी सम्बन्धी मैथुन सेवाकी मर्याद कीधी छै तिण उपरांत सेवूं नहीं सेवावूं नहीं मनसा वायसा कायसा, द्रव्यथकी एहिज द्रव्य क्षेत्रथकी सर्व क्षेत्रांमें कालथकी जावजीव लगे, भावथकी राग द्वेष रहित उपयोग सहित, गुणथकी संवर निर्जरा एहवा म्हांरे चौथा व्रतमें ज्यो कोई अतिचार दोष लागो होय ते आलोउ।

थोड़ा कालकी राखी परिग्रही सुं गमन कीधो होइ १ अपरिग्रही सूं गमन कीधो होय २ अनेक क्रीड़ा कीधी होय ३ पराया नाता विवाह जोड़्या होय ४ काम भोग तिव्र अभिलाषासे सेव्या होय ५

तस्स मिच्छामि दुक्कडं॥

॥ इति ॥

पंचम अणुव्रए थूलाउ परिग्गहाउ विरमणं
पांचमूं अणूव्रत स्थूलथकी परिग्रह ते धनको निवर्तवो
पांचां बोलां करी ओलखीजे द्रव्य थकी खेतु
उघाड़ी जमीन

वत्थु यथा प्रमाण हिरण सुवन्न यथा प्रमाण
ढकी जमीन जेह प्रमाण कीधो चांदी सोनांको जे प्रमाण कीधो
धन धान यथा प्रमान द्विपद चउप्पद यथा प्रमाण
द्रव्य धाननों जेह प्रमाण कीधो दासदासी हाथी घोड़ा, जे प्रमाण कीधो
द्विक चोपद

कुंभी धातु यथा प्रमाण ।
तांबो पीतल लोहादि नो जेह प्रमाण

द्रव्यथकी एहिज द्रव्य, क्षेत्रथकी सर्व क्षेत्रांमें कालथकी जावजीव लगे, भावथकी राग द्वेष रहित उपयोग सहित, गुणथकी संवर निर्जरा एहवा म्हांरा पांचवां अणुव्रतमें ज्यो कोई अतिचार लागो होय ते आलोउं, खेत्तु वत्थुरो प्रमाण अतिक्रम्यू होय १ हिरण्य सुवर्णरो प्रमाण अतिक्रम्यू होय २ धन धानरो प्रमाण अतिक्रम्युं होय ३ द्विपद चउपदरो प्रमाण अतिक्रम्युं होय ४ कुम्भी धातुरो प्रमाण अतिक्रम्युं होय तस्समिच्छामि दुक्कडं ।

॥ इति ॥

छट्ठो दिशि व्रत पांचां बोलां ओलखीजै द्रव्य थकी तो ऊंची दिशारो यथा प्रमाण, नीची दिशारो यथा प्रमाण, तिरछी दिशारो यथा प्रमाण, यां दिशारो प्रमाण कीधो तेह उपरान्त जायकर पंच आस्रव द्वार सेऊं नहीं सेवाऊं नहीं मनसा वायसा कायसा द्रव्यथकी तो एहिज द्रव्य क्षेत्रथी सर्व क्षेत्रां में कालथकी जाव जीवलग भावथकी राग द्वेष रहित उपयोग सहित, गुणथकी संवर निर्जरा एहवा मांहरे छट्ठा व्रतके विषे जे कोई अतिचार दोषलागो हुवे ते आलोउं।

ऊंची दिशारो प्रमाण अतिक्रम्यो होय १
नीची दिशारो प्रमाण अतिक्राम्यो होय २
तिरछी दिशारो प्रमाण अतिक्रम्यो होय ३
एक दिशा घटाई होय एक दिशा वधाई होय ४
पंथमें आघो संदेह सहित चाल्यो चलायो होय ५
तस्समिच्छामि दुक्कडं।

॥ इति ॥

सातमूं उपभोग परिभोग व्रत पांचां बोलांकरी ओलखीजै, द्रव्यथकी छब्बीस बोलांको मर्याद ते कहै छे

उलणीयां विहं १ दंतनविहं २ फल विहं ३
अंग पूछनादि विधि दांतन विधि फल विधि

अभिंगण विहं ४ उवट्टण विहं ५ मंजण विहं ६
तेलाभिंगादि तेल मालिस | उवटणादि की विधि | स्नानकी विधि

वत्थ विहं ७ विलेवण विहं ८ पुप्फ विहं ९
वस्त्र विधि | विलेपन विधि | पुष्प विधि

आभरण विहं १० धूप विहं ११ पेज विहं १२
गहणां पहरवा विधि | धूपकी विधि | दूध आदि पीवाकी विधि

भक्खण विहं १३ उदन विहं १४ सूप विहं १५
सूखड़ी आदि भक्षण की विधि | चावल की विधि | दालकी विधि

विगय विहं १६ साग विहं १७ महुर विहं १८
विगयकी विधि | सागकी विधि | मधुर तथा वेलादि फल

जीमण विहं १९ पाणी विहं २० मुखवास विहं २१
जीमणकी विधि | पाणींकी विधि | मुखवास तांबूलादि की विधि

वाहण विहं २२ सयण विहं २३ पन्नी विहं २४
गाड़ी प्रमुखकी विधि | सोवाकी विधि पाटा कुरसी आदिपर | पगरखी की विधि

सचित्त विहं २५ द्रव्य विहं २६
सचित्त की विधि | द्रव्यकी विधि

ए छवीस बोलांकी मर्याद करी, जिण उपरान्त भोगवूं नहीं मनसा वायसा, कायसा, द्रव्यथकी एहिज द्रव्य चैत्रथकी सर्व चैत्रांमें, कालथकी जाव

जीवलग, भावथकी राग द्वेष रहित, उपयोग सहित गुणथकी संवर निर्जरा, एहवा मांहरा सातमां व्रत के विषे जे कोई अतिचार दोष लागा हुवे ते आलोऊं पच्चखाणां उपरान्त सचित्तरा आहार किनो होय १ पच्चखाणां उपरान्त द्रव्यरा आहार किनो होय २ पच्चखाणां उपरान्त गहिणां अधिका पहस्या होय ॥ ३ ॥ पच्चखाणां उपरान्त कपड़ा अधिका पहस्या होय ॥ ४ ॥ पच्चखाणां उपरान्त उपभोग परिभोग अधिका भोगव्या होय। तस्समिच्छामि दुक्कडं।

पंदरह करमादान जाणवा जोग छै पण आदरवा जोग नहीं ते कहे छै।

इंगालकम्मे १	वणकम्मे २	साड़ीकम्मे ३
अग्नि करि लूहारादि कर्म	वन कर्म ते वनमे वास, दरखतादि काटवो	सकट कर्म ते गाड़ीप्रमुखनो कर्म
भाड़ी कम्मे ४	फोड़ी कम्मे ५	दन्तवाणिज्जे ६
भाड़ा कर्म	लूपादि कर्म ते नारेल सुपारी पत्थर आदि फोड़वो	दांतको विणज ते व्योपार
लक्खवाणिज्जे ७	रसवाणिज्जे ८	केसवाणिज्जे ६
लाख की वाणिज्य	रस व्यापार ते घी, तैल सहतादि	बाल चमरादि व्योपार

विषवाणिज्जे १० जन्तु पिलणियां कम्मे ११
जहरको व्यापार कल घाणी प्रमुख व्यापार
निलच्छणियां कम्मे १२ दवगीदावणियां कम्मे १३
कसी वधियादि कर्म ते दावानलदेवो कर्म
ज्यानवरांने बाधी कर्म
सर द्रह तलाव सोसणियां कम्मे १४ असइजण
सरोवर द्रह तलाव सोषाया ते कर्म असंजतीनें
पोसणियां कम्मे १५ ॥ इति ॥
पोषावा नो कर्म

ए पन्दरे कर्मादान मर्याद उपरान्त सेव्या सेवाया होय तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥ इति ॥

आठमूं अनर्थ दंड बिरमण व्रत पांचा बोलांकरी ओलखीजे, द्रव्यथकी अवज्झाणचरियं १
भूंडा ध्यान नों आचरवो
पम्माय चरियं २ हिंसपयाणं ३ पावकम्मोवएसं ४
प्रमाद करवो प्राण हिन्सा पाप कर्मको उपदेश

ए च्यार प्रकारे अनरथ दंड आठ प्रकारका आगार उपरान्त सेउं नहीं ते कहे छे ।

आएहिउवा १ नाएहिउवा २ आघारिहिउवा ३
आपणे हित न्यातिके हित घरके हित
परिवारहिउवा ४ मित्तहिउवा ५ नागहिउवा ६
परिवार के हित मित्रके हित नाग देवता निमित्त

भूतहिउवा ७ जक्खहिउवा ८
भूत देवता जक्ष देवता
निमित्त निमित्त

द्रव्यथकी एहिज द्रव्य चेत्रथकी सर्व चेत्रांमें कालथकी जाव जीव लग, भावथकी राग द्वेष रहित उपयोग सहित, गुणथकी संवर निर्जरा, एहवा म्हांरा आठमां व्रत के विषे जे कोई अतिचार दोष लागोहुवे ते आलोउं ।

कंदर्प्पनी कथा कीधी होय १ भंडकुचेष्टा कीधीहोय २
काम क्रिड़ाकी कथा करवो भांडनीपरै कुचेष्टाकरी होय
मुखसे अरि वचन बोल्या होय ३ अधिकरण
मुखसे खोटा वचन बोल्या होय नाताजोड़कर
जोड़ मुकाया होय ४ उपभोग परिभोग
तुड़ाया तथा स्त्री भरतार एकवार भोग वारम्वार भोग
नो विरह कियो में आवै ते में आवै ते
अधिका भोगव्या होय ५ तस्स मिच्छामि दुक्कडं
मर्याद उपरांत अधिक तो मिच्छामि दुक्कडं
भोग्या होय ते

॥ इति ॥

नवमो सामायक व्रत पांचां बोलांकरी ओलखीजै
करेमि भन्ते सामाइयं सावज्जं जोगं पच्चखामि
करूं छूं मैं हे भगवंत सामायक सावद्य जोग पच्चखाण

जाव नियम (मुहूर्त एक) पज्जवासामो दुविहेणं
यावत नियम एक मुहूर्त ते सेऊं छूं दोय करण
दोय घड़ी

तिविहेणं नकरेमि नकारवेमि मनसा वायसा
तीन जोग नहीं करूं नहीं कराऊं मनसे वचन से

कायसा तसभंते पडिक्कमामि निन्दामि गरिहामि
शरीरसे तिणसूं हे पड़िकमूं निन्दूं छूं ग्रहणा ते
निषेधूं छूं
भगवान

अप्पाणं वोसरामि ॥
पाप ते आतमांनेवोसराऊं छूं

द्रव्यथकी कने राख्या ते द्रव्य नेलथकी सर्व नेवांमें कालथकी एक मुहूर्त तांई भावथकी राग द्वेष रहित उपयोग सहित गुणथकी संबर निर्जरा एहवा नवमां ब्रतके विषे जे कोई अतिचार दोष लागो हुवे ते आलोउं ।

मन बचन कायाका माठा जोग प्रवर्ताया होय १ पाड़वा ध्यान प्रवर्ताया होय २ सामायक में समता नहीं करी होय ३ अण पूगी पारी होय ४ पारवो विसार्यो होय ५ तस्स मिच्छामि दुक्कडं ।

॥ इति ॥

दशमों देशाविगासी ब्रत पांचां वोलांकरी ओल-खीजै द्रव्यथकी दिन प्रते प्रभातथी प्रारंभीनें पुर्वादि

क्षेत्र दिशिरी मर्याद करी तिण उपरान्त जाई पांच आस्रव द्वार सेऊं नहीं सेवाऊं नहीं तथा जेतली भोमिका आगार राख्या तिणमें द्रव्यादिकरी मर्याद करी तिण उपरान्त सेउं नहीं सेवाउं नहीं मनसा वायसा कायसा द्रव्यथकी एहिज द्रव्य क्षेत्रथकी सर्व क्षेत्रां में कालथकी जेतलो काल राख्यो भाव थकी राग द्वेष रहित उपयोग सहित गुणथकी संवर निर्जरा एहवा म्हांरे दशमा व्रतके विषे जे कोई अतिचार दोष लागोते आलोउं ।

नवौं भूमिका वारलौ वस्तु अणाई होवे १ मुक लाई होवे २ शब्दकरी आपो जणायो होय ३ रूप देखाई आपो जणायो होय ४ पुद्गल न्हाखी आपो जणायो होय तस्स मिच्छामि दुक्कडं ।

॥ इति ॥

इग्यारमूं पोषद व्रत पांचां बोलांकरी ओलखीजे द्रव्यथकी ।

असण पाण खादिम स्वादिमनां पच्चखाण
आहार पाणी मेवादिक पान सुपारीदिक को पच्चखाण
अवम्मनां पच्चखाण उमकमणी सुवन्ननां पच्चखाण
मैथुन सेवाका त्याग वोसरायो हुयो रत्न सोना का पचखाण
माला वणग विलेवन नां पच्चखाण
पुष्पमाला गुलाल रंगादि चंदनादिक नो विलेपनका त्याग

सत्थ मुसलादि सावज्ज जोगरा पञ्चखाण
सस्त्र मूसलादिक सावद्य जोगका पञ्चखाण

इत्यादि पञ्चखाण, करने द्रवाराख्या जिणा उपरान्त पंच आस्रव द्वार सेउं नहीं सेवाऊं नहीं मनसा वायसा कायसा द्रव्यथी एहिज द्रव्य क्षेत्रथी सर्व क्षेत्रांमें कालथकी (दिवस) अहो रात्रि प्रमाण भाव थकी राग द्वेष रहित उपयोग सहित गुणथकी संवर निर्जरा एहवा म्हारे इग्यारमां व्रतके विषे जे कोई अतिचार दोष लागो होवे ते आलोउं ।

सेज्जा संथारो अपड़िलेहाहोय दुपड़िलेहा
सोवाकी जगां विसतरो पड़िलेहा नहीं होय आच्छीतरह नहीं

होय १ अप्रमार्ज्या होय दुप्रमार्ज्या होय २
पड़लेहना नहीं प्रमार्ज्या आच्छीतरह नहीं प्रमार्ज्या
करी

उच्चारपासवणरी भूमिका अपड़िलेहीहोय दुपड़ि
छोटी बड़ी नीतको जमीन नहीं पड़िलेही होय अथवा

लेही होय ३ अप्रमार्जी होय दुप्रमार्जी होय ४ पोषहमें निन्दा विकथा कषाय प्रमादकरी होय ५ तस्स मिच्छामि दुक्कडं ।

॥ इति ॥

बारमूं अतिथि संविभाग व्रत पांचां बोलांकरी ओलखीजे द्रव्यथकी ।

समणे निग्गंथे फासू एसणीज्जेणं असणं १
श्रमण निग्रन्थ ने फासुक निर्दोष आहार
अचित

पाणं २ खादिमं ३ स्वादिमं ४ वत्थ ५ पडिग्गह ६
पाणी मेवो लौंग सूपारी आदि वस्त्र पात्रो

कंवलं ७ पाय पुच्छणं ८ पाड़ियारा ९ पीढ
कांवलो पग पूंछणो जाचीनें पाछा पाट
भोलावै ते

फलग १० सिज्या ११ संथारो १२ औषद १३
बाजोटादि जमीन जायगां त्रणादिक १ दवाई

भेषद १४ पड़िलाभमाणे विहरामि ॥
चूर्णादि घणीं मिली प्रतिलाभ तो थको विचरूं

इत्यादिक चवदे प्रकारनूं दान शुद्ध साधुनें देउं देवाउं देवतां प्रतेभलो जाणूं मनसा वायसा कायसा द्रव्यथकी पहिज कलपता द्रव्य, खेत्रथकी कलपे तके खेतमें, कालथकी कलपे जिन कालमें, भावथकी राग द्वेष रहित उपयोग सहित, गुण थकी संवर निर्जरा, एहवा म्हांरा वारमां व्रत के विषे जो कोई अतिचार दोष लागो होवे ते आलोउं सूजती वस्तु सचित पर मेली होय १ सचित्तथी ढांकी होय २ काल अतिक्रम्यो होय ३ आपणी वस्त पारकी पारकी

वस्तु आपणी कीधी होय ४ आवैं बैठ साधु साध्वीयां की भावनां नहीं भावी होय तो मिच्छामि दुक्कडं ।

॥ इति ॥

अथ संलेखणा की पाटी ।

इह लोगा संसह पउगो १ परलोगासंसह
इह लोककी जशकी तथा द्रव्यादिक की इच्छा — पर लोकमें सुखकी

पउगो २ जीविया संसह पउगो ३ मर्णाउ संसह
वांछा — जीवत की इच्छा — मरण की

पउगो ४ काम भोगा संसहपउगो ५ मासु
इच्छा — काम भोगकी इच्छा — ए सुजनें

ज हुज्ज मरणान्तैं ।
मर्णान्त तक मत होज्यो । ॥ इति ॥

अथ अठारे पाप ।

प्राणातिपात १ मृषावाद २ अदत्तादान ३ मैथुन ४ परिग्रह ५ क्रोध ६ मान ७ माया ८ लोभ ९ राग १० द्वेष ११ कलह १२ अभ्याख्यान १३ पैशुन्य १४ पर परिवाद १५ रति अरति १६ माया मोसो १७ मिथ्या दर्शन सल्य ॥ इति ॥

तस्स सव्वस देवसी यस्स आयारस्स दुचिन्तियं दुभासियं
ते सर्व दिवसमें अतिचार खोटी चिन्तवनां खोटी भाषा

दुचिट्टीयं आलो यंते पड़िक्कमामि निंदामि
खोटी चेष्टा कायाकी आलोउ तेह पडिकमेउं निन्दू
गरिहामि अप्पाणं वोसरामि ॥
ग्रहणा करू' पाप कर्मथी आतमां नें वोसराउं

॥ इति ॥

अथ तस्सधम्मस ।

तस्स धम्मस्स केवली पन्नत्तस्स अब्भुट्ठि एमि
तेह धर्म केवली परूप्यो तेहने विषै उठ्यो छूं
आराहणाए विरउमि विराहणाए सव्वेतिविहेणं
आराधन निमित्त निवर्तू छूं वीराधनाथी अतिचार सर्व
त्रिविध करी
पडिक्कंतो, वंदामि जिन चौवीसं ॥
पड़िकमूं छूं वांदूं छूं जिनराज चौवीस ।

॥ इति ॥

अथ मंगलिक ।

चत्तारि मंगलं अरिहन्ता मंगलं सिद्धा मंगलं
च्यार मंगलिक अरिहन्त मंगल छै सिद्ध मंगलकारि छै
साहु मंगलं केवली पन्नत्तो धम्मो मंगलं ॥
साधु मंगल केवली प्ररूप्यो धर्म ते मंगल
चत्तारिलोगुत्तमा अरिहन्ता लोगुत्तमा
ए च्यार लोकमें उत्तम जाणवा अरिहन्त लोकमें उत्तम
सिद्धा लोगुत्तमा साहुलोगुत्तमा केवलि
सिद्ध लोकमें उत्तम साधु लोकमें उत्तम केवली

पन्नत्तो धम्मो लोगुत्तमा चत्तारि सरणं
प्ररूप्यो धर्म ते लोक में उत्तम च्यार शरणां
पवज्जामि अरिहन्ता सरणं पवज्जामि सिद्धा
ग्रहणकरूं अरिहन्तों का शरणां ग्रहण करताहूं सिद्धाका
सरणं पवज्जामि साहु सरणं पवज्जामि केवलि
शरणा लेता हूं साधुका शरण हे केवली
पन्नत्तो धम्मो सरणं पवज्जामि।
प्ररूपित धर्मका शरण ग्रहण करता हूं

च्यारों सरणा एसगा अवर न सगो कोय जे भव प्राणी आदरे अच्चय अमर पद होय।

॥ इति ॥

अथ देवसी प्रायश्चित।

देवसी प्रायश्चित विसोइनार्थं करेमि काउसग्ग
दिवसनों प्रायश्चित शुद्ध करवाने अर्थे करू छूं काउस्सग

॥ इति प्रतिक्रमणं ॥

अथ पडिक्रमणां करने की विधि।

प्रथम चौवीस्थो करणो जिणामें

१ इच्छामि पड़िक्कमेउ की पाटी। २ तस्सुत्तरीकी पाटी। ध्यानमें इच्छामि पड़िक्कमेउ की पाटी मनमें चितारकर एक नवकार गुणनों। ३ लोगस्सउज्जोगरे की पाटी। ४ नमोत्थुणं की पाटी।

१ प्रथम आवसग्ग सामायक में ।

१ आवस्सई इच्छामिणं भंते ।

२ नवकार एक ।

३ करेमि भंते सामाईयं ।

४ इच्छामिठामि काउसग्गं ।

५ तस्सुत्तरी की पाटी ।

ध्यानमें ९९ नन्नाणवे अतिचार ।

आगमें तिविहे पन्नंते की पाटी तिणमें ज्ञानका चवदे अतिचार ।

दंसण श्रीसमत्ते की पाटी तिणमें समकितका ५ अतिचार ।

बारे व्रतांका अतिचार ६० साठ तथा १५ पंदरह कर्मदान ।

इह लोग संसह पउगेकी पाटी अतिचार ५ संलेखणांका ।

अठारे पाप स्थानक कहणा ।

इच्छामि ठामि आलोउं जो मैं देवसो आयारकाउ ए पाटी कहणी ।

एक नवकार कह पारणो ।

॥ इति प्रथम आवसग्ग समाप्त ॥

दूसरा आवस्सग की आज्ञा ।

लोगस्सकी पाटी ।

॥ इति दूजो आवस्सग समाप्त ॥

तीजा आवस्सगकी आज्ञा ।

दोय खमा समणां कहणा ।

॥ तीजो आवस्सग समाप्त ॥

चौथा आवस्सगकी आज्ञा ।

उभाथकां ध्यानमें कह्या सो प्रगट कहणा ।

८ आठ पाटी बेठा थकां कहणी जिणांकी बिगत ।

१ तस्स सव्वस्सकी पाटी ।

२ एक नवकार ।

३ करेमि भंते सामाईयं की पाटी ।

४ चत्तारि मंगलंको पाटी ।

५ इच्छामि ठामि पड़िक्कमेउ जो मैं देवसी ।

६ इच्छामि पड़िक्कमेउ की पाटी ।

७ आगमें तिविहे की पाटी ।

८ दंसण श्री समकीत्ते की पाटी ।

ए आठ पाटी कही, बारे ब्रत अतिचार सहित कहणा ।

पांच संलेखणा का अतिचार कहणा ।

अठारे पाप स्थानक कहणा ।

इच्छामि ठामि पडिक्कमेउ जो मैं देवसीको पाटी कहणी तस्स धम्मस केवली पन्नतस्सको पाटी, दोय खमासमणां कहणां।

पांच पदांको वंदना कहणी।

सातलाख पृथ्वीकाय सातलाख अप्पकाय इत्यादि खमत खामणांको पाटी।

॥ चौथो आवस्सग समाप्त ॥

पंचमा आवसग्गको आज्ञालई कहै।

१ देवसी प्रायश्चित् विसोधनार्थं करेमिकाउसग्ग।

२ एक नवकार।

३ करेमिभंते सामाइयं की पाटी।

४ इच्छामि ठामि काउसग्गं की पाटी।

५ तस्सुत्तरी की पाटी।

ध्यानमें लोगस्स कहणांकी परमपराय रीतीसे।

प्रभाते तथा सांझ वक्त ४ च्यार लोगस्सको ध्यान।

पखीनें १२ बारे लोगस्स को ध्यान।

चौमासी पखी नें २० वीस लोगस्सको ध्यान समत्सरीने ४० चालीस लोगस्सको ध्यान।

ध्यान पारी लोगस्सको एक पाटी प्रगट कहणी।

२ दोय खमासमणां कहणा।

॥ इति पंचमं आवस्सग समाप्त ॥

छठा आवसग्गकी आज्ञालेई कहणा तेहनी बिगत ।

गये कालनूं पड़िक्कमणों बर्तमान कालमें समता आगमें कालका पच्चखाण यथा शक्ति करणां ।

समाई १ चौवीसत्थो २ बंदना ३ पड़िक्कमणो ४ काउसग्ग ५ पच्चखाण ६ यां छउं आवसग्गां में ऊंची नीची हिणी अधिको पाटो कही होय तस्स मिच्छामि दुक्कडं ।

दोय नमोत्थुणं कहणां जिणमें पहिला में तो सिद्धिगई नाम धेयं ठाणं संपत्ताणं नमो जिणाणं ।

दूजा नमोत्थुणं में सिद्धिगई नाम धेयं ठाणं संपवेकामो नमो जिणाणं ।

॥ पड़िक्कमणो समाप्त ॥

❀ च्यार निक्षेपां री चौपाई ❀

❀ दोहा ❀

अरिहंत सिद्धनें आयरिया, उवज्झाय नें सब साध।
यांरा गुण ओलखावणां करे, ते पामें परम समाध ॥१॥
केई हिंसा धर्मीं जीवड़ा, माने निगुणा देव धर्म।
मारे छः काय ना जीवानें, बांधे अशुभ कर्म ॥ २ ॥
नाम थापना द्रव्य भाव नें, ए माने निक्षेपा च्यार।
त्यांरी पिण समझ पड़े नहीं, त्यारा घटमें घोर अंधार
॥ ३ ॥ ए च्यार निक्षेपां रो नाम ले, भोला नें देवे
भरमाय। त्यांरी श्रद्धा नो प्रश्न पूछ्यां थका, ते झूठे
बोले फिर जाय ॥ ४ ॥ ते झूठ बोले छे किण विधे,
किण विध फिर फिर जाय। हिवे नाम निक्षेपा रो
निर्णय कहूं, ते सुणज्यो चित लाय ॥ ५ ॥

॥ ढाल पहली ॥

(धीज करे सीता सती रे लाल। एदेशी)

एह ढेढ़ डूम ने थोरी सरगरा रे लाल, भील
मीणा नें मुसलमान रे, सुगण नर चंडाल धुराधुर सर्व

जोत में रे लाल, कोइ कांरो नाम छै भगवान रे, सु० नाम निक्षेपा रो निर्णय करो रे लाल ॥ १ ॥ जे गुण विना नाम माने तेहनेरे लाल, सगला नाम भगवान वंदनीक रे सु० तिणने पूछीजे सगलो न्यातने रे लाल, करणी नाम भगवान री ठीक रे, सु० ना० ॥ २ ॥ पछै गुण बिना नाम भगवानरा रे लाल, जो उन बांदे सगला पाय रे, सु० तो उण श्रद्धा थापी ते उथप गई रे लाल, ते पिण गहिला ने खबर न काय रे, सु० ना० ॥ ३ ॥ कोई जोगी संन्यास्यांरा नाम छै रे लाल, सिद्धगिरी ने सिद्धनाथ रे, सु० जे गुण विना नाम माने तिके रे लाल, तिण सिद्ध ने क्यों न बांदे जोड़ी हाथ रे, सु० ना० ॥ ४ ॥ कोई करिं मिनखां रे कारटीया रे लाल, ते पिण बाजे आचारज लोकांरे मांहि रे सु० जे गुण बिन नाम माने तिके रे लाल, क्यूं न बांदे तिण आचारज रा पाय रे सु० ना० ॥५॥ कोइक ब्राह्मण लोक में रे लाल, त्यांरी जातां बाजे उपाध्याय रे सु० जे गुण बिना नाम माने तिके रे लाल; क्यूं न बांदे उपाध्याय रा पाय रे सु० ना० ॥६॥ कोई साध बाजे भगति ढुंढिया रे लाल, ते निगुणा छै रहित समाध रे सु० ते गुण बिना नाम माने तिके रे लाल, क्यूं न बांदे एहवा साध रे सु० ना० ॥ ७ ॥

ए नाम निक्षेपा पांचूं गुण विना रे लाल, त्यांरा पूछै पूछै ने नाम रे सु० गुण बिना माने नाम तेहने रे लाल, वांदे पूजें करण गुण ग्राम रे सु० ना० ॥ ८ ॥ ए नाम निक्षेपा पांचूं गुण विना रे लाल, जो उन माने तो श्रद्धा मांहि फूट रे सु० भाव भगत कर वांदे नहीं रे लाल, तो माननि नाम निक्षेपो गयो ऊठ रे सु० ना० ॥ ९ ॥ गुण विना नाम माने तिके रे लाल, तेहने काम पड्यां दे उथाप रे सु० पग पग झूठ बोले घणो रे लाल, कर रह्या कुगुरु बिलाप रे सु० ना० ॥ १० ॥ यां ने नाम चन्दन रो कह्यां थकां रे लाल, जब तो बोलै छै एम रे सु० कहै नाम छै तो पिण गुण नहीं रे लाल, तिणने शीश नमावां किम रे सु० ना० ॥ ११ ॥ जे नाम निक्षेप मानता रे लाल, ते गुण रो शरणो ले किण न्याय रे सु० यांरी खोटी श्रद्धा चटकै घणी रे लाल, जब साच बोल्या आया ठाम रे सु० ना० ॥१२॥ ते कहिवा ने ठाम आविया रे लाल, मांहे न भीजे मूढ़ रे सु० त्यारे लागा डंक कुगुरां तणां रे लाल, ते किण विध छोड़े रूढ़ रे सु० ना० ॥ १३ ॥ ए नाम निक्षेपो कर रह्या रे लाल, तिणरी खबर पिण काय रे सु० भरमाया कुगुरां तणां रे लाल, ते चोड़े भूला जाय रे सु० ना० ॥ १४ ॥

सोनो रूपो नाम मिनखरो रे लाल, ते पिण कहिवा नो छै नाम रे सु० जो काम पड़े गहणां तणो रे लाल, ते नावे गहणा रे काम रे सु० ना० ॥ १५ ॥ किणही मिनख रो नाम हीरो पनो रे लाल, ते नावे गहणा रे काम रे सु० जे काम पड़े जड़ाव रो रे लाल, ते नावे जड़ाव रे काम रे सु० ना० ॥ १६ ॥ किण ही मिनख रो माणक मोती नाम छै रे लाल, ते पिण कहविवा नो छै नाम रे सु० जो पहरै सिणगार करवा भणी रे लाल, ते नावे पहिरण रे काम रे सु० ना० ॥ १७ ॥ केशर कस्तूरी नाम छै मिनखरो रे लाल, ते पिण कहिवा नो नाम रे सु० जो काम पड़े विलेपण गंध री रे लाल, नावे विलेपन गंध रे काम रे सु० ना० ॥ १८ ॥ किणही मिनखरो नाम लाडू दियो रे लाल, ते पिण कहिवा नो छै नाम रे सु० ते भूख लागे तिण अवसरे रे लाल, तो नावे खावा रे काम रे सु० ना० ॥ १९ ॥ किणहीक लकड़ी रो नाम घोड़ो दियो रे लाल, ते पिण कहिवा नो छै नाम रे सु० जो काम पड़े चालण तणो रे लाल, ते नावे चढ़ण रे काम रे सु० ना० ॥ २० ॥ इत्यादिक जीव अजीव रा रे लाल, दीधा नाम अनेक रे सु० पिण गरज सरी नहीं नामसूं रे

लाल, समझी आया विवेक रे सु० ना० ॥ २१ ॥ ज्यूं गुण विना नाम भगवान छै रे लाल, ते पिण कहिवा नो छै नाम रे सु० ना० ॥ २२ ॥ नाम भगवान सर्व जीव रो रे लाल, दियो अनन्तो वार रे सु० पिण गुण विना नाम भगवान सूं रे लाल, न सरी गरज लिगार रे सु० ना० ॥ २३ ॥ गुण विना नाम भगवान स्यूं रे लाल, न टलै दुर्गत दोष रे सु० जो त्यांने वंदियां सद्‌गत होवे रे लाल, तो सगला जीव जाता मोक्ष रे सु० ना० ॥ २४ ॥ गुण विना नाम मान्यां थकां रे लाल, गरज सरे न लिगार रे सु० गरज सरे एक भाव स्यूं रे लाल, जोवो सूत संभार रे सु० ना० ॥ २५ ॥ गुण विना नाम माने तेहने रे लाल, बोल्यो नहीं टीसे बंध रे सु० फिरती भाषा बोले घणो रे लाल, ते होय रह्यो लोह अंध रे सु० ना० ॥ २६ ॥ गुण करने अरिहंत छै रे लाल, गुण करने सिद्ध साध रे सु० त्यांरा गुण नें नाम एकहीज छै रे लाल, त्यांने वांद्यां परम समाध रे सु० ना० ॥ २७ ॥ किणरी माता रो नाम सरूपा दियो रे लाल, तेहज नाम असन्नी रो हुव जाय रे सु० जे गुण विना नाम माने तेहने रे लाल, यां दोयां ने गिण लेणी माय रे सु० ना० ॥ २८ ॥ के दोयां ने

गिण न लेणी असन्नी रे लाल, उण री श्रद्धा सामी जोय रे सु० असन्नी ने मा जूठी गुणे रे लाल, तिण नाम निक्षेपो दियो खोय रे सु० ना० ॥ २९ ॥ किण रे बाप री नाम धनरूप छै रे लाल, त्यारे मांहो मांहि हेत मिलाप रे सु० जे गुण बिनां माने नहीं रे लाल, सगला छै धनरूपा बाप रे सु० ना० ॥३०॥ सगला धनरूपा नाम तेहने रे लाल, संकतो लेखवे नहीं बाप रे सु० श्रो धनरूप स्यूं दुजागी करे रे लाल, तिण नाम निक्षेपो ताहि दियो उथाप रे सु० ना० ॥ ३१ ॥ बहन बहनोई काका बाबादिके रे लाल, यांरा नाम छै नास अनेक रे सु० त्यांरा नाम प्रमाणें नहीं लेखवे रे लाल, तो छोड़ देणी कूड़ी टेक रे सु० ना० ॥ ३२ ॥ गुण और नाम और छै रे लाल, ते कहि बावत लावण काम रे सु० कोई भूलो मत भूलज्यो रे लाल, सुण सुण एहवा नाम रे सु० ना० ॥ ३३ ॥ कोईक नाम कहिवां ने दिया रे लाल, कोईक गुण निपन्न छै नाम रे सु० ते कहिवा ना नाम कहवा भणी रे लाल, गुण निपन आवे काम रे सु० ना० ॥३४॥ इम कहिने कितरो वाहूं रे लाल, नाम निक्षेपा रो विस्तार रे सु० जो गुण बिना नाम वांदे नहीं रे लाल, तिण सफल कियो अवतार रे सु० ना० ॥३५॥

॥ दोहा ॥

गुण विना नाम दियो लोकीक में, ने प्रत्यक्ष लीजो देख।
थोड़ासो परगट करूं, ते सुणने मत करज्यो द्वेष॥

॥ ढाल दूजी ॥

(चौपई नी देशी)

नाम दियो छे राधाकिशन। सेवतो जावे सातों विसन ॥ १ ॥ नाम दियो छे गोविंदराय। फिरै चरावे पराई गाय ॥ वाई रो नाम दियो छे लाछ। पिण मांगी न मिले कुलड़ी छाछ ॥ २ ॥ सासू कहै म्हारी कपूर दे वहु। सांभल नाम वोलावे सहु ॥ नाम नाम दियो कस्तूरी जास। मांहे नहीं हींग री वास ॥ ३ ॥ टंट घणी न वांका निहाले। दुर्भिक्ष पड़ियो देश दुकालें ॥ नाम दियो छे जगत पाल। पिण सघलां पहली वेच्या वाल ॥ ४ ॥ किणहीक नाम सोनो दियो। साथ विना एकलो चालियो ॥ घणी दरिद्र वहेज लार। नाउ ने कदे उठे न धार ॥ ५ ॥ वाई रो नाम दियो कुशाल। पिण मिटियो नहीं सोग रो साल ॥ कुढ़ कुढ़ नें दिन पूरा करे। कूवे वावड़ी पड़ी मरे ॥ ६ ॥ नाम दियो छे धर्मशाह। परभव नी नहीं परवाह ॥ कूड़ कपट लंपट चित

धरे । इसी धर्मी नरकां पड़े ॥ ७ ॥ लोक कहै या लछमी बाय । ऊगा सूरज छाया ने जाय ॥ किणहिक नाम सरूपा दियो । एक कालो नें कुजस लियो ॥८॥ सुन्दर नाम दियो छै अनूप । खोटो बोले वली कुरूप ॥ कुत्ता चाटे छै हांडिया । सेडे करने घर मंडिया ॥९॥ ज्यूं नाम दियो अरिहंत भगवान । पिण मांहि न दीसे अकल गिनान ॥ तरण तारण री समझ न काय । तिण नें मूरख वांदे जाय ॥ १० ॥ इण अनुसारे दीधा नाम अनेक । त्यां सूं गरज सरे नहीं एक ॥ ते सुणने समझे चतुर सुजाण । पिण मूरख न माने मांडे ताणां ताण ॥ ११ ॥

॥ दोहा ॥

नाम निखेपो ओलखावियो, हिवे थापनो अधिकार । गुण विन देखी थापना, भूला भरम संसार ॥ १ ॥ वांदे पूजे तीर्थंकर नी थापना, त्यांरे आकारे पत्थर सो राय । सोना पीतल धात अनेक सूं, त्यांरे आकारे विम्ब भराय ॥ २ ॥ वली कपड़ादिक कागद ऊपरे, भगवंत रो मांडे आकार । तिण ने शीश नमाय वन्दना करे, जाणे हुवो लाभ अपार ॥ ३ ॥ कहे जिन प्रतिमा जिन सारखी, फेर न जाणो कोय । दीयां ने वांद्यां थकां, लाभ सरीखो होय ॥ ४ ॥ कहे

गुण लारे पूजा कही, तेहि निगुण पूजंता जाय। ते चोड़े भूला मानवी, तेहनें किम आणीजे वाय ॥ ५ ॥ कदे तो कहे गुण भणी, कदे कहे वांदा आकार। त्यांरी श्रद्धा मांहे फूट फजीत्यां घणी, ते कहितां न आवे पार ॥ ६ ॥ जे गुण विन आकार न वांदतां त्यांने प्रश्न पूछे जाय। तो फिर जावे झूठ बोले घणो, ते सुणज्यो चितलाय ॥ ७ ॥

॥ ढाल तीजी ॥

(जिया अणकंपा आज्ञा मांहिए। एदेशी).

चक्रवर्त्ती बलदेव वासुदेवा, ते तो तीन खंड छः खंड रा सिरदार। इत्यादिक मनुष्य ने सर्व जुगलिया, ते सगलाई छै भगवंत आकार॥ थापना निक्षेपा रो निरणो कीजो ॥ १ ॥ भवनपति ने व्यंतर देवा ज्योतिषी देव नें विमाणिक वखाणो। ए पिण छै भगवंत रे आकारे, समचोरस छै सगलां रो संठाणो ॥ था० ॥ २ ॥ जे गुण विना आकार भगवान रा वांदे त्यांरे लेखे वांदणा कुण कुण आकार। समचोरस संठाण रा देवां ने सिनख हर्ष धरे वांदणा वारम्वार ॥ था० ॥ ३ ॥ जो हर्ष धरे त्यांने वांदे नहीं, तो उणरी श्रद्धा उणरे लेखे खोटी। आप थापी छै ते आप उथापे,

आपण रे अंधारे भोलप मोटी ॥ था० ॥ ४ ॥ पत्थर धात चित्रामादिक ना करे करवा दे भगवान। आकार तो लाद गोबर धूर कोयलादिक ना, आकार करे वन्दना वारम्बार ॥ था० ॥ ५ ॥ जो गोबरादिक आकार ने वांदे, तो आपरी श्रद्धा रो आप अजाण। पत्थर धात चित्रादिक ना आकार देखी मूढ़ भ्रम भूलाण ॥ था० ॥ ६ ॥ कोई थापना सचित ने अचित द्रव्य नें, भगवंत रे आकार बणावे चेरो। तिण आगे आप पांचूं अंग नमे नै, नमोत्थुणो कहै मूढ़ होय होय नेड़ो ॥ था० ॥ ७ ॥ तिण री सेवा पूजा करे भाव भगत स्युं, एहज मांहरी आवागमन निवारे। ते तो एकेन्द्री जीव अज्ञानी, ते तरे नहीं ते किण विध तारे ॥ था० ॥ ८ ॥ आचारज उवज्झाय साधु गुणवंता, त्यांरे आकारे दीसे ढूंढिया भेषधार। जे गुण विन आकार ने वांदे तो, क्यूं न वांदे यांरो देख आकार ॥ था० ॥ ९ ॥ जे जे आकार मिनख तणा के, तेहिज आकार साधांरो जाणो। जे गुण बिना आकार नें वांदे तो, सर्व जीवा रे क्यों न वांदे आयाणो ॥ था० ॥ १० ॥ तोऊ सर्व मिनखां ने नहीं वांदे तो, तिण थापना आकार दियो उठाय। ए अकल विहूणा श्रद्धा परूपे, ते पग पग झूठ बोले फिर जाय ॥ था० ॥ ११ ॥ जे आकार वांदण

रो कहै कोई इण नें तब तो सूधो बोलो आखसूंपमो। कहै आकार के तो पिण गुण नहीं मांहि, तिणने शीश नमावां किसो ॥ था० ॥ १२ ॥ जे थापना आकार मांने निक्षेवलु, ते गुणरो शरणो लो छै किण न्यायो। थांरा खोटो श्रद्धा अटक्या जाब नावे, जब साच बोलो जब आयो छ ठायो ॥ था० ॥ १३ ॥ ते कहिवा ने ठाय आया जाणा, पिण मनसें न भीजे अज्ञानी मूढ़। त्यारे कुगुरु तणा डंक कारड़ा लाग्या, ते पिण किण विध छोडि खोटो रूढ़ ॥ था० ॥१४॥ ए थापना थापना कार रह्या मूरख, पिण स्थापना री समझ न कायो। कुगुरां रा भरमाया मूरख, चोड़े मारग भूला जायो ॥ था० ॥ १५ ॥ जो ऊ हाथो मकल्यां भांत कपड़ो वेचे जब, ज्यांरा फाड़ो फाड़ कर दोय टुकड़ा। जे गुण विन आकार वांदे तिण लेखे, तो हाथी मकल्यां मारण रा टुका ॥ था० ॥ १६ ॥ कहै हाथी मकल्यां भांत कपड़ो फाड़्या स्यूं हाथी मकल्यां मारणो न लागे कारसो। तो भगवंत रे आकारे प्रतिमा वांद्यां, तिण में निश्चय म जाणो धरमो ॥ था० ॥ १७ ॥ किण रा सगा सनेही व्याही नातीला, तिणरे रेतरा लाडु वणाय ने मेले। ते भगवंत रे आकार प्रतिमा पूजे। ते रेतरालाडु पाछा काय ने ठेले ॥ था० ॥१८॥ कहै

रेतरा लाडु में सवाद नहीं छै तो प्रतिमा में गुण मूल म जाणो। गुण बिन बसतु ते काम न आवे, समझो रे थे मूढ़ अयाणो ॥ या० ॥ १६ ॥ पत्थर कोरनें प्रतिमा बणावे, तिण प्रतिमा ने भगवंत ज्युं सेवे। तिण ने तिणही पत्थर रा रूपया देवे तोऊं चोखा रूपया में क्यूं नहीं लेवे ॥ या० ॥ २० ॥ घृत तैलादि करी सोदो देइ नें, पथर रा रूपया ले पले नहीं बांधे। ते भाठा तणा भगवत वणाया, तोऊ भगवंत किण लेखे बांदे ॥ या० ॥ २१ ॥ भाठा रा रूपया लेई सोदो देवे तो, बीं में पड़ जावे जावकतो टोटो। भाठा रा प्रभु बांदे तिण रो मत, खोटो रे निश्चेवल खोटो ॥ या० ॥ २२ ॥ रूपा तणा रुपिया रे ठिकाणें, पत्थर रा रूपया कदे न हाले। तो तरण तारण भगवंतरी ठोर, भाठा रा भगवंत किण विध चाले ॥ या० ॥२३॥ भाठा रा रूपया ले घाले खजाना, त्यारे काम पड़े जब घणो सिद्दावे। ज्युं भाठारा भगवंत थापना बांदे, तो परभव मांहे घणो पिसतावे ॥ या० ॥ २४ ॥ परख बिना खाय रूपया में खोटो, ते तो रूपा तणो भोल रे प्रतापो। ए भगवंत में खोटा खाधा किण लेखे, आ तो प्रतिमा दीसे पत्थर री थापो ॥ या० ॥ २५ ॥ कोईक कागद ऊपर काटके

अलंकै, मांहि भल घोड़िया असवार बणावै। त्यारे सुरमणा रो आस न दीसै, वैरो दुश्मन हटावन अरथ न आवै॥ था०॥ २६॥ ज्युं चौबीस आदि दे अनेक तीर्थंकर जिण रो यथातथा आकार बणावे। त्यां मे ज्ञानादिक गुण आसन न दीसै, ए तारण तरण नें काम न आवे॥ था०॥ २७॥ जोऊ राखे भरोसो कागद रा कटकारो, तो इज्जत जाय रहे नहीं आबो। ज्युं प्रतिमां ने वांदे तिण रे भरोसे, ते चहुंगतमें होसी घणा खरावो॥ था०॥२८॥ पोतरे दोऊं कवले हाथी बणाया, ते चढ़वारे काम कांदे नहीं आया। ज्युं प्रतिमा बणाय देवल मांय बेसारी, आ पिण जाणजो थोथी माया॥ था०॥ २६॥ उण री स्त्री मुवां जो फेर परणीजे तो उण पिण श्रद्धा गयो छै भूलो। गुण विन आकार वांदे तिण लेखे, स्त्री आकारे कर लेणो टूलो॥ था०॥ ३०॥ भरतार मुवां स्त्री रोवे तो, वो पिण श्रद्धा गई छै भूलो। गुण विन आकार वांदे तिण लेखे, भरतार रे आकारे कार लेणो ठूलो॥ था०॥३१॥ स्त्री री गरज ठूलो नहीं सारे भरतार री गरज सारे नहीं ठूलो। इण दृष्टान्ते आकार वांदे, त्यांरो पिण जाणजो ओहीज भूलो॥ था०॥ ३२॥ बालपणमें रमें डावड़ा डावड़ी, विकाण पणे ठूलो न ठूलो। ज्युं भग-

वंत री प्रतिमा कारी नें बांदे, तिण पिण भूला रे नि केवल भूला ॥ था० ॥३३॥ पापड़ रा लोया नें गधेड़ा रा लोंडा, यां दोयां रो दीसे छे एक विचार । ज्यूं प्रतिमा छे भगवंत आकारे, ओ गुण बिन अर्थ न आवे लिगार ॥ था० ॥ ३४ ॥ गध लिंडारा पापड़ न थाय, कोरा खादां पिण बिगड़े छे मुंढो । ज्यूं प्रतिमा ने वांदां धर्म किहांथी, छोड़ो रे छोड़ो खोटी रूढ़ो ॥ था० ॥ ३५ ॥ इण लोक मांही आंधा लोक घणा छे, जेह रीतसु वाछेरो मोह अंध गाय, तिणरो बाछरो हुंतो ते चल गयो चेतन, तिणरी खाल चाढ़े भुवास बजाय ॥ था० ॥ ३६ ॥ बाछे री खाल देखी ते गाय भूली, आ प्रतिमा देख भूला किण लेख । आ प्रतिमा नहीं भगवंत री काया, ते तो मोह अंध गाय ज्यूं भूला विशेख ॥ था० ॥ ३७ ॥ अरिहंत भगवंत मुकतें गया जब, त्यांरो शरीर आकार तारे रहो काय । ते तो गुण जड़ बिना अचेतन पुद्‌गल, कोई तेहने बांद्यां धर्म नहीं होय ॥ था० ॥ ३८ ॥ त्यांरो शरीर असल आकार शरीर पड़िया ते, तिण ने ही वांद्यां बंधे निश्चय कर्मो । तो आकार और बणाय वांधे, त्यां आंधां ने होसी किण बिध धर्मो ॥ था० ॥ ३९ ॥ गुण विन आकार बांदण वालो बोलो, आकार बांद्यां कहे

लाभ अनन्त । तिणस्यूं भगवंत री प्रतिमा करै वांदे, तिण प्रतिमा ने लेखवे भगवन्त ॥ था० ॥४०॥ प्रणाम चले ज्यूं स्त्री दीठां, विषय न दीठा रहे शुद्ध प्रणाम । ज्युं प्रतिमा दीठां भगवन्त याद आवे, एहवा कुहेत लगावे ताम ॥ था० ॥ ४१ ॥ उण रे मा बहन स्त्री हुवे एक आकारे, कदे एक दीठां याद आवती नांहीं, पिण एक तीनां ज्युं काम न आई, याद आवे पिण गरज सरै नहीं कांई ॥ था० ॥ ४२ ॥ कदे प्रतिमा दीठां भगवन्त याद आवे, कदे भगवंत दीठां प्रतिमा याद आवे । पिण धर्म तो भगवन्त गुण वांद्या, प्रतिमा गुण वांद्या कर्म बंध जावे ॥ था० ॥ ४३ ॥ मा बहन आकार स्त्री तिण स्यूं, घरवासो करतां शंकामन आणे, ज्युं गुण विन आकार वांदो तिणने, स्त्री ने मा बहन ज्युं क्यों न जाणे ॥ था० ॥ ४४ ॥ माय बहन स्त्री तिणने दीठां हरखेरे विषे रे काम । ज्युं प्रतिमा दीठां मन धरे तो, छकाय मारणरा किया परिणाम ॥ था० ॥४५॥ मा बहन आकारे स्त्री हुवै तो मा बहन री गरज निश्चय नहीं सारे, ज्यूं भगवन्त रे आकारे प्रतिमा कीधी, ते आपिण जाणो कदे नहीं तारे ॥ था० ॥ ४६ ॥ भगवन्त रे आकार प्रतिमा वांदे, त्यारे आकारे वले अनेक विलापो । उणरा बाप रे आकारे मिनख घणा

छै, त्यां सगला ने लेखवणा वापी ॥ था० ॥ ४७ ॥ तो सगला ने वाप लेखवतो लाजे, ओ मत उणरे लेखे कूड़ो । जे गुण विन आकार वांदे अज्ञानी, ते कर रह्या मूरख फेन फितूरो ॥ था० ॥ ४८ ॥ उणरे मा रे उणियारे बींदणी हुंतो, तिण धन खरच नें परण ल्यायो । जे गुण विना आकार वांदे, तिण लेखे थां दोनां ने लेखणी मायो ॥ था० ॥ ४९ ॥ कै दोन्यां ने लेखवलै स्त्री, आपणी श्रद्धावाला रो देखो ले न्यायो । वले माय ने उणहारे अनेक लुगायां, ते सगली नें लेखवणी मायो ॥ था० ॥ ५० ॥ वले बहनोई काका बाबादिका रां, आकार छै नाम अनेक, थांरो आकार प्रमाणे नहीं लेखवे तो, छोड़ देनी कूड़ी जावक टेक ॥ था० ॥ ५१ ॥ कोई बाई छै हिंसाधर्मी अनारज, तिण पुत्र जायो ते भरतार ने आकारो । आकार वांदे तिण बाई रे लेखे, यां दोयां ने लेखव लेणो भरतारो ॥ था० ॥ ५२ ॥ कै दोयां ने बेटा लेखव लेणा, तो उणरी श्रद्धा में वा प्रणवीण पूरी । भरतार बेटो जुदो गिणे तो, उण री श्रद्धा रे लेखे पड़सी कूड़ी ॥ था० ॥ ५३ ॥ इत्यादिक जीव अजीव रा घणा छै, कोधा अकोधा अनेक आकार, पिण गरज सरे नहीं आकार वांद्यां, थे समझो रे समझो आण विचार ॥ था० ॥५४॥

गुण विना थापना भगवान री छे, ते देखीने जाण लेणो आकार। पिण धर्म नहीं तिणमें शीश नमायां, तरण तारण मत जाणो लिगार ॥ था० ॥५५॥ भगवंत रो आकार सर्व जीव हुवा छे, अनन्त अनन्ती वार। पिण गुण विना नाम भगवान रा स्यूं, किणरो ही न हुवो दीसे उधार ॥ था० ॥ ५६ ॥ गुण विन आकार भगवान रा सूं, निश्चय नहीं टले आतम दोष। जो आकार वांद्यां सद्‌गत होय, तो सकला जीव जाय विराजता मोच ॥ था० ॥ ५७ ॥ गुण विन आकार भगवंत रा सूं, निश्चय गरज सरै नहीं कांयो। गरज सरे नहीं भगवंत ने वांदे, संसो हुवे तो सूत्र में जोयो ॥ था० ॥ ५८ ॥ गुण विन आकार मानें तिणनें, वोली में सूल न दीसे वंध। फिरतो भाषा वोले अज्ञानी, ते रह्या होय मतवाला ज्यूं अंध ॥ था० ॥ ५६ ॥ गुण करनें अरिहंत भगवंत छै, गुण करनें छै ऋषिश्वर साधो। त्यांरा आकार सूं गुण न्यारा नहीं छै, त्यांने वांद्यां सूं पामे परम समाधो ॥ था० ॥ ६० ॥ जे गुण विन आकार थाप राखे ते, कहवता जावण आवे कामो। भ्रम भुलाया आकार देखनें, वलि गुण गुण ने आकार रो नामो ॥ था० ॥६१॥ केइक आकार कहिवारा छै, गुण निपन आवे वांदण रे कामो। ते

केहवा आकार कहिवारा छै, गुण निपन चारित परिणामो ॥ था० ॥ ६२ ॥ इम कहिनें कहिनें कितरोक कहिये, इण थापना निक्षेपा रो अधिकार । गुण बिन थापना बांदे नांहीं, त्यां निश्चय सफल कियो अवतार ॥ था० ॥ ६३ ॥

॥ दोहा ॥

ए थापना निक्षेपो कह्यो, हिवे द्रव्यनी करज्यो पिछाण । केई द्रव्य निक्षेपो सांभलो, भूल्या लोक अजाण ॥ १ ॥ ते गुण बिन बांदे द्रव्य नें, कूड़ा कुहेतु लगाय । अतीत अनागत कालनी, माने गुण पर्याय ॥ २ ॥ कहें साध हुआ श्री ऋषभ ना त्यां कियो चोविसथो ले नाम । चोबीस तीर्थंकर हुआ नहीं, त्याने बांदे किया गुण ग्राम ॥ ३ ॥ इम कहि कहि नें भोला लोक नें करे निगुण वांदणा री थाप । ऊंधी श्रद्धा प्ररूप नें बोहला बांधे पाप ॥ ४ ॥ त्यां स्यूं काम पड़े चरचा तणो, ते झूठ बोल फिर जाय । त्यांरी श्रद्धा ने झूठ प्रकट करूं, ते सुणज्यो चितलाय ॥ ५ ॥

* ढाल चौथी *

(आउखो टूट्यां नें सांधो को नहीं रे । एदेशी)

तीर्थंकर होसी आगमिया काल में रे, त्यांनें बांदे

नं करे अज्ञानी पाप रे। तेहनें नमोत्थु णं में घालियो रे, त्यां कीधी निगुण वांदण री थाप रे ॥ द्रव्य निक्षेपा रो निरणो सुणो रे ॥ १ ॥ नमोत्थु णं बोवित्थु क्रिया थकां रे, कहे गुण रो मत जाणो काम रे। उणरी श्रद्धा लेखे कुण कुण वांदणा रे, ते सुणजो राखे चित एकण ठाम रे ॥ द्र० ॥ २ ॥ एक मूला में सूँ जीव निकली रे, अनन्ता तीर्थंकर आगे पाय रे। जे द्रव्य तीर्थंकर वांदे गुण विना रे, तो मूला ने क्यों न वांदे जाय रे ॥ द्र० ॥ ३ ॥ पृथ्वि आदि देई छः काय में रे, जे द्रव्य तीर्थंकर अनन्ता पिछाण रे। जो द्रव्य तीर्थंकर वांदे गुण विना रे, तो क्यूं नहीं वांदे यांने जाय रे ॥ द्र० ॥ ४ ॥ अनन्ता जीव द्रव्य छः काय मे रे, सिद्ध होसी ज्ञानादिक पाय ऋद्ध रे, जे द्रव्य तीर्थंकर वांदे गुण विना रे, तो क्यूं न वांदे द्रव्य सिद्ध रे ॥ द्र० ॥ ५ ॥ अनंता द्रव्य साधु छः काय में रे, भावे होसी चारित्र आराध रे, जे द्रव्य तीर्थंकर वांदे गुण विना रे, तो वे क्यों न वांदे द्रव्य साधरे ॥ द्र० ॥ ६ ॥ ए द्रव्य तीर्थंकर सिद्ध साधु कह्या रे, तहि जन वांदे त्यांरा पाय रे, इण लेखे इण री श्रद्धा खोटी परी रे. पिण आंधा ने समझ पड़े नहीं कायरे ॥ द्र० ॥ ७ ॥ भरत चक्री रो कुवो डीकरो रे, ते

महावीर स्वामी रो जीव मरीच रे, ते घर छोडी ने हुवो त्रिदंडियो रे, तिण री करणी सावज न श्रद्धा नीच रे ॥ द्र० ॥ ८ ॥ जे द्रव्ये तीर्थंकर हुंतो तिण दिने रे, श्री ऋषभ जिनेश्वर दियो बताय रे । श्री ऋषभ जिनेश्वर साधु ने साधवी रे, क्यूं न बांदा त्यांरा पाय रे ॥ द्र० ॥ ९ ॥ चोवीसत्थो करतां बांदे तेहने रे, तिण स्यूं तो भेलो करणो आहार रे । श्री ऋषभ जिनेश्वर सरीखो लेखवी रे, श्री करता वन्दना नें नमस्कार रे ॥ द्र० ॥ १० ॥ श्री ऋषभ जिनेश्वर रा साधु ने साधवी रे, त्यां नहीं बांद्यो न गिणो मरीच रे । जे कोई द्रव्य तीर्थंकर बांदसी रे, तिण री पिण सावज करणी नीच रे ॥ द्र० ॥ ११ ॥ भरतजी बांद्या कहे मरीच ने रे, ते पिण नहीं छे सूत्र मांहि रे । भोला में बिगोय पाड्या भरम में रे, त्यां निगुण ने बांदे हरकत थाय रे ॥ द्र० ॥ १२ ॥ द्रव्य तीर्थंकर होता किशनजी रे, श्री नेम जिनेश्वर दिया बताय रे, पिण नेम जिनेश्वर रा साधु न साधवी रे, कृष्ण रा क्यों नहीं बांद्यां पाय रे ॥ द्र० ॥ १३ ॥ त्यां उलटो कृष्ण ने पगे लगावियो रे, पिण गुण बिन द्रव्य न बांद्यो कोय रे, तो चोवीसत्थो करतां तिण ने किम बांदसी रे, तुमे हिये बिमासी

बुध सूं जोय रे ॥ द्र० ॥ १४ ॥ वले द्रव्य तीर्थंकर होती देवकी रे, रोहिणी ने बलभद्र वखाण रे । पिण नेम जिनेश्वर रा साध साधवियां रे, नहीं वांद्या ते गुण विना द्रव्य पिछाण रे ॥ द्र० ॥ १५ ॥ यां तीनां ने उलटा पगे लगाविया रे, पिण गुण विन द्रव्य न वांद्यो कोय रे । चोवीसत्थो करतां निगुणा किम वांदसी रे, तुमे हिरदे विमासी बुध सूं जोय रे द्र० ॥ १६ ॥ वले द्रव्ये तीर्थंकर श्रेणिक राय थारे, श्री वीर जिनेश्वर दियो बताय रे । पिण वीर जिनेश्वर रा साधु ने साधवियां रे, श्रेणिक रा क्यूं नहीं वांद्या पाय रे ॥ द्र० ॥ १७ ॥ तिणां उलटो श्रेणिक ने पगां लगावियो रे, पिण गुण विन द्रव्य ने वांद्यो कोय रे । चोवीसत्थो करतां निगुणा किम वांदसी रे, हिरदे विमासी बुध सूं जोय रे ॥ द्र० ॥१८॥ मोटी सतियां श्री रानी कृष्ण नी रे, त्यांने तीर्थंकर वांदण रो घणो उलास रे । तो द्रव्य तीर्थंकर वांदे गुण विना रे, तो कृष्ण स्यूं नहीं करती घर वास रे ॥ द्र० ॥ १९ ॥ वले मोटी सतियां श्रेणिक री राणियां रे, त्यांरे तीर्थङ्कर वांदण रो घणो उलास रे । जे द्रव्य तीर्थङ्कर वांदे गुण विना रे, ते श्रेणिक सूं नहीं करती घर वास रे ॥ द्र० ॥ २० ॥ त्यां भरतार

जाणी नें कीधी विटंमणा रे, त्यां सूं पिण सेव्या काम न भोग रे तो चोवीसत्थो करता तिण ने किम बांदसी रे, आ गुरां री श्रद्धा जाणो अजोग रे ॥ द्र० ॥२१॥ कृष्णजी ने श्रेणिक री राणियां रे, समदृष्टि नें चतुर सुजाण रे। त्यां तो सामायक पोसा में वंदना करी रे, ते भाव तीर्थङ्कर देव जाण रे ॥ द्र० ॥ २२ ॥ जे द्रव्य तीर्थंकर बांदे गुण बिना रे, त्यांने गुण बिना बांदणा द्रव्ये साध रे। जोज कहे द्रव्य साधु ने बांदणा रे, उण के उण री श्रद्धा री न पड़ी लाध रे ॥ द्र० ॥ २३ ॥ कोई आगमिया काले शुद्ध साधु हुसी रे, कोई सागल हुसी चारित्र बिराध रे। ते द्रव्ये छे गुण बिण ठालो ठीकरा रे, त्यां सगलां ने कहीजे द्रव्ये साध रे ॥ द्र० ॥ २४ ॥ जो द्रव्ये साधु ने बांदे गुण बिना रे, तो यां सगलां ने बंदणा करणी ताम रे। उणरी श्रद्धा रे लेखे गुण कुण बांदणा रे, हिवे द्रव्य साधु रा कहूं छूं नाम रे ॥ द्र० ॥ २५ ॥ तो गोसाला कुपात्र ने बांदणो रे, ते पिण आगमिया काले साधु थाय रे। जे द्रव्ये साधु ने बांदे गुण बिना रे, तो गोसाला ने क्यूं न बांदे ताय रे ॥ द्र० ॥ २६ ॥ वले इग्यारा श्रेणिक रा डीकरा रे, कोणक कालि-दिक कुमार रे। जे द्रव्य साधु ने बांदे गुण बिना रे,

तो यांने पिण वांदणा वारम्बार रे ॥ द्र० ॥ २७ ॥ जमाली ने कंडरीकादिक जे हुआ रे, ते विगड्या के संजम समकित खोय रे। जे द्रवे साधु ने वांदे गुण विना रे, ता यांने पिण वांदणा नीचा होय रे ॥ द्र० ॥२८॥ इत्यादिक आगल होया कुसीयालीया रे त्यांरो द्रव्ये निक्षेपो न गयो ताम रे। जे द्रव्ये साधु ने वांदे गुण विना रे, तो यांने पिण वांदे ले ले नाम रे ॥ द्र० ॥ २९ ॥ जो उन वांदे या भाव सूं रे, तो उन रो मत उन थाप उथाप रे। जो द्रव्य साधु ने वांदे गुण विना रे, त्यांरे के पोते बोहला पाप रे ॥ द्र० ॥ ३० ॥ उण स्त्री परणी सूं घर वासो कियो रे, ते तो माता होती पाछला भव मांय रे। जो माने केवल गुण विन द्रव्य ने रे, तो स्त्रीने लेखवणी माय रे ॥ द्र० ॥ ३१ ॥ उण जन्म देई ने मा मोटो कियो रे, ते तो स्त्री होती पाछला मझार रे। जे माने निकेवल गुण विन द्रव्य ने रे, इण लेखे माता ने गिण लेणी नार रे ॥ द्र० ॥ ३२ ॥ के माता ने लेखव लेणी ...नी रे, के स्त्री ने लेखवणी माय रे, जे माने निकेवल द्रव्य ने रे, इण री श्रद्धा रो ओहीज उंधो न्याय रे ॥ द्र० ॥ ३३ ॥ उण रे जीव हुआ नें स्त्री रे, ते सगला ही जीव हुआ मा वहिन रे। जे माने निके-

वल गुण बिन द्रव्य ने रे, तिण रा किण बिध चालसी कूड़ा फेन रे ॥ द्र० ॥ ३४ ॥ बलें बेटो उण रे घर जाय जनमीयो रे तिण रो पाछल भव नो बेटो हूंतो बाप रे। जे माने निष्कवल गुण बिन द्रव्य नें रे, तो बेटा ने लेखवणो बाप रे ॥ द्र० ॥ ३५ ॥ हूण रो बाप पाछल भव बेटो हुंतो रे, तिण रो ही जे बेटो हुवो आप रे। जे माने निष्कवल गुण बिना द्रव्य नें रे, ते बाप ने बेटो गिण लेणो ताय रे ॥ द्र० ॥ ३६ ॥ थोड़ी मेणादिक सर्व जीवनो रे, त्यांरो बेटो हूंतो पाछल भव आप रे। जे माने निष्कवल गुण बिन द्रव्य नें रे, तो हूण लेखे सगलाई हूण रा बाप रे ॥ द्र० ॥ ३७ ॥ जो उ सगला ने बाप न लेखवे रे, तो उण री श्रद्धा हूण लेखे कूड़ रे। जे माने निष्कवल गुण बिन द्रव्य ने रे, त्यांरो चिहुं गत में होसी घणो फितूर रे ॥ द्र० ॥३८॥ बले काका बाबादिक सगपण तेहनें रे, सगलाई हुआ अनन्ती बार रे। जे मानें निष्कवल गुण बिन द्रव्य नें रे, ते किण बिध करसी बिचार रे ॥ द्र० ॥ ३९ ॥ अरिहंत सिद्ध साधु हूण जीवरे रे, जे हुवा न्यातीला वार अनन्त रे। जे माने निष्कवल गुण बिन द्रव्य नें रे, त्यांरे लेखे तो सगला एक भांत रे ॥ द्र० ॥ ४० ॥ अे कुण कुण मारे नें कुण कुण पूजसी रे, तिण रो के

दिन कहतां आवे थाग रे। ते डूबा अज्ञानी निगुणा वांदने रे, त्यांरो भव भव में होसी घणो अभाग रे॥ द्र० ॥ ४१ ॥ ए द्रव्य निक्षेपो वांदे गुण विना रे, ते पिण काम पड्यां देवे उथाप रे। ते पग पग भूठ बोले अति घणो रे, ते कर रह्या मूढ़ कूड़ विलाप रे॥ द्र० ॥ ४२ ॥ यांने गुण विन द्रव्य वांदण रो कह्यो रे, जब तोरू बेसूधा बोले एम रे। कहे द्रव्य छे तो गुण नहीं पिण मांहि रे, तिण नें शीश नमावां केम रे॥ द्र० ॥४३॥ जो द्रव्य निकेवल माने रे, गुण रो शरणो ले किण न्याय रे। आ खोटी श्रद्धा थांरी अटके घणी रे। जब सांच बोलो ने आयो ठाय रे॥ द्र० ॥४४॥ ते कहिवा ना ठाय आया अज्ञानी रे, पिण मन में न सोजें मूरख मूढ़ रे। त्यांरे डंक लाग्या कुगुरां तणां करडा रे, किण विध ते छोडे कारडी रूढ़ रे। ॥ द्र० ॥ ४५ ॥ जो द्रव्य निक्षेपो मुख स्यूं कर रह्या रे, तिण री पिण समझ पड़े नहीं काय रे। ते भरमाया लागा छे कुगुरु तणां रे, ते प्रत्यक्ष चोड़े भूला जाय रे॥ द्र० ॥ ४६ ॥ कोई द्रव्ये तीर्थङ्कर अनादि काल ना रे, त्यांरी पिण गरज सरी नहीं काय रे। तो वंदणा करसो तिण ने किम तारसी रे, विवेक आणी समझो इण न्याय रे॥ द्र० ॥ ४७ ॥

द्रव्य तीर्थंकर छै कोई गुण विना रे, ते पिण कहवा ने द्रव्ये नाम रे। पिण धर्म नहीं तिण नें वांदियां रे, तरण तारण नहीं छै नाव रे ॥ द्र० ॥ ४८ ॥ गुण बिन द्रव्य तीर्थंकर तेहसूं रे, किण विध घटसी आलम दोष रे। जो त्यांने वांदियां सदगत हुवै रे, तो जीव सगलाई जावता मोच रे ॥ द्र० ॥ ४९ ॥ जे द्रव्य तीर्थंकर वांदे गुण बिना रे, त्यांरे लूल न दीसे बोले बंध रे। फिरतो भाषा बोले कपटी थका रे, ते होय रह्या मोह अंध रे ॥ द्र० ॥ ५० ॥ गुण करके तीर्थंकर देव छै रे, गुण करने कह्या छै सिद्ध साध रे। त्यांरा गुण नें द्रव्य तो एकहीज छै रे, त्यांनें वांद्यां सूं परम समाध रे ॥ द्र० ॥ ५१ ॥ गुण और ने द्रव्य और छै रे, ते तो कहिवता लावण काम रे। कोई भोले मत भूलो गुण बिन द्रव्य सूं रे, सुण सुण द्रव्य रा चोखा नाम रे ॥ द्र० ॥५२॥ कोई द्रव्यरा नाम कहिवा ने दिया रे, कोई गुण निपन आवे काम रे। ते कहिवारा द्रव्य जाणो कहिवा भणी रे, पिण गुण बिन निपन ते आवे काम रे ॥ द्र० ॥ ५३ ॥ इम कहतां कहतां पूरा हुवै नहीं रे, इण द्रव्य निक्षेपा रो विस्तार रे। कोई गुण बिन थोथा द्रव्य माने नहीं रे, त्यां निश्चय सफल कियो अवतार रे ॥ द्र० ॥५४॥

॥ दोहा ॥

नाम थापना द्रव्य तणो, यां तीनां रो कह्यो विस्तार। ए गुण निगुण भाव रहित मे, एणकण नहीं लिगार ॥ १ ॥ गुण विन नाम निकेवलो, गुण विन थापना आकार। जे द्रव्य निक्षेपो गुण विना, ए तीनों ई निक्षेपा असार ॥ २ ॥ तिण कारण मोटो कह्यो, गुण सहित निक्षेपो भाव। च्यारूं निक्षेपा मांहि भाव है, तिण रो विरला जाणे सार ॥ ३ ॥ भाव निक्षेपो रूड़ी रीतसूं, ओलखज्यो नर नार। इण ओलखियां विन जीव रे, घट में घोर अंधार ॥४॥ जे जे द्रव्य रा नाम छै, नाम जिसा गुण तिण मांहि। भाव निक्षेपो श्री जिनवर कह्यो, ते सुणज्यो चित्त लगाय ॥ ५ ॥

॥ ढाल पांचवीं ॥

(पूज्यजी पधारे नगरो सेविया। एदेशी)

अनन्ता तीर्थंकर आगे होसी वले, ते अवारूं रूलें च्यारूं गत मांहि हो भविक जण, जे द्रव्य तीर्थंकर कहिजे तेहने, पिण भावे एकेन्द्रियादिक ताहि हो भविक जण, भाव निक्षेपो भवियण ओलखो ॥१॥ तीर्थंकर घर वासे वसतां थकां, नव भोगी पुरुष

विख्यात हो भ० द्रव्य तीर्थङ्कर त्यां ने ही जिन कह्या, पिण भाव तो गृहस्थ साक्षात हो भ० ॥ भा० ॥ २ ॥ तीर्थङ्कर घर छोडी चारित्र लियो, पाले छै शुद्ध आचार हो भ० तो द्रव्य तीर्थङ्कर कहीजे तेहनें, भावे होया मोटा अणगार हो भ० ॥ भा० ॥ ३ ॥ केवल ज्ञान दर्शन उपनां पछे, थापे तीरथ चार हो भ० भाव तीर्थंकर कहिजे तेहनें, समझो आण विचार हो भ० ॥ भा० ॥ ४ ॥ चोतीस अतिशय करने परवर्या, वाणी गुण पेंतीस हो भ० तीर्थंकर ना सगला गुण छै तेहमें, तीर्थंकर भाव जगदीस हो भ० ॥ भा० ॥५॥ अनंता तीर्थंकर आगे होसी, वले हिवड़ां तो चिहुंगत गोता खाय हो भ० द्रव्य तीर्थंकर त्यां नहीं जिन कह्या, पिण भावे तो एकेन्द्रियादिक माय हो भ० ॥ भा० ॥ ६ ॥ घर छोड़ी सूधो पाले साध पणो, पिण हणिया नहीं कर्म चार हो भ० त्यां लग द्रव्य तीर्थङ्कर कह्या तेहने, ते भावे हुया सुध अणगार हो भ० ॥ ॥ ७ ॥ चार कर्म घन घातिया छै अरि, ए अरि हणियां सूं अरिहंत हो भ० भावे अरिहंत कहीजे तिण समै, ते वो लखवां दो मतिवंत हो भ० ॥ भा० ॥ ८ ॥ अनन्ता सिद्ध आगमिया काले हुसी, ते तो हिवड़ां चिहुंगत गोता खाय हो भ० द्रव्ये तो सिद्ध

कहीजै तेहनें, पिण भावे एकेन्द्रियादिक मांह हो भ० ॥ भा० ॥ ९ ॥ वले अरिहंत साधु मुक्ति नें निकल्या, त्यांरा भाव प्रमाणे गुण कह्यु हो भ० पिण ज्यां लग मुक्ति न पोंहता, त्यां लगे द्रव्य कहीजै सिद्ध हो भ० ॥ भा० ॥ १० ॥ सकल काज साजो मुक्तें गया, त्यां आठों हो कर्म क्षय कीध हो भ० त्यां आवागमन मेट्यो गत चार नौ, त्यांने भाव कहीज हो भ० ॥ भा० ॥ ११ ॥ अनन्ता आचारज उपाध्याय साधु होसी, ते हिवड़ां नरका ना मांहि हो, भ० ते आचारज उपाध्याय साधु द्रव्ये कह्या, भावे नेरिया-दिक नाम हो भ० ॥ भा० ॥ १२ ॥ वले आचारज उपाध्याय घर में थकां, ते द्रव्ये छै भाव रहित हो भ० त्यांरा गुण प्रगट होवा घर छोडिया पछैं, जब भावे गुण सहित हो भ० भा० ॥ १३ ॥ कोई आचा-रज उपाध्याय साधु भागल थया, ते द्रव्ये छै गुणरहित हो भ० त्यां सें आगमिया काले गुण परगम्या, जब होसी वले भाव सहित हो भ० ॥ भा० ॥ १४ ॥ छतीस गुण आचारज पडिवज्यो पचीस गुण उपा-ध्याय हो भ० सतावीस गुण सहित साधु कह्या, ए भावे सगला भावे मुनिराय हो भ० ॥ भा० ॥ १५ ॥ ए भावे अरिहंत सिद्ध साधु कह्या, त्यांने वांद्या

निर्जरा धर्म हो भ० निगुणा तीन निक्षेपा मानिया, बांधे सात आठो सब कर्म हो भ० ॥ भा० ॥ १६ ॥ जे माता पितारा अंग सूं अपनो, ते भावे पुत्र साक्षात हो भ० मात पिता पण भावे छै तेहना, जीवे ज्यां लग त्यांरो अंग जात हो भ० ॥ भा० ॥ १७ ॥ ते पुत्र मरे और जायगा, उपनो जब यांरो नहीं अंग जात हो, भ० ए माता पिता पिण भावे नहीं तेहना भावे सगपण नहीं तिल मात हो भ० ॥ भा० ॥१८॥ कोई स्त्री परणां घर वासो करे, ते भावे वरते नार हो भ० ते पाछल भव हूण री माता हुंती, ऊ सगपण नही रह्यो लिगार हो भ० ॥ भा० ॥ १९ ॥ इम भाई भतीजा काका बावादिक, बहन बहनोई आदि पिछाण हो भ० जे जे सगपण वर्त्तमान काल में, ते भाव सगपण जाण हो भ० ॥ भा० ॥ २० ॥ भाव सगपण जे संसार मे, ते आवे गुण परमाणे काम हो भ० द्रव्ये सगा सगला एक एक रे, त्यांरा कुण कुण कहीजे नाम हो भ० ॥ भा० ॥ २१ ॥ भावे सगपण बीता पछे भावे ज्यूं अर्थ न आय हो भ० द्रव्ये तो पिण भावे मांहि नहीं, त्यां सूं गरज सरे नही काय हो भ० ॥ भा० ॥ २२ ॥ सगला ई जीव छे द्रव्य नेरिया, पिण भावे तो नारकी मझार हो भ० तिहां

छेदन वेदन जे अ वेदना, ते खाय अनन्ती मार हो भ० ॥ भा० ॥ २३ ॥ जो देवता होसी आगमिया काल में, जे द्रव्य छै देवता पिछाण हो भ० भवनपति व्यंतर ज्योतिषी विमाणीया, ते भावे तो देवता जाण हो भ० ॥ भा० ॥२४॥ नारकी आदि चोवीस डंडक मझे, तिहां जीव उपजै आय हो भ० ते भावे तो कहीजे व्रते तेहवो, जोवो सूत्र मांहि हो भ० ॥ भा० ॥ २५ ॥ अणघड़िया रूपा ने द्रव्ये रुपयो कह्यो, तिण रो घड़ आकार तेह हो भ० पछै उपर सिक्को दियो चलण हुवे जेहवो, जब भावे रुपयो एह होय हो भ० ॥ भा० ॥ २६ ॥ सूत पूणी ने द्रव्ये कपड़ो कहै, गुण बिन तेहनो नाम हो भ० भावे तो कपड़ो कहीजै वणिया पछै, ते आवे पहरण रे काम हो भ० ॥ भा० ॥ २७ ॥ इत्यादिक भाव निचेपा अनेक छै, ते पूरा कीम कहाय हो भ० अने अनुसारे बुधवंत समझ नें, ओलख लीजो न्याय हो भ० ॥ भा० ॥२८॥

॥ दोहा ॥

दुनियां में सोलप घणी. ते कही कठां लग जाय ।
अर्थ अनर्थ धर्म कारणे, हण रह्या जीव छ काय ॥१॥
अर्थ हणे ते आठां कारणे. आतम न्यात घर परवार ।
मित्र न्याती नें भृत्त जक्ष. यांरो घणो कह्यो विस्तार ॥२॥

ए आठ कारणां बिना हणीं, ते अकल विना वे फाम। ते अनर्थ दंड श्री जिन कह्यो, छ काय हणे बिन काम ॥३॥ देव गुरु धर्म कारणे, जाणे जीव हण्या छै धर्म। धर्म हेत हणे छै किण विध, ते भूला अज्ञानी भर्म ॥४॥ अर्थ अनर्थ धर्म कारणे, सगलै ठाम हणा रह्या छै प्राण। ते दया किसी पर पालसी, ऐ मूढ़ मिथ्याती अयान ॥ ५ ॥ ते हिंसा धर्मी जीवड़ा, तिण रे उदय मिथ्यात अज्ञान। यांरे छ काय मारण तणो, रहे निरंतर ध्यान ॥ ६ ॥ देव गुरु धर्म कारणे, किण विध हणे छ काय। त्यांरी खोटी श्रद्धा प्रगट करू, ते सुणज्यो चितलाय ॥ ७ ॥

* ढाल छठी *

(बिछिया नी देशी)

अरिहंत देव री करे थापना, हण रह्या जीव छ काय जी। देव काजे हणे जीव किण विध, ते सांभल ज्यो चितलायजी ॥ जीव मारे ते धर्म आछो नहीं ॥१॥ ते देवलादिक करावता लगावे हजारां दाम जी। धन खरचे पूजादिक कारणे, वले करे अनेक हगाम जी ॥ जो० ॥२॥ पत्थर कान सूं काढ़ मंगावतां, त्रस थावर मारे अनेकजी। त्यांरो लेखो करे घट भीतरे, कोई

वुधवंत आण विवेक जी ॥ जी० ॥ ३ ॥ पत्थर फोड्यां पृथ्वि काय में रे, पांणी घाले चूनादिक मांहिजी। वायु काय मरे लेतां मेलतां, टांचो बाजयां उठे तेऊ काय जी ॥ जी० ॥४॥ वनस्पति त्रस जीवड़ा, गाडादिक हेठे चिंथ्या जाय जी। नीव देई देवल चुणता थकां, तठे पण मरे छः काय जी ॥ जी० ॥ ५ ॥ चूनो वाले ऊपर देतो थकां, तिहां पिण जीव मरे अथाग जो। अनन्ता जीव मार देवल कियो, सो तो नहीं के मुगत रो मागजी ॥ जी० ॥ ६ ॥ देवल करांवता हिंस्या हुई, ते पुरी केम कहायजी। पछे पूजादिक करावतां, नितरानित मारे छ कायजी ॥ जी० ॥ ७ ॥ कठे टांचो वाजे निरंतर, नित नित मारे पृथ्वीकाय जी। त्यांने दुख उपजे तिण समें, घणी तु अतुल वेदना थायजी ॥ जी० ॥ ८ ॥ नित पाणी ढोले नवरावतां रे। अगन मारे दीवो उजवालतांजी। नित नित रा वाऊकाय मारे घणां, कूट मजीरा तालजी ॥ जी० ॥ ९ ॥ नित काची कलियां तोड़ ने, माथा गूंथ चढ़ावे आगजी। दीवादिक सूं मरे पतंगिया, त्रस काय रा थाय पिण घमसान जी ॥ जी० ॥ १० ॥ इत्यादिक छः काय मारवा, नितका करे छे संग्राम जी। वले कहे म्हांने पाप लागो नहीं, छगाया परि-

हंत देव रे काम जी ॥ जी० ॥११॥ आवै दया पालण रे पगथीयो, तिथ पूर्व पजूसण मास जी। ते तो तिण दिन जीव मारे घणां, करे अनेक जीवां रो बिनास जी ॥ जी० ॥ १२ ॥ पछै सतरह भदे पूजा रचै, तिण रो माडे घणो बिस्तारजी। लहै दया तणो सोचो नहीं, करे छ काय रो संहारजी ॥ जी० ॥ १३ ॥ बांधे पगां मे घूघरा, हाथ मे लेवे मजीरा तालजी। ते तो बजावे गावे कुदड़का करै, छः काय रो खिंगारजी ॥ जी० ॥ १४ ॥ देव काज हणे जीव इण बिध, तिण में मूल म जाणो दोषजी। जाणे लाभ हुयो जिन धर्म रो, तिण स्यूं नेड़ो छे अविचल मोक्षजी ॥ जी० ॥ १५॥ इत्यादिक देवल काजे हणै तिण रा कहता न आवे पारजी। हिवे गुरु रे काजे हणै जीव नें, ते सांभल ज्यो बिस्तारजी ॥ जी० ॥ १६ ॥ देव रे काजे देवल करावतां थकां, त्रस थावर रा लूण्या प्राणजी। तिन गुरु काजे थानक किया, हुवै छ काय रा घमसानजी ॥ जी० ॥ १७ ॥ थानक करावता हिंसा हुई, ते तो देवल नी परे जाणजी। छः काय मारे छै किण बिधे, तिण री बुधवन्त करज्यो पिछाणजी ॥ जी० ॥ १८ ॥ बले बांधे परदानें परछनें, चन्दवा भारादिक आणजी। इत्यादिक थानक रे कारण हणे, त्रस थावरां रा प्राण

जी ॥ जी० ॥ १६ ॥ खीर खांड फीन्यां रोख्यां करै, पाणी ऊकाले भरभर ठामजी । और अनेक वस्तु करै घणी, गुरुनें पडिलाभण कामजी ॥ जी० ॥२०॥ आहार पाणियादिक निपजावतां, करे छ कायरो विनासजी । पछे तेह वहरावै तेहनें, वले करे मुक्ति नी आसजी ॥ जी० ॥ २१ ॥ इत्यादिक गुरु काजे हिंसा करे, ते तो पूरो कीम कहायजी । धर्म काजे हिंसा करै जीवरी, ते सांभल ज्यो चितलायजी ॥ जी० ॥ २२ ॥ करे उजवणा नें पारणा, वले साहमी वछल जाणजी । त्यांने न्योंत जिमायां कारणें, करै छः कायारो घमसाणजी ॥ जी० ॥ २३ ॥ वले धर्म काजे धूंकल करै, सिंघ काड लेव जावे जातजी । चोमासादिक में आवता जावता, करे त्रस थावर री घातजी ॥ जी० ॥ २४ ॥ तप मांड्यो ते पूरो हुआ पछे, जीमण करे लोक जायजी । वले लाडुयादिक करावता, ते तो हणाई जीव छ कायजी ॥ जी० ॥ २५ ॥ वले समदंड होई दान दे, उपर वाडा रा फल देई जाणजी । आंबादिक ना फल नी चोवीसी देई, इत्यादिक दान पिछाणजी ॥ जी० ॥ २६ ॥ हणे अर्थ अनर्थ जीव नें, ते तो भारी होवे बांदे पायजी । धर्म हेते हणे छः काय नें, ओतो कुगुरां तणा प्रतापजी ॥ जी० ॥ २७ ॥

पंखी आला घाले देवल मझे, इंडा मेलव से तिण मांहिजी । तें निजरां पडें कुगुरां तणी, तो आला दे तुरत पडायजी ॥ जी० ॥ २८ ॥ केई इंडा पंखी जीवां मारें, केई उड़ता जाय आकासजी । तिणमें धर्म परूपे पापिया, करे जीवां रो बिनासजी ॥ जी० ॥२९॥ जे अनारज आवे देस उपरे, जब करे अकारज काम जी । दुख उपजावे रांक गरीब ने, फिर फिर मारे नगर ने गामजी ॥ जी० ॥३०॥ तिम कुगुरु अनारज सारिखा, त्यांरा दुष्ट घणा परिणामजी । ते पिण गांवां नगरां फिरता थकां, मरावे पंखियां रा ग्रासजी ॥ जी० ॥३१॥ अनारज देस मार गयां पिछे, वले ग्राम नगर वेसें केमजी । अनारज फेर आवे तिहां, तो वले मार करे घमसानजी ॥ जी० ॥३२॥ ज्यूं कुगुरु विहार किया पछे, पंखी फेर आला घाले लागजी । वले कुगुरु आवे तिण ग्राम में, पंख्यां री जाणो अभागजी ॥ जी० ॥ ३३ ॥ मोटा विरद महाजन रा कुल मझे, बाजे जीव दया प्रतिपालजी । पिण कुगुरु तिण भरमाविया, पाडे पंखियारा मालजी ॥ जी० ॥३४॥ अनारज ग्राम नगर मार्यां पछे, केई आणे मन में पश्चातापजी । कुगुरु जीव मार हर्षित हुवे, त्यांरे हिंसा धर्मीरी थाप जी ॥ जी० ॥ ३५ ॥ अनारज करे कतल जीवां तणी,

ते पिण फेरे दुहाई वेगजी । कुगुरु जीव मरावण नयां नया, त्यांरो कठे न दीसे थागजी ॥ जी० ॥ ३६ ॥ अनारज विच तो कुगुरु बुरा, त्यांरी मूरख माने बात जी । ते तो धर्म जाणे जीव मार नें, श्रो तो करड़ो घणो मिथ्यातजी ॥ जी० ॥ ३७ ॥ कुगुरु कहै हिंसा किया विना, धर्म न होय केमजी । पोते त्याग किया हिंसा तणां, त्यांने धर्म किहां थी होयजी ॥ जी० ॥ ३८ ॥ जो हिंसा कियां धर्म नीपजै, तो गृहस्थ हो जाय निहालजी । पिण साधां रे हिंसा करणी नहीं, त्यांरो होसी कवण हवालजी ॥ जी० ॥ ३९ ॥ जीव मारियां धर्म कहै, ए तो कुगुरु तणां छे वेणजी । त्यांने वांदे पूजे गुरु जाण नें, त्यांरा फूटा अंतर नेण जी ॥ जी० ॥ ४० ॥ जीवतव्य नें प्रशंसा कारणे, वले माने वड़ाई कामजी । हणे जन्म मरण मुकायवा, वले दुख दूर करवा तामजी ॥ जी० ॥ ४१ ॥ हणे छ कारण छः काय नें, ते तो ए कारण साचातजी । धर्म हेत तिण जीव नै हणे, समकित जाय आवे मिथ्यातजी ॥ जी० ॥ ४२ ॥ छ कारण हिंसा कियां बांधे, आठ कर्म गांठ पूरजी । निश्चय मोह नें मार बधे घणी, नहीं वरत नरक स्युं दूरजी ॥ जी० ॥४३॥ छः कारण हिंसा करे, ते तो दुख पावे इण संसारजी ।

आचारंग पहला अध्ययन में, छठे उदेशां कह्यो विस्तारजी ॥ जी० ॥ ४४ ॥ कै समण माहण अनारज थकां, करै हिंसा धर्म नो थापजी। कहै प्राण भूत जीवां सतबनें, धर्म हेत हणां नहीं पापजी ॥ जी० ॥ ४५ ॥ एहवो ऊंधो परूपे तेहने, आरनार्ये साधु बोल्या कीमजी। तुमे भूठो दीठो सांभल्यो, भूंडो दीठो भूंडो सांभलो कीमजी ॥ जी० ॥ ४६ ॥ जीव मास्यां रो दोष गिणनें, ए बचन अनारज जाणजी। एहवा मूढ़ मिथ्याती नें दुर्मती। त्यांरी सुध बुध नहीं है ठिकाण जी ॥ जी० ॥ ४७ ॥ कोई हिंसा धर्मी ने इम कहै, थांने मास्यां हुवै धर्म कि पापजी। जब वाहे म्हांने मास्यां पाप छै, सुधो सांच बोल्या साचो थापजी ॥ जी० ॥ ४८ ॥ जो थांने मास्यां रो पाप छै, तो इम सर्व जीवां मास्यां जाणजी। और नें मास्यां धर्म परूपै, थे कांई बूड़ो कर कर ताणजी ॥ जी० ॥ ४९ ॥ ए आचारंग चौथा अध्ययन में, दूजे उद्देशे जाण विस्तार जी। हिंसा धर्मी अनारज तेहनें, कीधा जिन मार्ग स्यूं न्यारजी ॥ जी० ॥५०॥ धर्म होसी एकेन्द्री मारियां, जो बेन्द्री मास्यां पाप न थायजी। अधिक मास्यां अधिक धर्म छै, इण री श्रद्धा रो ओहीज न्यायजी ॥ जी० ॥ ५१ ॥ जो एकेन्द्री मास्यां पाप छै, तो बेन्द्री

मास्यां पाप विशेषजी । अधिका मास्यां अधिको पाप छे इम जेण धर्म सामो देखजी ॥ जी० ॥ ५२ ॥ कोई हिंसा धर्मी चवडे कहै, हिंसा कीधा विना न हुवै धर्मजी । कोई चवडे न कहै कपटी थकां, सांच कहतां आवे शर्मजी ॥ जी० ॥५३॥ कोई दया धर्मी वाजे लोकमें, चाले हिंसा धर्मी नी रीतजी । ते पिण छे तिण ही पांत रा, बतलाथां बोले विपरीतजी ॥ जी० ॥५४॥ सूत्र सिद्धान्त में इम कह्यो, जीव हणियां सूं लागे पापजी । न मास्यां सूं पाप लागे नहीं, श्री जिण मुख भाखियो आपजी ॥ जी० ॥५५॥ वले देहरा प्रतिमा करावतां, जीव हण रह्या पृथ्विकायजी । त्यांने मंदबुद्धि श्री जिन कह्या, दशमां अंग पहला अध्ययन मांयजी ॥ जी० ॥ ५६ ॥ वले चुद्र मत कही तेहनो, तेतो दीठ मूढ़ घणो अत्यंतजी । दुरंत पंत लच्चण रो घणो, हिंसा धर्मी ने कहै भगवंतजी ॥ जी० ॥ ५७ ॥ जीव हिंसा करै तेहनें, ओलखायो श्रीजिन-रायजी । हिवै हिंसा धर्मी रा फल कहूं, ते सांभल ज्यो चितलायजी ॥ जी० ॥ ५८ ॥ कोई हिंसा धर्मी जीवड़ा, मरि उपजे नरक मझारजी । तिहां छेदन भेदना अति घणा, वले खाय अनंती मारजी ॥ जी० ॥ ५९ ॥ मार खाय नरक थी निकले, पड़े तीर्यंच में

जायजी। तिहां पिण दुख पामें अति घणां, ते तो पूरा किम कहायजी ॥ जी० ॥ ६० ॥ वली निगोद में पडियां पछे, दुख पामें अनन्तो कालजी। परिभ्रमण करे संसार में, जाणे अरट तणी घडमालजी ॥ जी० ॥ ६१ ॥ इम रुलतो संसार में, कदे मनुष्य तणो भव पायजी। ते किम पावै छै अवसाता, ते सांभल ज्यो चितलायजी ॥ जी० ॥ ६२ ॥ त्यांरी बाल पणै माता मरे, वली पितारो पड़ै बिजोगजी। सयण सगारो बिछोह पड़ै, मिलै दुशमणारो संजोगजी ॥ जी० ॥६३॥ बालक थको मरे बेटा बेटियां, बले घर भांगे अंघ-गालजी। दुख दुख जमारो पूरो हुवै, बली आवे अण-हुंतो आलजी ॥ जी० ॥६४॥ कोई होय टूंटा पांगला, कोई गूंगा बेहरा जाणजी। कोई होय जावे आंधा ने दरिद्री, रहै दिन दिन ताणा ताणजी ॥ जी० ॥ ६५ ॥ सोलह रोग शरीर में उपजे, तिणस्यूं पामें दुःख संतापजी। जनम मरण रा दुख पामें घणा हिंसा धर्म तणे प्रतापजी ॥ जी० ॥ ६६ ॥ सूयगडांग अंग अध्ययन अठारमें, ए भावे कह्या जिनरायजी। इम सांभल ने नर नारियां, धर्म हेत मत हणो छः कायजी ॥ जी० ॥ ६७ ॥ देवल हिंसा निषेधी सांभले, कोई पाछो उत्तर देवे हामजी। पाप हुवै तो नहीं लगावता,

मारयां पाप विशेषजी । अधिको मारयां अधिको पाप छे इम जेणा धर्म सामो देखजी ॥ जी० ॥ ५२ ॥ कोई हिंसा धर्मी चवडे कहे, हिंसा कीधा बिना न हुवे धर्मजी । कोई चवडे न कहे कपटी थकां, सांच कहतां आवे शर्मजी ॥ जी० ॥५३॥ कोई दया धर्मी वाजे लोकमें, चाले हिंसा धर्मी नी रीतजी । ते पिण छे तिण ही पांत रा, बतलायां बोले बिपरीतजी ॥ जी० ॥५४॥ सूत्र सिद्धान्त मे इम कह्यो, जीव हणियां सूं लागे पापजी । न मारयां सूं पाप लागे नहीं, श्री जिण मुख भाखियो आपजी ॥ जी० ॥५५॥ वले देहरा प्रतिमा करावतां, जीव हण रह्या पृथ्विकायजी । त्यांने मंदबुद्धि श्री जिन कह्या, दशमां अंग पहला अध्ययन मांयजी ॥ जी० ॥ ५६ ॥ वले क्षुद्र मत कही तेहनी, तेतो दीठ मूढ़ घणो अत्यंतजी । दुरंत पंत लक्षण रो घणो, हिंसा धर्मी ने कहे भगवंतजी ॥ जी० ॥ ५७ ॥ जीव हिंसा करे तेहनें, ओलखायो श्री जिन-रायजी । हिवे हिंसा धर्मी रा फल कहूं, ते सांभल ज्यो चितलायजी ॥ जी० ॥ ५८ ॥ कोई हिंसा धर्मी जीवड़ा, मरे उपजे नरक मझारजी । तिहां छेदन भेदना अति घणा, वले खाय अनंती मारजी ॥ जी० ॥ ५९ ॥ मार खाय नरक थी निकले, पड़े तीर्यंच मे

जायजी। तिहां पिण दुख पामें अति घणां, ते तो पूरा किम कहायजी ॥ जी० ॥ ६० ॥ वली निगोद में पडियां पछे, दुख पामें अनन्तो कालजी। परिभ्रमण करे संसार में, जाणे अरट तणी घडमालजी ॥ जी० ॥ ६१ ॥ इम रूलतो संसार में, कदे मनुष्य तणो भव पायजी। ते किम पावै छे अवसाता, ते सांभल ज्यो चितलायजो ॥ जी० ॥ ६२ ॥ त्यांरी बाल पणे माता मरे, वले पितारो पड़ै बिजोगजी। सयण सगारो बिछोह पड़ै, मिलै दुश्मणारो संजोगजी ॥ जी० ॥६३॥ बालक थको मरे बेटा बेटियां, बले घर भांगे अंघ-गालजी। दुख दुख जमारो पूरो हुवे, बले आवे अण-हुंतो आलजी ॥ जी० ॥६४॥ कोई होय टूंटां पांगला, कोई गूंगा बेहरा जाणजी। कोई होय जावे आंधां ने दरिद्री, रहे दिन दिन ताणा ताणजी ॥ जी० ॥ ६५ ॥ सोलह रोग शरीर में उपजे, तिणस्यूं पामें दुःख संतापजी। जनम मरण रा दुख पामें घणा हिंसा धर्म तणे प्रतापजी ॥ जी० ॥ ६६ ॥ सूयगडांग अंग अध्ययन अठारमें, ए भावे कह्या जिनरायजी। इम सांभल ने नर नारियां, धर्म हेत मत हणो छः कायजी ॥ जी० ॥ ६७ ॥ देवल हिंसा निषेधी सांभले, कोई पाछो उत्तर देवे हामजी। पाप हुवे तो नहीं लगावता,

लाखां कोडां हजारां दामजी ॥ जी० ॥ ६८ ॥ आगे वड़ा वड़ेरा भोला था नहीं, धन खरचे लगावे पाप जी। किणही री उठाई उठै नहीं, माहरा वड़ा वूढ़ा थापजी ॥ जी० ॥ ६९ ॥ आगे सर्व मार्ग हुआ घणा, त्यांरो जोवो पुराण विचारजी। त्यां पिण लाखां कोडां लगाविया, कराया देवल हरदुवारजी ॥ जी० ॥ ७० ॥ आगे बड़ा बड़ेरा तुरकां तणां, त्यां पिण कराई मसीतजी। त्यां पिण लाखां कोड़ां लगाविया, सगलां रे आहोज रीतजी ॥ जी० ॥७१॥ जैनी, शिव, ने मुसलमान रे, सगलां रे वड़ा री आही रीतजी। त्यां पिण लाखां कोड़ां लगाविया, नें कराया देवल आदि मसीतजी ॥ जी० ॥ ७२ ॥ और देवल मसीत कराविया, त्याने पाप वतावे पूरजी। जैन रा देहरा कियां तेहने, धर्म कहे ते एकन्त कूरजी ॥ जी० ॥७३॥ धर्म होसी तो सगला धर्म छे, पाप होसी तो सगला पापजी। ए लेखो कियां तो लड़ पड़े, खोटी श्रद्धा करवा री थापजी ॥ जी० ॥ ७४ ॥ आपरा देवल री करे थापना, और देवल देवे उथापजी। पिण धर्म नहीं हिंसा कियां, कोई मत करो कूड़ विलाप जी ॥ जी० ॥ ७५ ॥ दया धर्म छे जिन तणो, तिण ने जीव न हणवो विशेषजी। जीव मार्यां

सूँ धर्म निपजै नहीं, इम प्रवचन सामो देखजो ॥
जी० ॥ ७६ ॥

इतिश्री चार निक्षेपां री चौपाई सम्पूर्ण ।

हेमनवरसे की ढाल ७ मी

ढाल ७ मी वारी रे जाउं ॥ एदेशी ॥ मुनिवररे उपवास बेला बहुला कियारे । तेला चोला तंतसारहो लाल पांच २ नां थोकड़ारे कीधा बहुली वारहो लाल ॥ हेम ऋषि भजिये सदारे ॥ १ ॥ मु० षट दिन कीधा खंत सूं रे पूरो तपसूं प्यारहो लाल आठ किया उचरङ्ग सूं रे हेम वड़ा गुणधारहो ला० ॥ हेम० ॥२॥ मु० रसना त्याग किया ऋषिरे बहुविगे तणो परिहारहो लाल हेम वैरागी देखनेरे पामे अधिको प्यारहो लाल ॥ ३ ॥ सीतकाल बहु सी खम्योरे एक पछेवड़ी परिहारहो लाल घणा वर्षां लग जाणज्योरे हेम गुणांरा भण्डारहो लाल ॥ ४ ॥ उभा काउसग्ग आदर्योरे सीतकालमें सोयहो लाल पछेवड़ी छांडी करीरे बहु कष्ट सह्यो अवलोयहो लाल ॥५॥ सज्झाय करवा खामजीरे तनमन अधिको प्यारहो लाल दिवस रात्रि मे हेमनोरे एहिज उद्यम सारहो लाल ॥ ६ ॥ काउसग मुद्रा स्थापनेरे ध्यान सुधारस लीनहो लाल

नित्यप्रति उद्यम अति घणोरे मुक्त स्हामी धुन कीनहो लाल ॥ ७ ॥ स्त्रियादिक ना संगनेरे जाण्या विष फल जेमहो लाल हांसकितोहलने हणोरे हिये निर्मला हेमहो लाल ॥ ८ ॥ सीयल धर्यो नववाड़ सूं रे धुर बाला ब्रह्मचारहो लाल ए तप उत्कृष्टो घणोरे सुरपति प्रणमें सारहो लाल ॥ ६ ॥ उपशम रस माहें रम रह्यारे विविध गुणारी खाणहो लाल एकांत कर्म काटण भणोरे संवेग रस गलताणहो लाल ॥ १० ॥ स्वाम गुणारा सागरू, गिरवो अति गम्भीरहो लाल। उजा-गर गुण आगलारे मेरु तणो पर धीरहो लाल ॥ ११ ॥ कठिन बचन कहिवा तणोरें, जाणके लीधो नेमहो लाल। बहुल पणे नहीं बागस्योरे बचनामृत सूं प्रेमहो लाल ॥ १२ ॥ विविध कठिन बच सांभलीरे, ज्यांरे मनमें नहीं तमायहो लाल। तन मन वच मुनि वश कियोरे ए तप अधिक अथायहो लाल ॥ १३ ॥ मु० ॥ चोथे आरे सांभल्यारे क्षमा शूरा अरिहन्तहो लाल बिरला पंचम काल मेरे हेम सरिषा संतहो लाल ॥ १४ ॥ मु० निरलोभी मुनि निर्मलारे आर्जव निर अहंकारहो लाल हलका कर्म उपधिकरोरे सत्यबच महा सुखकारहो लाल ॥ १५ ॥ मु० संयम में शूरा घणारे। बर तप बिविध प्रकारहो लाल उपधि अना-

दिक मुनि भणीरे दिलरो हेम दातारहो लाल ॥१६॥ मु० घोर ब्रह्म मुनि हेमनोरे स्युं कहिये बहु वारहो लाल अखिल व्रत उचरङ्ग सुंरे पाल्यो अधिक उदारहो लाल ॥ १७ ॥ इर्या धुन अति ओपतिरे जाणे चाल्यो गजराजहो लाल गुण सुरत गमती घणीरे प्रत्यच्च भव दधि पाजहो लाल ॥ १८ ॥ मु० मो सूं उपकार कियो घणोरे कह्यो कठा लग जायहो लाल निश दिन तुझ गुण संभरुंरे वस रह्या मन मांयहो लाल ॥ १६ ॥ सुपने में सूरत स्वामनीरे पेखत पामें प्रेमहो लाल याद कियां हियो हुलसैरे कहणी आवे केमहो लाल ॥ २० ॥ मु० हुंतो विन्दु समान थो रे तुम कियो सिन्धु समानहो लाल तुम गुण कबहुन विसरुंरे निश दिन धरुं तुझ ध्यानहो लाल ॥ २१ ॥ साचा पारश ये सहीरे कर देवो आप सरिसहो लाल विरह तुमारो दोहिलोरे जाण रह्या जगदीशहो लाल ॥ २२ ॥ मु० जीत तणो जय थे करीरे वियादिक विस्तारहो लाल निपुण कियो सतीदास नेरे वलि अवर संत अधिकार हो लाल ॥ २३ ॥ स्वाम गुणारा सागरुरे किम कहिये मुख एकहो लाल उंडी तुझ आलोचनारे वारुं तुझ विवेकहो लाल ॥२४॥ मु० अखंड आचार्य आगन्यारे, ते पाली एकणधारहो लाल मान मेट मन वश कियोरे

नित्य कीजे नमस्कारहो लाल ॥२५॥ मु० साझ घणा संता भणीरे, तें दीधो अधिक उदारहो लाल गण वछल गण वालहारे समरै तीरथ च्यारहो लाल ॥२६॥ मु० सुखदाइ सहु जग भणीरे, कर्म काटण ने शूरहो लाल तन मन रंज्यो आप ( ) रे तुं मुझ आशा पूरहो लाल ॥ २७ ॥ मु० हेम ऋषि इण रीतसूँरे लीधो जनम नो लाहहो लाल हेम तणा गुण देखनेरे गुणी-जन कहै वाह २ हो लाल ॥ २८ ॥ मु० चर्म चौमासो आमेटमें रे आप किशो उचरङ्गहो लाल ध्यान सुधा-रस ध्यावतारे सखरी भांत सुरङ्गहो लाल ॥२९॥ मु० सातमी ढाल विषै कह्यारे हेमतणा गुण सारहो लाल हेम गुणारो मोरसोरे याद करे नरनारहो लाल ॥३०॥

* ढाल *

गाफिल तू सोच मनमे हरिनाम क्यों विसारा ॥ एदेशी ॥

श्री पूज्य यह विनय है, फिर शीघ्र दर्श देना। करके कृपा हमारी, जल्दी तलास लेना ॥ ए आंकड़ी ॥ दिन वीसही कराके, कीन्हा विहार साहिव। अव आपके विना तो, हम चित्तही लगेना ॥ श्री० ॥ १ ॥ हम ज्ञान नित्य सुनते, सेवा तुम्हारी करते। प्रभु आपके दर्श विन, दिल धैर्य तो धरेना ॥ २ ॥ प्रभु ग्राम २ जाके, उपकार तो कराके। फिर यहां भी शीघ्र आके, हमको संभाल लेना ॥ ३ ॥ तुम ध्यान हम धरेंगे, तुम जाप हम करेंगे। निज व्याधिको हरेंगे देखेंगे मार्ग नेना ॥ ४ ॥ विनती ये गौर करके, सवको हृदयमें धरके। जल्दी ही आयेंगे हम, मुखसे यह वाक्य कहना।

॥ इति समाप्तम् ॥